

बापूके पत्रे— ४
मणिवहन पटेलके नाम
[१२-२-'२१ से १३-१-'४८]

संपादिका
मणिवहन पटेल
अनुवादक
रामनारायण चौधरी



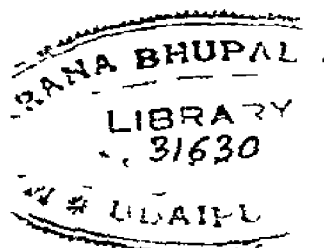
नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद-१४

मुद्रक-और प्रकाशक-
जीवणजी डाह्याभाभी देसाजी-
नवजीवन-मुद्रणालय, अहमदाबाद-१४

© नवजीवन ट्रस्ट, १९६०

पहला संस्करण

पहली आवृत्ति ३०००



प्रकाशकका निवेदन

राष्ट्रपिता गांधीजीने अपने संपर्कमें आनेवाले असंख्य लोगोंको असंख्य पत्र विविध विषयों पर लिखे हैं। व्यक्ति, समाज और राष्ट्रके निर्माणमें उनका बहुत बड़ा महत्त्व है। इस महत्त्वको ध्यानमें रखकर ही नवजीवन ट्रस्टने गांधीजीके पत्रोंके प्रकाशनका काम हाथमें लिया है। अभी तक हम 'बापूके पत्र-१ : आश्रमकी बंहनियोंको', 'बापूके पत्र-२ : सरदार वल्लभभाजीके नाम', 'बापूके पत्र-३ : कुसुमबहन देसाजीके नाम' तथा 'बापूके पत्र मीराके नाम' — शीर्षकसे गांधीजीके चार पत्र-संग्रह प्रकाशित कर चुके हैं। प्रस्तुत पुस्तक उनके पत्र-संग्रहकी पांचवी पुस्तक है। भविष्यमें हम जल्दी ही 'बापूके पत्र-५ : कु० प्रेमावहन कंटकके नाम' पुस्तक प्रकाशित करेंगे। इसका गांधीजीके पत्र-संग्रहमें अपना अेक विशिष्ट स्थान है।

श्री मणिवहनके नाम लिखे गये अिन पत्रोंमें हम आदिसे अन्त तक अेक वात्सल्यपूर्ण पिताका हृदय धड़कता हुआ अनुभव कर सकते हैं। श्री मणिवहनने छोटी अुमरमें माताका आश्रय खो दिया था। और कुछ सामाजिक रुढ़ियों और पारिवारिक मर्यादाओंके कारण बहुत बड़ी अुमर तक वे पिताके प्रेमका भी अनुभव नहीं कर सकी थी, अिन परिस्थितियोंमें पली हुअी श्री मणिवहनको गांधीजीने अपनी गोदमें लेकर पिता और माता दोनोंका स्थान संभाला और अुस कमीको पूरा किया तथा अुनके जीवन-निर्माणका काम अपने हाथमें लेकर खूब सावधानीसे अिस तरह अुन्हें तैयार किया कि अुनकी सारी शक्तियां राष्ट्रसेवाके कार्यमें प्रयुक्त हो सकें। यह निर्माण अुन्होंने किस प्रकार किया, अिसकी झांकी अिन पत्रोंमें बहुत अच्छी तरह देखनेको मिलती है। गांधीजीके जीवनका यह पहलू कितना

अधिक गुप्त रहा होगा। क्योंकि जिस पहलू का यथार्थ दर्शन तो ऐसे निजी पत्रों में ही होता है। जिस दृष्टि से यह पत्र-संग्रह एक कीमती दस्तावेज है।

जिनके पास गांधीजी के पत्र हों ऐसे दूसरे भाजी-बहनों को भी यदि जिसमें अपने पास के पत्र हमारे पास भेजने की प्रेरणा मिले, तो यह माला अधिक समृद्ध होगी। मूल पत्र सुरक्षित रूप में वापस भेज दिये जायेंगे।

आशा है जिस पत्र-संग्रह का भी जिससे पहले की पुस्तकों की तरह ही स्वागत किया जायगा।

१५-७-६०

अति पत्रोंके सम्बन्धमें

पू० बापूजीका अवसान होने पर नवजीवन ट्रस्टने सोचा कि उनका साहित्य, उनके लिखे हुए पत्र आदि प्रकाशित करके लोगोंमें उनके विचारोंका भरसक प्रचार किया जाय और लोगोंमें उसके लिये जो भूख है उसका समाधान किया जाय। इस विचारके अनुसार नवजीवन ट्रस्टने पू० बापूजीके पत्रोंकी मालामें तीन संग्रह प्रकाशित किये हैं। यह चौथा संग्रह है। बापूजी पत्रों द्वारा मनुष्यको किस प्रकार बनाते थे और उससे जो काम लेना तय किया हो उस कामके लिये उसे कैसे तैयार करते थे, यह संग्रह उसका एक नमूना है। ये पत्र जैसे मेरे जीवनके निर्माणमें मेरे लिये उपयोगी सिद्ध हुये वैसे ही पाठकोंके लिये भी होंगे, यह समझकर अन्हें प्रकाशित करनेकी मुझे प्रेरणा हुई है। अन्हेंसे अनेक विषयोंके सम्बन्धमें पाठकोंको पू० बापूजीके विचार जाननेको मिलेंगे और कुछ न कुछ सीखनेको भी मिलेगा ऐसा मेरा खयाल है।

सन् १९२० में मैं मैट्रिककी कक्षामें अध्ययन कर रही थी। परीक्षामें छह मास बांकी रहे थे। अतनेमें पू० बापूजीने विद्यार्थियोंसे स्कूल-कॉलेजोंका बहिष्कार करनेकी पुकार की। इस पुकारके अनुसार सितम्बर १९२० में मैंने सरकारी स्कूल छोड़ दिया। सन् १९२१ के आरम्भसे इस पत्र-संग्रहकी शुरुआत होती है। मेरे शाला-जीवनके अन्तके साथ ही शुरू हुआ यह पत्र-व्यवहार ठेठ बापूजीके जीवनका अका-अक अन्त हुआ उसके थोड़े दिन पहले तक चला। जनवरी १९३० से सितम्बर १९४६ में जब पू० बापू दिल्ली रहने गये तब तक हमारा कोअी स्थायी घर नहीं था। फिर भी ये सब पत्र सुरक्षित रहे, यह अश्वरकी कृपा ही कही जायगी।

मुझे बतानेमें पू० बापूजीने कितना परिश्रम किया है ! मुझ पर अन्होंने कितना प्रेम बरमाया है ! आज मुझमें जो भी अच्छे गुण या आदतें हैं वे सब मेरे जीवनके दो निर्माताओं—पू० बापूजी और पू० बापू—द्वारा मेरे लिये किये गये परिश्रमके कारण हैं। अन्होंने वात्सल्य-भरे परिश्रमके बावजूद मुझमें कौड़ी कमिया अथवा दोष रहे हों तो वे मेरी असक्तिके कारण हैं। मेरा यह दुर्भाग्य है कि दो-दो महापुरुषोंके प्रयत्नके बावजूद मैं अपनी कमजोरीके कारण अपने दोष दूर न कर सकी।

सितम्बर १९४९ में डॉक्टर लोग पू० बापूको अिलाजके लिये आप्रहृ करके बम्बयी ले गये थे। पू० बापू वहा विडला-भवनमें ठहरे थे। नरहरिमाझी वहा अन्हनकी कुशल पूछने आये थे। अुम समय अिन पत्रोंकी नकलोका सग्रह मैंने अन्हनके हाथमें रखा। अन्होंने अिन सब पत्रोंको पढ़ लिया और सुझाया कि पत्रोंमें जहा जरूरी हो वहा नीचे टिप्पणिया जोड़ दी जाय। मेरे लिये यह नया ही काम था और मुझे शक था कि मैं अुसे कर सकूगी या नहीं। परन्तु अन्होंने कहा कि अेकसमय नहीं तो समय मिलने पर थोड़ा थोड़ा लिखने रहना। अुमके बाद अन्तमें मैं अेक बार देख लूंगा।

१९४८ में मैंने अिन सब पत्रोंको जमा करके नकल कराना शुरू किया। अुमके बाद श्री नरहरिमाझीके अपरोक्त सुझावके अनुसार १९४९ में मैंने सम्पादनका काम शुरू किया। वह पूरा होने पर श्री नरहरिमाझीने अुन्हे देख लिया था। परन्तु अुन्हें अ्तिम रूप देनेका काम किमी न किमी कारणसे टलता रहा। अन्तमें आज अुसे पूरा करके जनताके सामने रख सकी हूँ, और सिरका अेक बड़ा बोझ अुनर जानेकी निश्चितता अनुभव करती हूँ। अैसा मालूम होता है मानो आज जनताके अणुसे कुछ हद तक मैं मुक्त हुई हूँ।

मेरी सतत आप्रहृमरी मांग स्वीकार करके अपनी तन्दुरुस्ती ठीक न होने हुअे भी पू० बापूके जीवन-चरित्रके दो भाग—अगस्त

१९४२ तक लिखने और पू० बापूके नाम लिखे गये पू० बापूजीके पत्रोंका संग्रह तथा मेरे नाम लिखे गये पत्रोंका यह संग्रह देख लेनेके लिये मैं श्री नरहरिभाजीकी अृणी हूं। उनके आग्रह और प्रोत्साहनके कारण ही मैं अिन दो संग्रहोंके लिये परिश्रम करनेका साहस कर सकी हूं।

भाजी मूलशंकर भट्टने अवकाश निकालकर भक्तिपूर्वक सभी पत्रोंकी सावधानीसे नकलें कर दीं, जिसके लिये मैं उनकी भी आभारी हूं।

मेरे भाजी चि० डाह्याभाजी तथा उनके पुत्रके नाम लिखे गये पत्रोंका समावेश भी अिस संग्रहमें ही कर लिया गया है।

अन्तमें पाठकोंको समझनेमें परेशानी न हो, जिसके लिये अेक स्पष्टता कर दूं। हम महात्माजीको बापूजी और अपने पिताको बापू कहते थे। अिसलिये अिस संग्रहमें जहां 'बापूजी' हो वहां महात्माजी और जहां 'बापू' हो वहां हमारे पिताजीका अुल्लेख है, अैसा समझा जाय।*

नयी दिल्ली

मणिवहन पटेल

२०-११-'५७

* गुजराती संस्करणकी प्रस्तावना।

बापूके पत्र — ४

मणिवहन पटेलके नाम

[१२-२-'२१ से १३-१-'४८]

दिल्ली,

१२-२-२१

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मुझे मिला। मैं बहुत प्रसन्न हुआ। तुम भाभी-बहन आव घंटा रोज कातो^१ तो जिससे स्वराज्य नहीं मिलेगा। तुममें बुत्ताह हो तो तुम जरूर चार घंटे रोज कातो। महावरेसे अच्छा कातना आ जायगा।

अभी श्री दास^१ वहां नहीं आ सकते। मुझे पत्र लिखा करो। आजकल क्या पड़ती हो, यह बताना।

बापूके आशीर्वाद

पुनश्च : अभी तो मुझे बहुत भटकना पड़ता है। आज दिल्लीमें हूं। अभी पंजाब जाना है, वामें लखनऊ, वहांसे वेजवाड़ा। जिसलिजे पता नहीं अहमदाबाद कब आना होगा। बापूसे कहना कि कांग्रेसकी तैयारी^२ करें।

चि० मणिवहन,

ठि० भाभी वल्लभभाजी पटेल वैरिस्टर,

भद्र, अहमदाबाद

१. स्व० देशबन्धु दास।

२. अहमदाबादमें होनेवाले कांग्रेसके ३६ वें अधिवेशनकी।

बेजवाड़ा,
मौनवार
(४-४-'२१)

वि० मणि,

शिम समय मुझके पांच बजे हैं। भछरीपट्टम ले जानेवाली मोटरका अतिजार कर रहा हूँ।

रातको अेक बजे मैं अेलोरसे यहा आया। ये तीनों जगहें नक्शोंमें देख लेना।

आने ही तुम्हारा पत्र मिला और मैंने पढ़ा।

डॉक्टर कानूगाने' अच्छा काम किया है। डाहामात्री' पिकेटिंग करने जाता है, यह अच्छा है। थुसे मेरी बधात्री पहुँचा देना।

चार घंटे कातनेका नियम रखा, यह ठीक है। सूत मजबूत और अेकसा निकालनेका प्रयत्न करना। यह भी देखना कि रोज कितना निकलता है।

मेरा तो बिश्वास दिन-दिन बढ़ता जा रहा है कि स्वराज्य मृत पर निर्भर है।

मैं काममें व्यस्त रहा और भटक्ता रहा, अिमलिअे मैंने पेंसिलमें लिखा। परन्तु तुम्हें तो स्याही और देशी कलममें ही लिखनेका अभ्यास रखना चाहिये।

१ स्व० बलवन्तराय कानूगा। अहमदाबादके प्रसिद्ध डॉक्टर। पू० बापूने १९३० में अपना अहमदाबादवाला मकान छोड़ दिया जिसके बाद जब भी वे अहमदाबाद आते तब डॉ० कानूगाके यहा हरने थे। खास-ब्याजारके शराबखाने पर पिकेटिंग करते हुअे पत्थर लगनेसे डॉ० कानूगाकी आखमें जोड़ पड़ची थी।

२ मेरे भात्री।

वापूकी सेवा करना और तुम भाजी-बहनके बारेमें अनुकी चिन्ताको कम करना ।

गुजराती दिन-प्रतिदिन सुधारना । ध्यानपूर्वक 'नवजीवन' पढ़नेवाले अपनी गुजराती अच्छी कर सकते हैं ।

मैं मंगलवार १२ तारीखको अहमदाबाद पहुंचूंगा । वापूको खबर देना और कहना कि मुझे आशा है कि जिस बीच अनुहोंने खूब रुपया^१ जमाकर लिया होगा ।

मोहनदासके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,

ठि० ट्रैस्टिटर वल्लभभाभी,

भद्र, अहमदाबाद

३

बम्बयी,

गुरुवार

(१६-६-२१)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला । मैंने काका (विठ्ठलभाभी^२)को उससे पहले ही कह दिया है कि हमें मिलना है । वे पूना जा रहे हैं । हम जरूर ही मिलेंगे । मिलनेके बाद जो होगा वह लिखूंगा । बम्बयीकी क्या गंदगी^३ तुमने मानी है, वह मुझे बताना । तुम निश्चिन्त रहना । मैं काकासे पूरी बातें करनेवाला हूँ ।

१. तिलक स्वराज्य कोषका ।

२. स्व० माननीय विठ्ठलभाभी पटेल । पू० वापूके बड़े भाभी ।

३. उस समय बम्बयीमें विदेशी कपड़ेकी बहुत बड़ी होली पू० वापूजीके हाथों की गयी थी । उस सम्बन्धमें यह अफवाह सुनी गयी थी कि कपड़ेका ढेर बहुत बड़ा बतानेके लिये नीचे देवदारके खोखे रख दिये गये थे ।

तुम दोनों भाभी-बहन देनकार्यमें पूरी तरह लग जाना। और तुम्हारे पूरी तरह लग जानेका अर्थ यह है कि कानने और पीजनेका काम यहा तक जान लो कि अमुमें तुम्हें कोभी मात्र न दे मर्गे। और सब काम क्षणिक हैं। यह काम हमेशाका है, ऐसा मानना। हमारा गारा बल अमीरों से आवेगा।

भाभी महादेव^१ बल बम्बशी आ गये हैं। कहा जायगा कि जुन्होंने चदा खब किया।

यहा बरगात अच्छी हो रही है।

बल लगभग ५५,००० रुपये घाटकोपरसे मिले हैं।

मैं पत्र लिखू या न लिखू, परन्तु तुम तो लिखती हो रहना।
बापूके आशीर्वाद

मणिबहन,
ठि० श्री वल्लभभाभी पटेल,
भद्र, अहमदाबाद

४

सोमवार
(११-७-२१)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया। कपडे जलानेका हेतु तो यह है कि विदेशी कपडोंकी तरफ वैराग्यवृत्ति अधिक पैदा की जाय। ये कपडे गरीबोंको दिये जाय, इस विचारमें भी मोह है। लाख-दो लाखके कपडे गरीबोंको गये तो क्या और न गये तो क्या? अतने दिन तक ये कपडे मगवाकर हमने हिन्दुस्तानको बड़ा नुबसान पहुंचाया है। मैं मानता हू कि अब ये कपडे गरीबोंको देनेसे भी लाभ नहीं होगा। ये कपडे विदेश भेज देनेमें कुछ रहस्य है। फिर भी मैं सबकी राय लेता रहता हू। अमुमें मे जो सबको ठीक लगेगी वह मान लेगे। अब भी शका रहती हो तो पूछना।

१ स्व० महादेवभाभी हरिभाभी देसायी, बापूजीके भन्नी। १५ अगस्त १९४२ को आगाखा महलके कारावासमें हृदयकी गति बन्द होनेसे अकारणिक अन्तका अवमान हुआ।

डाह्याभाभीकी वानर-सेना अच्छा काम कर रही दीखती है।
 एक बात वह याद रखे। लोगोंसे विनयपूर्वक अपनी बात कहे। जरा भी
 मजाक या ग्लानि (हंसी?) का भाव न रखे। शराब पीनेवाले पर
 दया रखी जाय।

काकासाहब^१ बढ़िया शिक्षक हैं, जिसमें तो शक ही नहीं। तुम
 सबको वे पसन्द आये, जिससे मैं खुश हुआ हूँ।

काका (विट्ठलभाभी)से मुलाकात हुयी है; काफी बातचीत
 हुयी। अन्होंने अपने जिला बोर्डमें ठीक प्रस्ताव पास करवाया है।
 मेरे पास आने-जानेवाले लोग कहते हैं कि काकाकी अभी चरखे^२ पर
 श्रद्धा नहीं है। अितना ही नहीं, मंडलियोंमें चरखेके प्रति अरुचि प्रकट
 करते रहते हैं। फिर भी अुनसे मिलूंगा तब फिर बात कहूंगा।
 मुझ पर पिछली मुलाकातका यह असर पड़ा था कि अुनके मनका बहुत
 कुछ समाधान हो गया है।

मोहनदासके आशीर्वाद

मणिवहन,
 ठि० श्री वल्लभभाभी ज्ञवेरभाभी पटेल,
 भद्र, अहमदावाद

५

वम्बयी,
 शुक्रवार
 (१५-७-२१)

चि० मणि,

तुम्हारे पत्रका लम्बा अुत्तर देनेको जी करता है। परन्तु अुतना
 समय नहीं। अब रातके ११ बजेंगे। परन्तु सवालका जवाब दे दूँ। जो
 कपड़ा व्यापारके लिये रखा गया हो अुसे जलाने या दे देनेका सवाल
 ही नहीं है।

१. श्री दत्तात्रेय वालकृष्ण कालेलकर, आश्रमवासी। आजकल
 राज्यसभाके मनोनीत सदस्य।

पत्रिकाओं^१ तो मैं अपनी पढ़ भी नहीं करता। शराबवालोंकी मार हम जैसे जैसे महन करेंगे वैसे वैसे हमारा काम बढ़ेगा।

वापूके आशीर्वाद

बहन मणि,
ठि० श्री बल्लभभाजी शिवेरभाजी पटेल,
मद्र, अहमदाबाद

६

द्विब्रूगढ़,
आसाम,
(२५-८-२१)

चि० मणि,

तुम्हारा पिछला पत्र मैं अपने साथ लिये घूमता रहा हू। काका (विट्ठलभाजी) को समझाना बड़ा मुश्किल काम मानता हू। उनकी बुझमें और अके प्रकारकी लड़ाईमें^२ फतह पानेकी मान्यता बन जानेके बाद अब मुन्हें नये प्रकारको ग्रहण करना कठिन मालूम होता है। हम धीरज रखकर उनकी मतभेद सहन करके अपने रास्ते चलते रहे, जिसके सिवा और कौजी अुपाय मुझे दिखायी नहीं पड़ता।

बहा बहिष्कारका और अुत्पत्ति^३का काम जोरमे हो रहा होगा।

आसाम अेक नया ही देश लगता है। यात्राका जानने लायक भाग 'नवजीवन' में दे चुका हू। जिसलिअे यहा नहीं लिख रहा हू। भाजी अिन्दुलाल^४ के साथ मैंने बात कर ली है। कुमुदबहन^५ के साथ मैं जी भर-

१ शराबवन्दी आन्दोलन सम्बन्धी पत्रिकाओं।

२ विधान-सभामें। उस समय श्री विट्ठलभाजी बम्बुजी विधान-सभाके सदस्य थे।

३ खादी-अुत्पत्ति।

४ श्री अिन्दुलाल याज्ञिक। गुजरात प्रांतीय परिषदकी स्थापना हुअी अुम समय उसके मंत्री थे। बादमें कांग्रेससे अलग हो गये।

५. स्व० कुमुदबहन, श्री अिन्दुलाल याज्ञिककी पत्नी।

कर बातें करना चाहता हूं और अन्हें शान्ति देनेका प्रयत्न करना चाहता हूं। जिसका आधार अुनकी अिच्छा और मेरी फुरसत पर रहेगा। मैं अुधर अक्तूबर माससे पहले आ सकूंगा, ऐसा नहीं लगता। तुम दोनों भाभी-बहन बापूकी खूब मदद करते होंगे। अुन पर बहुत बोझा आ पड़ा है। परन्तु प्रभुकी अिच्छा होगी तो वे अुसे अुठा लेंगे।

बापूके आशीर्वाद

मेरे प्रवासका कार्यक्रम : ३१ से ३ तक चटगांव और वारीसाल;
४ से १२ तक कलकत्ता।

बहन भणिगौरी,
ठि० श्री वल्लभभाभी झवेरभाभी पटेल,
वैरिस्टर साहब,
भद्र, अहमदावाद

७

मौनवार
कलकत्ता,
(८-९-२१)

चि० मणि,

अभी अभी तुम्हारा पत्र मिला। मेरी मांग तो पहननेके ही कपड़े जलानेकी है। किसीके घर विलायती जाजमें वगैरा रखी हैं, कोचों पर विदेगी कपड़े चढ़े हैं। ये सब अधिकांश लोग नहीं देंगे। जिसलिये वह मांग नहीं की। ऐसी कोअी नअी चीज वे न लें तो अुतना काफी है। हमें पहननेके कपड़ोंकी ही मांग करनी है। मैं 'नवजीवन' में लिखूंगा।

पर्युषणमें अुपासरे जाना तय किया, यह अच्छा है। जिन बहनोंमें से कोअी अपने कपड़े देती हैं?

१२ तारीख तक तो कलकत्तेमें रहना है। बादमें क्या करना है यह सोचूंगा।

बेजवाडाकी साडियोंमें अब धोखा जरूर घुमा होगा^१। अच्छा यही है कि तुम्हें हाथ ही न लगाया जाय।

कुमुदबहनको पत्र भेजा मो अच्छा किया। पत्र लिखने रहनेसे तुम्हें आश्वासन मिलेगा।

वः बहुत करके महादेव आकर मुझसे मिल जायने।

यहा भी तुम्हारी ही अुम्रकी बेबल खादो ही पहननेवाली खूब कुत्साह रखनेवाली दो बहनें हैं। वे अभी देशबधु दासकी बहनको उनके तारी-मदिरमें मदद दे रही हैं।

मोहनदासके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,

ठि० भाभी बल्लभभाभी पटेल बैरिस्टर,

भद्र, अहमदाबाद

८

रेलमें,

२५-१-२१

चि० मणि,

• तुम्हारे दो पत्र मेरे पाम रखे हैं। तुम्हारी प्रवृत्ति ठीक चल रही है। अब तो थोड़े दिनमें वहा मिलेगे, इसलिये उसके बारेमें कुछ नहीं लिखता।

कुमुदबहनका हाल पढ़कर मुझे दुःख होता है। उनसे मैं जरूर मिलना चाहता हूँ। ६ तारीखको मैं अहमदाबाद आ ही जाऊंगा। वहा कितने समय रहता होगा, यह तो नहीं जानता। परन्तु मैं वहा रहूँ उस बीचमें कुमुदबहन आश्रममें आयें, तो मैं उनके साथ बातचीत कर सकूंगा। मैं उनकी सेवा करना और उन्हें शान्ति देना चाहता हूँ। तुम उन्हें यह पत्र ही भेज दो तो काम चल सकता है।

१ बेजवाडाकी साडियोंमें मिलका सूत काममें लेनेकी जो शिकायत थी उसका अुल्लेख है।

२ तारीखको मैं बम्बयी पहुँचनेकी आशा रखता हूँ। ४ तारीख तक तो वहाँ रहना ही है।

काका (विट्ठलभाजी) का रास्ता अलग ही है। हमें अनुकी चिन्ता नहीं करनी है। अन्हें जो ठीक लगे वह भले ही वे करें और कहें।

मोहनदासके आशीर्वाद

श्री मणिवहन,
ठि० वल्लभभाजी वैरिस्टर,
भद्र: अहमदावाद
(पू० बापूजीके हाथका पता)

९

नेपानी,
(अक्तूबर, १९२१)

चि० मणि,

तुम्हारा काम और देशके प्रति तुम्हारा प्रेम देखकर मुझे तो आश्चर्य हुआ है। दिवालीके दिनोंमें खूब चंदा झिकट्टा करना।

बापूकी सेवा तो तुम करती ही होगी, यह मैं मान लेता हूँ। तुम्हारे जवाबकी आशा मैं बिस बार तो नहीं रखता।

मोहनदासके आशीर्वाद

(पीछे)

अहमदावादकी बहनोंका नाम लेकर मैंने पूनाकी बहनोंसे भिक्षा मांगी। अन्होंने तो मुझ पर सोनेकी चूड़ियों, अंगूठियों, लॉगों और सोनेकी जंजीरोंकी भारी वर्षा कर दी। अहमदावादकी बहनोंको मात कर दिया।

मोहनदास

श्री मणिवहन,
ठि० वल्लभभाजी वैरिस्टर,
भद्र, अहमदावाद

सोमवार
(अप्रैल, १९२६)

चि० मणि,

भाजी मणिलाल'ने आज खबर दी कि तुम्हारा दुखार तो चला गया, मगर अशक्ति है और तुम डॉक्टर कानूगाके यहा चली गयी हो। मैं चाहता हू कि बापू और डॉक्टर विजाजत दें तो यहा' आ जाओ। आराम और शान्ति दोनों मिलेंगे। तुममें तो शक्ति तुरन्त आ ही जायगी। अमलिजे मैं तुमसे सेवा भी लूंगा। मुम पर तुम्हारे भार पड़नेका भय तुम्हें या बापूको हरगिज नहीं होना चाहिये। बोझा पड़ेगा तो जमीन पर, और जमीन काफी मजबूत है। तुम्हारे जैसी सौ बालिकाओंका बोझा तो वह जानानीसे जुठा सकेगी। दूसरा बोझा रमोजिये पर होगा। रेवा-शंकरभाजी'ने रमोजिया भी यहाकी जमीनके जैसा ही मजबूत दिया है। तुम्हारे खानेसे मेरी चिन्ता दूर होगी, क्योंकि जो भी देशसेवक और देशसेविकाओं दूर बैठे बीमार पड़ते हैं वे मेरी चिन्तामें वृद्धि करते हैं। मेरी नजरके मामले वे सब हों तो शुभ हद तक मेरी चिन्ता दूर हो जाय।

डाह्याभाजी तुम्हारे वदते चरखा अधिक समय चलाने ही होंगे।

बापूके आशीर्वाद

१ स्व० मणिलाल कोठारी। बहुत वर्ष तक गुजरात प्रान्तीय समितिके मंत्री थे।

२ जुहू। यरवडा जेलमें फरवरी १९२४ में छूटनेके बाद कुछ मास आरामके लिये पू० बापूजी जुहूमें रहे थे।

३ स्व० रेवाशंकर जगजीवन अवेरी। बम्बयीमें पू० बापूजी युनके यहा मणिभवनमें अउरते थे।

[यह पत्र मैं जूहमें पू० वापूजीके पास थी वहां पू० वागे भेजा था। जूहमें कुछ बीमारोंको अिकट्ठा करके पू० वापूजीने अपना छोटासा 'अस्पताल' बना लिया था।]

(सत्याग्रह आश्रम, सावरमती)

बुधवार

(अप्रैल, १९२४)

वि० मणि,

अब तुम्हारी तबीयत अच्छी होती जा रही है, अिससे आनन्द होता है। जिसी तरह राधाकी भी अच्छी होगी। अ० सौ० कीकीबहनकी भी अच्छी होगी। अब नहानेकी बिजाजत मिल गयी होगी। खुराक तुम सब क्या लेती हो सो बताना। राधाको अिजेक्शन दिये जा रहे हैं? प्रभु^१ क्या खुराक खाता है?

कृष्णदास^२ मजेमें होगा। वापूजीको नियमपूर्वक तुम खुराक देती होगी। वे क्या खाते हैं? गं० स्व० जमनावहन^३ वहां हमेशा आती होंगी। अुन्हें मेरे प्रणाम कहना। जिसी तरह जसवंतप्रसाद^४को भी कहना। आज सुबह भाभी डाह्याभाजी आये थे। वे मजेमें हैं। ... को मैंने अेक पत्र लिखा है। अुसका अुत्तर नहीं आया। अुनकी तबीयत अच्छी होगी। देवदास^५ तो क्यों लिखने लगा?

१. वापूजीके भतीजे स्व० मगनलाल गांधीकी पुत्री।
२. आचार्य कृपालानीकी बहन।
३. वापूजीके भतीजे छगनलाल गांधीके पुत्र। दक्षिण अफ्रीकामें फिनिक्ससे पू० वापूजीके साथ थे।
४. श्री कृष्णदास गांधी। वापूजीके भतीजे छगनलाल गांधीके पुत्र।
५. दादाभाजी नवरोजीकी पौत्री श्री गोयीबहन कैप्टन और श्री पेरीनबहन कैप्टनके साथी कार्यकर्ता।
६. पू० वापूजीके सबसे छोटे पुत्र।

मुझे तुम सब बहुत याद आते रहते हो। परन्तु भाग्यमें माय रहना नहीं लिखा होगा। मुझे पत्र लिखना। नहीं तो लिखवाना। पूज्य रेवाशकर भाजी (शवेरी) की तमीयत अच्छी होगी।

यहा सब प्रसन्न है। बहाका हाल लिखना। अभी भाजी मगनलाल^१ दिल्ली गये हैं। उनके घर पर भाजी छगनलाल^२ और चि० काशी^३ रहते हैं। चि० मनोक^४ को मेरा आशीर्वाद। वहा सबको स्यायोग्य।

बापूके आशीर्वाद

१२

(जुहू.)

मोमवार

(५-५-२४)

चि० बहन मणि,

तुम्हारे पत्रकी बाट कल अभी तरह देखी, जैसे पपीहा बरसानकी देखता है। आज मुबह प्रार्थनाके बाद पहला पत्र तुम्हारा देखा। देव-दामने कहा कि कल शामको मणिबहनका पत्र मिला।

माजी लिखते हैं कि धकावट रहने पर भी वहा^५ तमीयत यहामे अधिक अच्छी है। इसी तरह चलता रहे तो हम सब वहा आ जायगे। दुर्गाबहन^६की तमीयत भी वहा ठिकाने आ जाय तो कितना अच्छा हो। उनसे कहना कि मुझे पत्र लिखें। महादेवभाजीको यद्रास नहीं भेजा। वे वापस सावरमती पहुच गये हैं।

१ २ बापूजीके भतीजे।

३ श्री छगनलाल गाधीकी पत्नी।

४ स्व० मगनलाल गाधीकी पत्नी।

५ मैं बीमार थी इसलिये पहले मुझे अपने पास रखनेको जुहू बुल्वाया। वहा फर्क न पडा तो हजीरा भेजा।

६ स्व० दुर्गाबहन, स्व० महादेवभाजीकी पत्नी।

यहांसे जो कुछ चाहिये वह मंगवा लेना। मांगे बिना मां भी नहीं परोसती। सच तो यह है कि मां ही नहीं परोसती। दूसरोंको शिष्टता दिखानी पड़ती है। मांको शिष्टता दिखानेकी फुरसत ही नहीं होती। मां विवेककी मूर्ति है। तुम्हें मालूम है कि मैं ऐसी 'मां' बननेकी शक्तिभर कोशिश कर रहा हूँ।

राधा और कीकीवहन ठीक हैं, ऐसा कहा जा सकता है। दोनोंका तापमान ९९° से अधिक नहीं चढ़ता।

शौकतअली^१ दो दिन रहकर गये।

वापूके आशीर्वाद

मणिवहन वल्लभभाभी पटेल,
खीमजी आंसर वीरजी सेनेटोरियम,
हजीरा, सूरत होकर

१३

(जुहू,)

(७-५-'२४)

चि० वहन मणि,

तुम्हारी डाक नियमपूर्वक आने लगी है। जिससे मुझे शान्ति रहती है। धीरज और आत्म-विश्वास रखना—दवासे भी विश्वास ज्यादा फायदा करेगा। प्रभुदासका पंचगनी जाना स्थगित कर दिया है। चि० राधा ठीक है। प्रार्थनामें शामको आती है। कीकीवहन जैसी थी वैसी ही हैं। चि० गिरधारी^२ कल अहमदाबाद गया।

वापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन वल्लभभाभी पटेल,
हजीरा, सूरत होकर

१. मौलाना शौकतअली। अली भाबियोंमें बड़े।

२. आचार्य कृपालानीका भतीजा।

(जुहू,
११-५-'२४)
रविवार

चि० वहन मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। यह मेरा चौथा पत्र है। एक पत्र और दो पांड में लिख चुका हूँ। तुमने एक ही काटेकी पहुँच भेजी है।

आत्म-विश्वास सच्चा तो ब्रह्मा जायगा जब वह निराशाके समय भी अचल रहे। सत्य और वाहिमामें मेरा विश्वास हो, तो मैं नाजुक समयमें भी अनुका पालन करूँगा। भले ही बुखार आये तो भी आगा हरगिज न छोड़ी जाय। हम गाफिल न रहें, परन्तु चिन्ता न करे। 'त्यागमूर्ति' के बारेमें तुम्हारी आलोचना देखनेको मैं आतुर हो रहा हूँ। मुझे पत्र लिखता हरगिज न भूलना। तुम्हारे वहाँ और कोश्री आवर रहूँ मके अंश गुजाजिन है क्या? वहाँ वसुमतिवहन'को भेजनेका जो होता है।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन वल्लभभायी पटेल,
हजीरा, सूरत होकर

१५.

(जुहू,
१४-५-'२४)
बुधवार

चि० वहन मणि,

कल तुम्हारे दो पत्र साथ मिले। पता नहीं चलता कि मेरे पत्र तुम्हें मिलने हैं या नहीं। सप्ताहमें एक लिखनेके बजाय मैंने लगभग हर तीसरे दिन लिखे हैं। बुखार जरूर जायगा। खाया जाता है और

१ स्त्रियोंके प्रदनोंके बारेमें बापूजीके लेखोंका संग्रह। (प्रकाशक : नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४)

२. अंक आश्रमवासी।

दस्त ठीक आता है, अिसलिअे मैं मानता हूं-कि न जानेका सवाल ही नहीं रहता। बीमारी पुरानी है, अिसलिअे देर हो रही है। 'त्यागमूर्ति' के वारेमें आलोचना लिखना।

बापूके आशीर्वाद

चि० वहन मणि वल्लभभाभी पटेल,
सेठ आसरका सेनिटोरियम,
हजीरा, सूरत होकर

१६

(जुह,
१५-५-'२४)
वै० सु० १२

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम २० तारीख तक चली जाओ, यह तो विलकुल ठीक नहीं होगा। वहां यह मास तो पूरा करना ही चाहिये। मेरा वहां आना तो हो ही कैसे सकता है? २९ तारीखको मुझे सावरमती जरूर पहुंचना है। वसुमतीवहन आना चाहेगी तो बताऊंगा। आशा कम है।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,
सेठ आसरका आरोग्य-भवन,
हजीरा, सूरत होकर

१७

(जुह,
१७-५-'२४)

चि० मणि,

अहमदाबाद पहुंचनेके बाद देखेंगे कि दवा ली जाय या नहीं। विलकुल अच्छी हुआे दिना वहांसे हरगिज नहीं निकलना है। वसुमती-वहन कदाचित् सोमवारको चलकर वहां आयेंगी। भाभी . . . अुनका

१७

सूरतका घर जानते हैं। वहा जाकर देखें। यदि वे आ गयी हो तो मुन्हें ले जाय। क्या वहा कोओ अलग मकान मिलते हैं? जहा तक हो सकेगा तार दिला दूगा। अभी वसुमतीबहन अजेकशन ले रही हैं। दुर्गाबहनका क्या हाल है? क्या वे पत्र लिखेंगी ही नहीं? मेरा हाथ कापता जरूर है।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन बल्लभभायी पटेल,
आमर सेठका आरोग्य-भवन,
हजीरा, सूरत होकर

१८

(जुह,
२०-५-'२४)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र और काई मिले। 'त्यागमूर्ति' के वारेमें पत्र पढ़कर मुझे तो बहुत ही हर्ष हुआ। यह निर्मलता और समय-वृत्ति सप्रहणीय है। जिसकी चर्चा तो हम मिलेंगे तब करेंगे। अब तो बुवारको भी निकालकर चगी हो जाओ तो औश्वरकी कृपा हो। वसुमतीबहन देवलाही जायेंगी, जिसलिजे वहा नहीं आयेंगी। वहासे तुरन्त जानेका विचार ही न किया जाय।

बापूके आशीर्वाद

चि० दुर्गा,

तुमने तो मुझे पत्र ही नहीं लिखा। वहा तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा रहता है?

बापू

चि० मणिवहन बल्लभभायी पटेल,
हजीरा, सूरत होकर

१८

(जुह,
ता० २६ मजी, १९२४)
सोमवार

चि० मणि,

तुम तो जल्दी ही पहुँच गयीं। मेरी तीव्र इच्छा है कि तुम भाभी-बहन आश्रममें अलग कोठरी-लेकर रहो। छात्रालयमें खाओ, हाथसे बनाओ या बाके साथ अनुकूल पड़े तो वहाँ खाओ। जैसा तुम दोनोंको अनुकूल हो वैसा करो। वहाँसे कॉलेजमें जा सकते हैं।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,
वल्लभभाभी बैरिस्टर,
अहमदावाद

२०

(अहमदावाद,
२६-९-'२४)

चि० मणि,

बाह, कल तुम सब आये और चले गये। अब सन्देश भेजती हो! बीमारको जितनी बार चक्कर लगाना हो लगा सकता है। उसे वचन नहीं बाँधता। इसलिये न आनेके लिये माफी है। और आनेका विचार हो तब छूट भी है। मुझे तो एक ही काम है। किसी तरह अच्छी हो जाओ।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,
खमासा चौकी,
अहमदावाद

१. मैं पू० बापूजीसे पहले अहमदावाद आ गयी थी।

२. पू० बापूजीसे मिलने सावरमती आश्रममें गये थे परन्तु वे सो गये थे, इसलिये मिले बिना वापस चले आये थे।

२१

(दिल्ली,
२६-९-'२४)

चि० मणि,

मेरे अपवाससे^१ विलकुल घबरानेकी जरूरत नहीं। शक्ति अभी
खूब है। २१ दिन निर्विघ्न पार हो जायगे, अंमा में मानता हू।
डॉक्टरोंकी भी यही राय है। अपनी सबीयत खूब सभालना। घूमनेका
महावरा खूब रखना। मुझे पत्र लिखना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,
ठि० वल्लभभाजी वैरिस्टर,
अहमदाबाद

२२

दिल्ली,
२४-१०-'२४

चि० मणिवहन तथा डाह्याभाजी,

अस साल तुम्हें अपने शुभाशीष^२ देने वहा मौजूद नहीं रहूगी,
परन्तु जिस पत्र द्वारा और अपने मनसे तो तुम्हें अपने शुभाशीष दे
ही रही हू। तुम्हारे लिये भी यही चाहती हू कि तुम्हारी सकल शुभ-
कामनायें सफल हो। जैसे हो अगुसे अधिक तदुस्त रहो और पडाजी
पूरी करके देशके सच्चे सेवक बनो। बापूजीकी तबीयत दिन-दिन सुध-
रती जा रही है। यह पत्र मिलेगा अगु दिन तो तुम दोनों भलेचगे

१ पू० बापूजीने हिन्दू-मुसलमानोंकी अकताके सिलसिलेमें ता०
१७-९-'२४ से ८-१०-'२४ तक २१ दिनके अपवास किये थे।

२ नये वर्षके लिये।

और स्वस्थ होंगे ही, ऐसी आशा रखती हूँ। बापूजी भी तुम्हें याद करते हैं और तुम दोनोंके लिये उनके शुभाशीप हैं ही।

शुभेच्छु बाके शुभाशीप

चि० मणिवहन,
ठि० वल्लभभाजी वैरिस्टर,
खमासा चौकी,
अहमदाबाद

२३

(दिल्ली),
का० सु० २
(१०-११-२४)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। अधिक बार लिखो तो बहुत अच्छा।

बापूको आज लिखा है। चिन्ता छोड़ देनेको कहा है।

तुम फिर हजीरा जानेका विचार नहीं करोगी? पास होनेके लिये वधाजी चाहिये क्या? चाहिये तो समझ लेना। डाह्याभाजी अकेले विषयमें फेल हो गये। कोअी बात नहीं। फेल होनेका अर्थ है उस विषयमें अधिक प्रवीण होना। फेल होनेवाले विद्यार्थी अकसर निराश हो जाते हैं। यह भूल है। जो आलसी हों या जिनकी नजर नौकरी पर हो वही निराश हो सकते हैं। अम्यासीके लिये तो असफलता अधिक प्रयत्नका सुअवसर होती है।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,
ठि० वल्लभभाजी पटेल,
खमासा चौकी,
अहमदाबाद

१. गुजरात विद्यापीठकी स्नातक-परीक्षा।

२१

(कलकत्ता,
वै० बंदी ६,
गुरुवार
(१४-५-२५)

चि० मणि,

तुम्हारा लम्बा पत्र मिला। मैं खुश हुआ। औरतोमें काम करना बहुत मुश्किल जरूर है। फिर भी घोरजसे जो हो भके वह कार्य किया जाय। डाह्याभाजी आबू अथवा नवी बन्दर गये ही होंगे। चूडिया^१ मेरे ध्यानमें अवश्य है। मैं भूलूंगा नहीं। वे ढाकामें मिलनी^१ है। और वहा मुझे तीन दिनमें पहुंचना है। बापू कही हवाखोरीके लिजे जानेवा^१ है ?

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन,

ठि० वल्लभभाभी पटेल वरिस्टर,
अहमदाबाद

(शान्ति निकेतन,
३१-५-२५)
जे० सु० ८

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। लम्बा पत्र लिखनेका लोभ करने जाऊ तो शायद पत्र लिखा ही न जाय, असलिजे अितना ही लिखकर सतोष कर लेता हूँ। तुम्हें चूडिया तो कभीकी मिल गयी होगी। वे तो कलकत्तेसे ही भेजी है। दूसरी मैंने ढाकेमें खरीदी है वे अभी मेरे साथ है। वे तो जब मैं आऊंगा तभी तुम देखोगी। चि० डाह्या-

१ शक्की चूडिया, जो बगालकी विगेषता मानी जाती है, मैंने बापूजीसे मगवायी थी।

भाभीके वारेमें लम्बा जवाब महादेवने लिखा होगा। अन्हें कमाना हो तो भले ही कमायें। अुनकी तवीयत अच्छी हो गयी है, यह जानकर खुशी हुयी। चि० यशोदा^१ से मुझे पत्र लिखनेको कहना। बापूकी खूब सेवा करना और अुन पर जो बोझ है अुसमें जितना भाग बटाया जा सके अुतना तुम तीनों बटाना। मुझे बंगालमें अेक मास तो बिताना ही होगा।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,
ठि० वल्लभभाभी पटेल वैरिस्टर,
खमासा चौकी,
अहमदाबाद

२६

जेठ बदी ६,
शुक्रवार
(१२-६-'२५)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया है। आज तो मैं जहाजमें हूँ। चूड़ियां कलकत्तेमें हैं। वहां १८ तारीखको पहुंचना है। वहां पहुंचकर थैलीमें बंद करके पार्सलसे भेज दूंगा। परन्तु देवदास आश्रममें न आया हो तो भी जांच की जाय। अुसके नामकी थैली जरूर होगी। अुस पर कब्जा कर लिया जाय।

डाह्याभाभीने खेतीका काम पसन्द किया था। अुस परसे मैंने यह सलाह दी। परन्तु अुनका मन विदेश जानेका ही हो तो मैं रोकना नहीं चाहूंगा। विदेश जानेमें मुझे बड़ी आपत्ति यह है कि किसीसे रुपया मांगना पड़ सकता है। भले ही कोअी अुत्साहसे रुपया दे तो भी जहां तक हो सके हम न लें। यह आदर्श है। अुस पर टिके रहनेकी

१. स्व० यशोदा। डाह्याभाभीकी पत्नी।

हमारी शक्ति न हो तो किसीसे मदद लेकर भी जानेमें बाधा नहीं है। मुझे बहा आनेमें समय लगेगा। अभी १६ जुलाई तक बगालमें हू। डाह्याभाजीको बहा आना हो तो आकर वान कर जाय अथवा आश्रममें बाजू तब करनी हो तो उस समय कर ले। मुन्हें किसी भी तरह दुःखी न किया जाय। मैं उनकी इच्छाके अनुकूल होना चाहता हू। मैं तो धीरे धीरे मार्गदर्शन करना चाहता हू। तीन रास्ते हैं :

१ खानगी नौकरी कर ली जाय।

२ खेती की जाय।

३ अमरीका जाकर अधिक सीखा जाय।

इनमें से जो उनकी इच्छा हो सो करे। उसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं। चौथा रास्ता राष्ट्रकी सेवाका है। रुपया लेकर राष्ट्रकी सेवा करना मुन्हें पसन्द नहीं, अमलिये मैंने उस रास्तेको नहीं गिनाया। मुन्हें वैद्यक सीखनेका शौक है? हो तो यहा राष्ट्रीय कॉलेज है, और दिल्लीमें भी है। डाह्याभाजी यह न जानते हों तो कह देना। यहा (कलकत्ते) का कॉलेज अच्छा माना जाता है। उसमें अध्ययन करना हो तो कर सकते हैं।

मेरी तारीयत अच्छी रहती है। बीचमें जरा सरदी हो गयी थी। और तो कुछ भी नहीं था। हर जगह लोग काफी आराम देते हैं।

... को नियमपूर्वक पत्र लिखती रहना। इससे उसे सतोष रहता है। प्रेमका भूखा है।

बापूकी सेवा खूब करना। जब मा मर जाती है और बाहरकी बहुत झगड़ें होती हैं तब यदि बच्चे सेवावृत्तिवाले हों तो वे बापको उसका सब दुःख भुला देते हैं। यह मैं अपने पिताके आज्ञाकारी पुत्रके नाते अपना अनुभव तुम भाजी-बहनको बता रहा हू। जिससे बच्चोंका कितना कल्याण होता है, जिसका साक्षी भी मैं हू। मा-बापको परमेश्वरकी तरह पूजनेका फल मैं प्रनिशान भोग रहा हू। यह सब तुम दोनोंको लिख रहा हू, क्योंकि मैं जानता हू कि बापू पर बड़ी जिम्मेदारी है। मैं तो उसमें कौजी भाग नहीं ले सकता। पत्र लिखने तकका समय भी नहीं निकालता। इसलिये अपनी जिम्मेदारी भी तुम पर डाल रहा हू।

स्वास्थ्यको खूब संभालना । अन्त्यास पूर्ण करनेमें समय जाय तो
 अस्तकी चिन्ता न रखना । महादेव कहते थे कि तुम दोनों भाभी-बहनके
 अंग्रेजी गद्दोंके हिज्जे बहुत कच्चे हैं । यह सुधार कर लेना । जो भी सीखें
 वह ठीक ही नीचें । जहा भी शंका हो, गद्दकोप खोलें । और कुछ
 करनेको जरूरत नहीं रहती ।

वापूके आगीर्वाद

चि० मणिवहन,
 डि० चल्लभभाभी वैरिस्टर,
 गमासा चौकी,
 अहमदाबाद

२७

(कालीघाट,
 कलकत्ता,
 २९-६-'२५)
 सोमवार

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला । पिताकी सेवा करनेके अनेक प्रसंग ढूंढना ।
 वे ढूंढने पड़ते ही नहीं । फिर भी तुम लिखती हो तो समझ लिया ।
 डाह्याभाभी 'नवजीवन' में जाते ही है तो चित्त लगाकर काम करें ।
 स्वामी^१ की आज्ञा माननेमें बहुत लाभ है । वह सुन्दर तालीम है ।
 भले मजदूरीका ही काम सोंपें तो अस्ते भी दिल लगाकर करें । मैं
 कभी न कभी थोड़े वक्तके लिखे आ जाऊंगा, परन्तु समय तो ओश्वर

१. स्वामी आनंद । पू० वापूजीके निकटके साथी, 'नवजीवन' के
 आरंभमें उन्होंने अस्तेमें खूब काम किया था । अस्तेके विकासमें उनका
 बड़ा हाथ रहा है ।

ही जाने। बापूकी तर्बापतके समाचार मुझे देनी रहो। बापूके अंग्रेजी हिज्जे कच्चे होनेसे तुम्हारे भी वैसे ही रहने चाहिये, जैसा कोश्री नियम है क्या? बापूके गुणोंका अनुकरण होना है, दोषोंका हरगिज नहीं।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,
डि० वल्लभभाजी पटेल बैरिस्टर,
समासा चौकी,
अहमदाबाद

२८

(कालीमाट,
कलकत्ता,
१६-७-'२५)
गुरुवार

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हें दूसरी चूड़ियोंकी अभी जरूरत हो तो मुझे लिखना। डाकसे भेज दूंगा। डाह्याभाजी कलकत्तेके राष्ट्रीय मेडिकल कॉलेजमें पढ़ेंगे? वह अच्छा चल रहा दीखता है। अथवा डाह्याभाजीकी हार्दिक जिच्छा क्या है? मैं जितना काममें फसा हू कि लम्बे पत्र लिखे ही नहीं जा सकते।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,
डि० वल्लभभाजी बैरिस्टर,
समासा चौकी,
अहमदाबाद

२९

(मुंशिदावाद जिला,
६-८-'२५)
श्रावण वदी २

चि० मणि,

तुम्हारा और डाह्याभाभीका पत्र मुझे मिल गया था। डाह्याभाभीके पत्रका उत्तर तुरंत ही दे देनेको मैंने महादेवसे कह दिया था। वह मिल गया होगा। डाह्याभाभीको जो सवाल पूछा था उसका उत्तर हीं उन्होंने नहीं दिया। डाह्याभाभीको सर्जरी सीखनी हो तो यहां तथा कलकत्तामें, दोनों जगह पूरे साधन हैं। उन कॉलेजोंका सरकारके साथ कोबी सम्बन्ध नहीं है।

तुम्हें मणिलाल (कोठारी) ने १२ चूड़ियां भेजी हैं, जिसलिजे अभी तो तुम्हें अधिककी जरूरत नहीं रहेगी। परन्तु यदि ये चूड़ियां बहुत टूटें तो महंगी पड़ेंगी, यह समझ लेना। जिससे तो चांदीकी अथवा सूतकी गूंथी हुआ सस्ती पड़ेंगी। वे ऐसी गूंथी जा सकती हैं कि मोटी होती हैं, मजबूत होती हैं और हमेशा धोयी जा सकती हैं। परन्तु यह विचार हम मिलेंगे तब करेंगे। तब तकके लिजे तो यह संग्रह काफी है।

मेरा वहां आना तो जब होगा तब होगा। शायद अके दो दिनके लिजे अवतूरमें आ जाऊं।

वाजिसिकल ली है तो अब उस पर कसरत भी करना।

आज हम मुंशिदावाद जिलेमें हैं। मणिलाल (कोठारी) यहीं हैं।

वापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,

ठि० वल्लभभाभी श्वेतरभाभी पटेल वैरिस्टर,

खमासा चौकी,

अहमदावाद

श्रावण वदी अमावस,
 वृषवार
 १९-८-'२५

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं नहीं चाहता कि तुम चूड़ियोंके बिना रहो। मेरी मलाह तो चादीकी चूड़िया पहननेकी है। केवल सोनामकी तो ठीक नहीं लगती। परन्तु दाखकी पहननेमें कोई हर्ज नहीं है। मैंने तो देख लिया कि यह सस्ती चीज नहीं है। डाह्याभात्रीके बारेमें अबाव लिख चुका हू। कुल मिलाकर मेरी नजर 'तिविया कॉलेज' पर टिकती है। परन्तु अब तो मैं वहा ५ सितम्बरको पहुंचनेकी आशा रखता हू। अमलिअे हम मिलकर निश्चय करेंगे।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,

डि० वल्लभभात्री बैरिस्टर,

गाना चौकी,

अहमदाबाद

१. हरीम अजमलखा साहब द्वारा दिल्लीमें स्थापित यूनानी पद्धतिका कॉलेज।

(बांकीपुर,
२६-९-'२५)
शनिवार

चि० मणि,

यह रहा देवघरका तार^१। मेरा खयाल है कि जिस बीच प्रतीक्षा की जाय। परन्तु जिस बीच यदि वस्त्रजीके सेवासदनमें रहना हो तो प्रबंध कर दूं। अथवा वर्धामें जो कन्या पाठशाला है, उसमें काम करनेकी बिच्छा हो तो वह करो। जमनालालजी कलकत्तेकी पाठशालाको जानते हैं। उसके लिये वे बिनकार करते हैं। परन्तु वर्धामें कन्या पाठशालामें जितजाम कर देनेको कहते हैं। वर्धामें मराठी ही है। और वहां तो घर जैसा है, जिसलिये पहला अनुभव वहां लिया जाय तो ठीक ही है।

अब जो बिच्छा हो मुझे बताओ।

मुझे उत्तर पटनाके पते पर लिखना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,

ठि० वल्लभभाजी बैरिस्टर,

खमाता चौकी,

अहमदाबाद

१. मुझे अनुभव लेने और काम करनेके लिये कहां रहना चाहिये जिसकी जिस पत्रमें चर्चा है। श्री देवघरका तार था कि वे अपनी देख-रेखमें चलनेवाले पूनाके सेवासदनमें मुझे दिसम्बरमें भरती कर सकेंगे।

(कोटडा,
कच्छ,
२५-१०-'२५)
सोमवार

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे जल जानेकी बात नी सुनी। अब तो थोड़े ही दिनामें वहा आना है, जिसजिसे मिलेगे तब बातें करेंगे। हाथ बिलकुल अच्छा हो गया होगा। डाह्याभाओके साथ अक बार लखी वानचीन हुयी है। फिर आजमलमें कम्मा। वहा (अहमदाबाद) पहुचनेमें पहरे समझ लूंगा। तुम्हारे लिजे मने तो निश्चय कर हो लिया है।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,
टि० बल्लभभाओ वैरिस्टर,
खमामा चौकी,
अहमदाबाद

(सत्याग्रहाश्रम, माधरमती,
७-१२-'२५)
सोमवार

चि० मणि,

तुम्हारे पत्र मिलने है। तुम्हारा सारा कार्यक्रम आ गया है। वहा सेवासदनमें सब कुछ नया लगना है, यह तो मैं जानता ही था। फिर भी वहाका नियम, वहाकी पद्धति, वहाका अनुसाह, वहाकी प्रामाणिकता बगैरा आकर्षित करनेवासी है। फिर, जिसके बराबर अन्य कोओ जीवित सम्था सायद ही कही होगी। हमें बुझकी पद्धति बगैराको हमारी अपनी पसन्दके कार्यमें दाखिल करना है। हमें तो गुणग्राही

१ डाह्याभाओ पू० बापूजीके साथ कच्छके दोरेमें थे।

वनना है। हमें जितना पसन्द हो उतना ले लें। विरोधी मतवाले समाजमें भी हमें सहिष्णुतापूर्वक रहना तो आना ही चाहिये न?

तुम्हारी तवीयत अच्छी रहती होगी। मेरी चिन्ता न करना। मुझमें जक्ति आती जा रही है। आज वम्बजी जा रहा हूं। वम्बजी अंक दिन रहकर वहांसे वर्वा जाऊंगा। वर्वा नियमित रूपमें पत्र लिखना। वहांके अनुभवोंकी डायरी रखो तो अच्छा हो।

डाह्याभाजी अभी तो विठ्ठलभाजीके आग्रहसे अुनके पास जायंगे। दो चार दिनमें वहां जायंगे। फिर अुनके साथ महासभा (कांग्रेसमें) में आयेंगे।

तुम्हारे लिये तो जब तक चाहो वहीं रहना अच्छा है। मनमें बुठनेवाली सभी तरंगें बताना।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिवहन पटेल,
ठि० नेवासदन,
पूना सिटी

३४

वर्वा,
शुक्रवार
(१२-१२-२५)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। वहांका काम पूरा करनेके बाद वम्बजी रहना हो तो भले ही रहो, नहीं तो तुरन्त यहां आ जाओ। ज्यादातर तो यहां लम्बी छुट्टियां नहीं होतीं। बिसलिसे कन्या पाठशालामें तुरन्त काम मिल जायगा। साथ ही जमनालालजी^१ की लड़की कमला और मदालसाको भी तुम्हीं पढ़ाओ, यह निश्चय किया है। अभी तो जानकी-वहनके साथ ही रहनेका निश्चय रखना। तुम आओगी तबसे तुम्हारा

१. विठ्ठलभाजी अुस समय केन्द्रीय विधान-सभाके अध्यक्ष थे। अुन्होंने डाह्याभाजीको अपने पास रहनेको दिल्ली बुलाया था।

२. स्व० जमनालालजी वजाज। मध्यप्रदेशके गांधीजीके मुख्य साथी, चरखा-संघके अध्यक्ष, कांग्रेसके खजानची १९२१-४२।

वेतन ५० रुपये प्रति माग लिखा जायगा। अगलिजे जब आना हो
आ जाओ। बापेसमें जानेकी अच्छा हो जाय तो यहाँमे मेरे साथ अथवा
बाला बाला कानपुर चली जाना। मुझे २३ तारीखको कानपुर पहुँचना
है। पहली जनवरीको तुम्हें यहाँ पहुँच जाना चाहिये।

मेरा वजन^१ घट गया था। वह ९ पाँड बापस बढ़ गया है।
अब ६ बाकी रहा।

बापूके आशीर्वाद-

श्रीमती मणिवहन वल्लभभाभी पटेल,
सेवासदन, सदाशिव पेठ,
पूना मिट्टी

३५

वर्धा,
माघ वदी अमावस,
(१६-१२-'२५)

चि० मणि,

मेरे पत्र मिले होंगे। यदि जहमदाबाद जानेकी जरूरत ही लगे
तो चली जाना। सिर्फ अलना याद रखना कि यहाँ पहली जनवरीको
तो काम^१ पर लग ही जाना चाहिये। अब मिलनेका मोह कम रखा
जाय, इसीमें समझदारी मालूम होती है।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिवहन वल्लभभाभी पटेल,
सेवासदन,
सदाशिव पेठ,
पूना मिट्टी

१ मावरमती आश्वसमें बालकोंके व्यवहारमें मलिनता पाओ
गयी। जिसके लिये प्रायश्चित्त-स्वरूप पू० बापूजीने २४-११-'२५
से १-१२-'२५ तक मातृ दिनेके उपवास किये थे। अमुसे घटा हुआ
वजन।

२ वर्धाकी कन्या पाठशालामें।

(सत्याग्रहाश्रम, सावरमती,
जनवरी, १९२६)

चि० मणि,

तुम्हारे वहां (वर्धा) पहुंच जानेका समाचार जमनालालजीने लिखा है। मुझे नियमपूर्वक पत्र लिखना। कमला^१ और मदालसा^२ को खूब संभालना। वैसे कक्षाका तो कहना ही क्या? देववरको कृतज्ञताका पत्र लिखा था क्या? न लिखा हो तो लिखना, मराठीमें।

बापूके आशीर्वाद

... यहां आया है। मैं आया अुसी दिन। नन्दूवहन^३ के पास गया था। अुन्होंने खूब धीरज^४ दिखाया है।

श्रीमती मणिवहन,

ठि० सेठ जमनालालजी,

वर्धा (सी० पी०)

१. स्व० जमनालालजी वजाजकी लड़कियां।

२. स्व० विजयागौरी कानूगा। अहमदाबादके प्रसिद्ध स्व० डॉ० कानूगाकी पत्नी।

३. श्री नन्दूवहन कानूगाका छोटा वारह वर्षका पुत्र अेकाअेक गुजर गया, जिसका अुन्हें बड़ा आघात लगा था।

आश्रम,
(सावरमनी)
बुधवार
(६-१-२६)

चि० मणि,

अब पत्र मैंने विनोबा'के पत्रमें तुम्हें भेजा था। वह तो काहेको मिला होगा? क्योंकि विनोबा तो यहाँ हैं। तुम्हारा पत्र कल मिला। चि० कमलाको जो पसन्द हो वह शिक्षा दी जाय। अब दो हिन्दी पुस्तकें ली जाय और अन्हे पढ़वाया जाय। कमलाका अकगणित बहुत कच्चा है, वह सिखाया जाय। वह गुजराती समझ लेनी है। और भी जो विषय अन्हे पसन्द हों वे सिखाये जाय। रामायणमें से थोड़ा भाग साथ पढ़ो तो भी ठीक है। मुख्य बात तो कमलामें अध्ययनका रस पैदा करनेकी है। मराठी लिखना-पढ़ना जरा ज्यादा जान लेना। नित्य घूमने जाना और सब कुछ नियमपूर्वक करना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,

ठि० सेठ जमनालालजी,

वर्धा (मी० पो०)

१ आचार्य विनोबा भावे। आश्रमवासी। १९४०में हमारे राष्ट्रकी सम्मतिके बिना हिन्दुस्तानको विश्वयुद्धमें शामिल कर देनेके विरुद्ध व्यक्तिगत सविनय कानून भंग शुरू किया गया, तब बापूजीने अन्हे प्रथम सत्याग्रही चुनकर सम्मानित किया था। बापूजीके गुजरनेके बाद भूदान-आन्दोलनके प्रणेता।

(सत्याग्रहाश्रम, सावरमती,

११-१-'२६)

सौमवार

त्रि० मणि,

तुम्हारा पत्र मुझे सब समाचार देता है। भाभी देवघरके नामका पत्र अच्छा है। अन्हें अच्छा लगेगा।

वहां सब नया है, जिसलिसे जरा घबराहट होती है। परन्तु जिस तरह कायर नहीं बनना चाहिये। कमला जितनी बढ़ सकती है उतना उसे बढ़ाया जाय। धीरे धीरे ठिकाने आयेगी। उसे बातोंमें लगाया जाय। घूमने निकले तो घूमने ले जाओ। उसे प्रेमसे जीता जाय।

मराठी लिखने और पढ़ानेकी आदत तुम्हें नहीं है। दोनों अभ्याससे आयेंगी। वहां मराठी है, यह तो हम जानते ही थे। हिन्दी घर पर पढ़कर सीख लो। वहां किसीकी मददकी जरूरत हो तो लेना।

खादीकी बात दूसरोंको धीरेसे समझाओ जाय और वे जितना मानें उतनेको गनीमत समझा जाय।

अर्थात् प्रत्येक वस्तु निष्काम वृत्तिसे की जाय। हम प्रयत्नके मालिक हैं, फलके नहीं। मेहनत करके संपूर्ण सन्तोष मानें। उसमें कभी न हारें। अन्तमें तो यहां काम करनेका समय आयेगा ही।

मैं यहां रहूं उसी समय तुम्हें दूर रहना है, जिसका खेद न मानना। पत्र द्वारा तो मिलेंगे ही।

अपना स्वास्थ्य संभालना। और संभालनेके लिसे मनको बिल्कुल प्रफुल्लित रखना। -

वापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिवहन,

ठि० सेठ जमनालालजी,

वर्धा (सी० पी०)

(सत्याग्रहाश्रम,
सावरमती,
३-२-'२६)
बुधवार

चि० मणि,

देवदास तो यहा नही है। वह अभी तक देवलालीमें ही है। मेरी तबीयत अब अच्छी है। कमजोरी है, वह मिट जायगी। अब वहा जी लग गया होगा। कमला जितनी आगे चले खुतनी चलाना। चिन्ता बिलकुल न करना। स्वास्थ्य अच्छा रहता होगा। घूमने हमेशा जाना। गणूबाजी^१ जो आश्रम (वर्षा) में है छायाद चली जायगी। कमला (बजाज) के विवाहके समय यदि समभव हो तो यहा आना। मुझे नियमित पत्र लिखना।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिवहन,
ठि० सेठ जमनालालजी,
वर्षा (बी० ओन० रेलवे)

४०

(सत्याग्रहाश्रम,
सावरमती,
१५-२-'२६)
सोमवार

चि० मणि,

काहें मिला। डाकका वक्त है। यदि तुम दोनों^२ किसी तिश्चय पर पहुँचे होओ तो उसके अनुसार करना। यदि न पहुँचे होओ तो हम सब मिलकर निर्णय करेंगे। मैं यहा बैठकर नहीं कर सकता। अभी

१ उस समय वर्षा आश्रममें रहनेवाली एक बहन।

२ श्री जमनालालजी तथा मैं।

आओ या जमनालालजीके साथ, जिसका निर्णय तो वहाँके कर्तव्यका विचार करके तुम्हींको करना है।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,
ठि० सेठ जमनालालजी,
वर्धा (सी० पी०)

४१

देवलाळी,
(१५-५-'२६)

चि० मणि

बाको राजी कर लिया^१। परन्तु मंगलवारसे पहले आनेसे जिनकार कर दिया, जिसलिजे अब तो वहाँ दुबवारको आयेंगी। सूरजवहन^२को कहना। शिष्य और शिष्या^३ संतोष दे रहे होंगे। सबमें ओत-प्रोत हो जाना सीखो। नंदूवहन (कानूगा)को मनाया जा सके तो मनाकर ले आओ^४। कार्यक्रम बदल गया है यह कृष्णदास (गांधी) ने बताया होगा।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन,
सत्याग्रह आश्रम,
सावरमती

१. श्री देवदासभाजीका वम्बजीमें अपेंडिसाइटिसका ऑपरेशन कराया गया था। उस समय वा आश्रमसे वम्बजी गयी थीं। पू० बापूजीने उन्हें आश्रम लौटकर वहाँकी जिम्मेदारी संभालनेको राजी किया था, हालांकि वे अधिक समय देवदासभाजीके पास रहना चाहती थीं।

२. एक आश्रमवासी वहन।

३. श्री देवदासभाजीके ऑपरेशनके समय वा वम्बजी गयीं तब उनके सुपुर्द जो एक वहन और दो बालक थे उन्हें वा मुझे संभालनेके लिजे सौंप गयी थीं।

४. श्री नंदूवहन कानूगा पुत्रके देहान्तके बाद बहुत गमगीन रहती थीं। उन्हें आश्रममें खींचनेका प्रयत्न उस समय बापूजी कर रहे थे।

चि० मणि,

बाह, कुमारिया बीमार पड़े तो मैं दुबड़ा किसके पाम रोऊ ? यह तो समुद्रमें आग लगनेके बराबर हुआ । सेवा करनेके लिये भी शरीर-रक्षाकी कला सीख लेनी चाहिये । मेरा तो खयाल है कि जैसे तुम सब कपड़े पहनती हो वैसे ही मच्छरदानी भी रानकों पहननी चाहिये । और तो मैंने बच्चोंके पत्रमें जो लिखा है सो देखना ।

आशा है अिस पत्रके मिलने तक तो बीमारी चली गयी होगी ।

बापूके आशीर्वाद

४३

मोनवार
(१९२६)

चि० मणि,

अिधर तो तुम्हारा धैर्य भी पत्र नहीं आया । अब तबीयत बिल्कुल अच्छी हो गयी क्या ? जैसे जैसे व्ययंकी चिन्ता घटेगी और चित्त बालबकी तरह शुद्ध होगा, वैसे वैसे बीमारिया कम हो जायगी । 'शुद्ध' का अर्थ समझ लो । शुद्ध चित्तको किसीका दुःख नहीं लगना, अुसमें किसीका दोष नहीं ठहरता, वह किसीका बुरा नहीं देखता । यह भव्य स्थिति है । मैं कहूँ कि मेरी तो यह स्थिति नहीं है । मैं अुस स्थितिको पहुँचना चाहता हूँ । परन्तु अुससे बहुत दूर हूँ । अिम स्थितिको अखंड ब्रह्मचारी और

१ ४२ से ४७ नंबरके पत्र आश्रमवासियोंके नामके पत्रोंके साथ आश्रमके व्यवस्थापकके मारफत आये थे ।

२ आश्रममें मच्छर बहुत थे, परन्तु मैं मच्छरदानी अिस्तेमाल नहीं करती थी ।

३ १९२५-२६ में मैं बहुत अस्वस्थ रहती थी ।

ब्रह्मचारिणी जल्दी पहुंचते हैं। अैसोंको मैंने देखा है। अेण्डूज^१ जिस स्थितिके नजदीक हैं। अिन्हें मूर्ख माननेवालोंको तुम मूर्ख जानना। अैसी शुद्धता तुममें आनी ही चाहिये।

वापूके आशीर्वाद

४४

मौनवार
(१९२६)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। वापूसे भी सब हाल सुने। बीमारीके वारेमें अब अधिक नहीं लिखता, क्योंकि देरसे देर गनिवारको तो मिलनेकी आशा है। परन्तु तुम्हें झट अच्छी और ताजी हो जाना चाहिये।

वापूके आशीर्वाद

४५

गोंदिया,
(१९२६)

चि० मणि,

तुम्हारी भावनाको मैं जानता हूं। परन्तु मेरे ही साथ जन्मभर थोड़े रहा जा सकता है? मेरे कामके साथ रहा जा सकता है। असलिये उसके वास्ते तैयार हो जाओ। वहां अेक भी मिनट वेकार न जाने देना। मुझे लिखती रहना। यथासंभव मैं भी लिखूंगा।

वापूके आशीर्वाद

१. दीनबन्धुके नामसे प्रसिद्ध स्व० सी० अेफ० अेण्डूज।

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरे अंक अद्भुत परमे महादेवने तुम्हारा अनुमतिकी प्रतीक्षा किये बिना मुझे तुम्हारा पत्र बता दिया। मुझे कुछ ठिठानेकी महादेवने कोभी आदा न रखे। यह बात अन्की शक्तिके बाहर है। हम कुछ आदतें डालते हैं, फिर अन्से अन्टा करना शक्तिके बाहर हो जाता है। अच्छी आदतोंके लिये यह गुण पैदा करने लायक है। जहिमाका शुद्ध ध्यान धरनेवाला अन्में हिमा करनेमें असमर्थ हो जाता है। यानी शरीरमें नहीं परन्तु विचारसे। विचार ही कार्यका मूल है। विचार गया तो कार्य गया ही समझो।

मेरा वियोग जितना तुम्हें खटकता है अतना ही मुझे भी खटका हो तो? और अभी भी खटकता हो तो? तुमने श्रेयको पसन्द किया, मैंने भी अमीको पसन्द किया। इसीमें तुम्हारा, मेरा और सबका कल्याण है। श्रेयको प्रेय बनाना शिक्षाका फल होता चाहिये। जिसलिसे आश्रममें रहना श्रेयस्कर है, वैसे यदि समझती हो तो अमी प्रिय बनाओ। जिसमें अपने मनको या भुझे घोलना न देना। जब आश्रममें रहना अच्छा न लगे तब तुम्हें अन्यत्र रखनेको मैं तैयार ही हूँ, यह समझ लो। मुझे खुलकर लिखो। भले ही मैं असे न समझू। भले ही अमीके अन्तरमें भाषण दूँ। बड़के भाषण सहन करना सीखना चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला । काका (विट्ठलभाजी) को मौजूदगीमें^१ शहरमें जाना तय किया, यह ठीक ही किया ।

मनु^२ और मणिलाल^३ वीरजसे ही ठिकाने आयेंगे ।

वा फिर कह रही थी कि रविवारको निकलेगी । बुधको तो वह पहुंच ही जायगी ।

यह रातको सोनेसे पहले लिख रहा हूं । इसलिसे अधिक नहीं लिखूंगा ।

वापूके आशीर्वाद

४८

वर्षा,
सोमवार
(६-१२-'२६)

चि० मणि,

सब वहनोंका पत्र जिसके साथ है । अब तुम्हारा । अभी तक तुम्हारी अनिश्चित स्थिति देखकर मुझे दुःख हो रहा है । मैं नहीं मानता कि तुम्हारे लिखे आश्रमसे अधिक अच्छी कोजी और जगह हो सकती है । हो सकता है कि आश्रममें भी तुम्हारा जी न लगे । जिस स्थितिको दूर करनेका प्रयत्न करो । कब्ज रहता है, पर जिसका अुपाय तो तुम्हारे हाथमें ही है । अथवा तुम अहमदावादका पानी मंगाकर पिओ । पीने जितना आसानीसे मंगाया जा सकता है । नदीका पानी अुवाल कर पिओ तो भी वही

१. विट्ठलभाजी विधान-सभाके अध्यक्ष चुने जानेके बाद अपने मतदाता-क्षेत्रमें अर्थात् गुजरातमें दौरा करनेके लिखे आये थे ।

२. वापूजीके बड़े लड़के हरिलाल गांधीकी पुत्री ।

३. आश्रमका एक विद्यार्थी ।

काम होगा। तुम्हें प्रफुल्लित रहनेका दृढ़ निश्चय करना चाहिये। १४ तारीखके बाद यहा आर्जका विचार स्थिर रखना। यहा ससूत्रकी पढ़ाईमें तो मदद मिलेगी ही। हवा तो अनुकूल है ही। मुझे खुले दिलसे जो कुछ लिखना हो अुमके लिखतेमें मकोच न रखना।

रमणीकलालनाजी'में कहना कि पूजाभाभी'के स्वास्थ्यके समाचार मुझे नहीं मिले, श्रममें बिन्ना रहती है। अुनका पता क्या है? अुन्हें स्वास्थ्यके समाचार मिटने हों तो लिखें।

बापूके आशीर्वाद

वि० मणिवहन पटेल,
सन्याग्रह आश्रम,
सावरमती

४९

बर्बा,
बुधवार
(८-१२-२६)

वि० मणि,

तुम्हारा कांड मिला। खुशीमें आओ। रातकी गाडी लेनेके बजाय सुबहकी लेना अच्छा है। फिर जैनी भरजी हो वैसा करना। मुझे अब कोअी शादी तो करनी नहीं है कि प्रतिक्षण विचार बदलू। यह अिजारा तो कन्याओका होता है। कुछ हद तक कुमार भी अुसे भोगते हैं।

बापूके आशीर्वाद

वि० मणिवहन पटेल,
सन्याग्रह आश्रम,
सावरमती

१ श्री रमणीकलाल मोदी। आश्रमकी पाठशालाके शिक्षक।

२ वे राजचन्द्रजीके भक्त थे और पू० बापूजी भारतमें आये तबमें अुनके मसगमें रहते थे। कुछ समय गुजरात प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके कोषाध्यक्ष रहे थे। जीवनके अन्तिम दो वर्षोंमें वे सावरमती आश्रममें आकर रहे थे।

(१-१-'२७)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया। जिस पत्रके पीछेका पत्र पढ़ना^१। जिस कामके लिये तुम्हें भेजनेका विचार होता है। तुम या मीराबाई ही वहां काम कर सकती हो। सिंधी लड़कियां होंगी, जिसलिये अंग्रेजी और हिन्दीकी जरूरत होगी। मीराबाई अभी भेजी नहीं जा सकती। जिस-लिये मैं चाहता हूं कि तुम जाओ। यदि निश्चय हो जाय तो बताना।

• तुम्हें सुख-दुःख सहकर भी आश्रममें अर्थात् मेरे साथ ही रहना है। अपना अन्तर मेरे सामने अंडेल कर मुझसे 'मां' का काम लेना।

१. कराचीसे श्री नारायणदास आनन्दजीने कराची म्युनिसिपल कन्या पाठशालामें तकली सिखानेके लिये एक बहनकी वापूसे मांग की थी। यह पत्र अुसीके सिलसिलेमें है। अुनके पत्रका प्रस्तुत भाग जिस प्रकार है:

कराची,

२०-१२-'२६

परम पूज्यपाद वापूजीकी सेवामें,

म्युनिसिपल कन्या पाठशालाओंमें तकलीसे कातनेका काम शुरू करनेका प्रस्ताव पास हुआ है। और अुसके लिये एक सिखानेवाला छह महीनेके लिये ५० रु० वेतन पर रखनेका निश्चय भी हुआ है। यहां ऐसी महिला मिल नहीं सकती। अतः जिस कार्यमें आपकी सहायता लेना चाहता हूं। यदि ऐसी किसी बहनको अहमदाबाद या दूसरी जगहसे भेज सकें—नियुक्तिकी अवधि बढ़ाई भी जा सकती है—तो लिखियेगा। परन्तु शिक्षिकाओं और लड़कियोंको दिलचस्पी हो सके, ऐसी होशियार और साथ ही मिलनसार महिलाकी बड़ी जरूरत है।

नारायणदास आनन्दजीके
वन्दन

तुम्हारी नीरसताका कारण भीतर ही भीतर मायीका अभाव तो नहीं है न? मुझे तुम्हारे जेब हिर्नपीने आग्रहपूर्वक कहा है कि मुझे तुम्हारा विवाह कर ही देना चाहिये। यह बात अके युवकके मिल-मिलेमें निकली। वह पाटीदार तो नहीं है, परन्तु योग्य है। मैंने कहा कि तुम्हारे बारेमें मैं तो निर्भय हूँ। तुम्हारी विवाहकी अिच्छा होगी, यह अभी तो मैं नहीं देखता। तब अुन्होंने कहा, "आप मणिबहनको नहीं जानते।" जिस समय तो मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ, यह मेरी भाषा परसे तुम देख सकोगी। मुझे निर्भयतासे उत्तर देना। अिनना तो है ही कि जिसे कुमारी रहनेकी अिच्छा हो अुमे वीरागना बनना चाहिये। अुसे प्रफुल्लित रहना चाहिये। नहीं तो लोत कहेंगे, "अिमकी शादी कर दो।"

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
मन्नाग्रह आश्रम,
सावरमती

५१

(मोदपुर,
३-१-२७)
सोमवार

चि० मणि,

तुम्हारे पत्रोंकी मैंने आशा रखी थी, परन्तु अेक भी नहीं मिला। स्वास्थ्य मानसिक और शारीरिक अच्छा होगा। मस्कृत खूब चल रही होगी। मुझे ब्यौरेवार उत्तर लिखना। ६ तारीख तक कोमीलामें रहूंगा। ९ तारीख तक काशीमें। काशीका पता गांधी-आश्रम, बनारस छावनी करना। बापूको पत्र लिखना। मालूम हुआ है कि वे तुम्हारी चिन्ता कर रहे हैं। हम सब मजेमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन,
मन्नाग्रह आश्रम,
वर्धा, बी० अेत० रेलवे

(काशी,
८-१-१९७)
शनिवार

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया। वालजीभाओ^१से पढ़नेकी व्यवस्था की है सो ठीक हुआ। अन्तसे बहुत सीखा जा सकेगा।

तुम्हें शिक्षणसे क्यों मुक्त किया गया है, यह मैं नहीं जानता। क्योंकि जिस पत्रमें ये समाचार थे उससे कारण मेरी समझमें नहीं आया। तुम खुद साहसपूर्वक पूछ सकती हो। मैं तो समझता था कि तुम्हें कारण बताया गया होगा। मैं निश्चित था, क्योंकि शिक्षा देना हो या न देना हो, तुम्हें आश्रममें ही रहना है और वेतन कहो या जो कुछ भी कहो, वह चालू ही रहेगा। तुम्हारी जिम्मेदारी मुझे झुठ लेनी है। शिक्षक पर रोष भी न करना। अन्तें सारा तंत्र चलाना पड़ता है, इसलिये अन्तें जो ठीक लगता है वैसा वे करते हैं। परन्तु कारण जाननेका तो तुम्हें हक है ही। वह जान लेना।

परन्तु अब तो तुम्हें कातना सिखानेकी तैयारी करनी है। उसके सिलसिलेमें जो सीखना जरूरी हो वह सीख लेना है, अर्थात् चरखा सुधार, रुथीकी किस्में, लोढ़ना, पींजना, कातना, फुंकारना, आंटी बनाना, तार जोड़ना वगैरा सब क्रियाओं। माल बनाना आना चाहिये। साड़ी^२ चढ़ाना

१. श्री वालजी गोविन्दजी देसाजी। अक आश्रमवासी, 'यंग अडिया' के अक सहायक।

२. आजकल तकुअे पर लोहेकी गरेड़ी होती है। परन्तु पहले सूतको गोंद लगा कर तकुअे पर लपेटा जाता था उसे साड़ी कहते थे।

जाना चाहिये। और जहा जाना होगा वहा अिन क्रियाओंके माय दूसरा जो कुछ सीगवनेको मिल जाय वह सीख लेना चाहिये और अिसी मिल-मिलेमें ससृृत और हिन्दी तो पक्की हो ही जानी चाहिये। समृृतमें गीताजीके अर्थ व्याकरण-सहित पक्के होंते चाहिये। तक्ली तो है ही। कराचीमे तार आया है कि तुम्हारा नाम बोर्डके सामने गया है। मैं खुश हुआ हू।

मुझे पत्र लिखती रहना और भूत्र अुत्माहपूर्वक काम करना।

अव २ से ८ तारीख तक गोदिमा, नागपुर, वर्धा, अक्कोला, अमरावती अिम प्रकार कार्यक्रम रहेगा। निश्चिन दाहर नहीं जानता। वर्धा पत्र भेजनेमे ठीक रहेगा।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,
सत्याग्रह आश्रम,
सावरमती

५३
(तार)

गया,
१५-१-'२७

मणिवहन,
सत्याग्रह आश्रम,
सावरमती

तुम्हारे पत्रसे आनन्द हुआ। पीजना और लोढना जल्दी पूरा सीख लो।

बापू

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया^१। तुम्हारे पत्रमें कुछ भी छिपाने जैसी बात नहीं है, जिसे कोखी न पढ़े। फिर भी महादेवके सिवा और किसीने नहीं पढ़ा।

१.

(१९२७)

परम पूज्य बापूजी,

जबसे शादी न करनेका निश्चय किया है तबसे आजकी अिस घड़ी तक तो मुझे कभी शादी करनेका विचार आया नहीं। कितनी ही अशान्त होऊं, चित्त कितना ही व्यग्र हो, फिर भी मुझे ऐसा नहीं लगा कि शादी करूं तो शान्ति मिलेगी। अुलटे यही खयाल हुआ है कि विवाह किया होता — मेरी सम्मतिसे या बापूके कहनेसे — तो अधिक दुःखी होती। जुहू वीमार होकर आयी अुससे पहले आत्महत्या करनेका विचार दो तीन वरसोंमें अनेक बार हुआ था, परन्तु निश्चित विचार कभी नहीं किया। अुस वीमारीके बाद तो ऐसा विचार कभी विशेष किया नहीं। कभी बहुत ही व्यग्र हो गयी तब अेक या दोसे अधिक बार यह विचार नहीं आया। परन्तु आत्मघात नहीं करूंगी, अिसका विश्वास दिलाती हूं। और अेक बार कह देनेके बाद तो हरगिज नहीं करूंगी।

मैं तो संसारसे अूब गयी हूं। यहां वहां रहकर अनेक लोगोंके हाय सुख-दुःख सहते हुअे पली हूं। मेरी दृष्टिसे मैंने अब तक कुछ कम कष्ट नहीं भोगा है। अिसमें से ज्यादाका तो बापूको पता भी नहीं होगा। मेरा स्वभाव ही ऐसा है कि मैं शायद ही किसीसे अिस बारेमें कुछ कहती हूं। और फिर भी अिस समय अुन दुःख देनेवालोंमें से किसीके

मैं जबरन तुम्हारी शादी हरगिज नहीं करूंगा। और बापू भी नहीं
 यह कोअी धीमार हो और मेवा करने मुझे बुलावें, तो मुझे ऐसा नहीं
 लगता कि मुझे अितना सताया था, अब मैं क्यों जाऊँ ? ऐसा विचार भी
 नहीं आता, अितना ही नहीं, हो सके तो मैं जहूर जाती हूँ। मेरी
 बचपनकी लगभग सभी तरफें तरफें ही रह गयीं। वे सब हवाअी विले
 नहीं थे। परन्तु परिस्थितिया ही ऐसी थी जिनमें स्वतंत्र दौलने
 पर भी मैं परतत्र ही थी। पाटीदार जातिमें जन्मी हुआँ एक लडकी
 थी, अिमलिये अुमके भी थोडे-बहुत फल भोगे। मेरी अुमग, मेरा
 अुल्माह, अिम प्रकार बचपनसे ही नष्ट होने लगा था। लगभग
 १९१५ से अिम प्रकारकी चित्तकी व्यग्रता अनेक बार होती रही है। अुस
 समय छोटी थी अिसलिये कोअी यह नहीं कहता था कि अिमकी
 शादी कर दो। अुस समय मैंने भी कोअी निश्चय नहीं किया था।
 अुस समय भी और अुमके बाद भी कअी बार अेकातमें केवल रोकर
 शान्ति प्राप्त की है। और जवसे मुझे ऐसा लगा — मुझे साफ दिवाअी
 देता है — कि कुछ लोग मानते हैं कि मैं जरा जरासी बानमें रो
 देती हूँ या मुझे रोनेकी आदत पड गयी है, तबसे मैं ययामभव
 किसीके देखते नहीं रोती, अथवा मेरे हृदयमें होनेवाला दर्द मैं जहा
 तक हो सके किसीसे कहती नहीं।

मैं मानती हूँ अब यह स्पष्ट हो जायगा कि मेरी नीरसताका कारण
 साथीकी कमी नहीं है। दूसरोको जो कहना हो भले ही कहें। और मान
 लीजिये कि पू० बापू या आप मेरी शादी कर देनेका निश्चय करे, तो भी
 अब मैं छोटी नहीं कि आप लोग मेरी शादी जबरदस्ती कर सकें। अिम
 बारेमें मुझे जरा भी शक नहीं। अधिकसे अधिक क्या होगा ? शिकशिक
 होगी और ससारमें तीनांकी थोडी बुराअी भी होगी। भले ऐसा हो, परन्तु
 अच्छाके विरुद्ध तो मैं हरगिज व्याह नहीं करूंगी। अिसी तरह मैं यह भी
 विश्वास दिलाती हूँ कि जब विवाह करनेकी मेरी अच्छा होगी तब कहनेमें
 शरमाअूंगी नहीं। मैं यह जहूर मानती हूँ कि बापूके सामने मेरी जवान

करेंगे। मेरी चले तो मैं लड़कियोंको जबरदस्ती कुमारी रखूं। विवाह करनेको तो लड़कियां मुझे मजेदूर करती हैं। इसलिये जरा ज्यादा खुली होती^१, तो मुझमें अितनी अधिक व्यग्रता या नीरसता न होती। परन्तु अब जिस दिशामें प्रयत्न करनेकी जरा भी अच्छा नहीं होती। जब तक मुझे जरूरी लगा मैंने प्रयत्न करके देख लिया। शायद मुझे करना नहीं आया हो। बापूके सामने नहीं बोल सकती, जिसमें मेरा ही दोष है, ऐसा कहा जाय तो उसे भी मैं स्वीकार करनेको तैयार हूं। अब जिस सम्बन्धमें पहलेकी तरह चर्चा या बातचीत नहीं करनी है। परन्तु अब मैं कुछ भी प्रयत्न नहीं करूंगी, क्योंकि मैं स्पष्ट मानती हूं कि जिस वारेमें किसीसे कुछ नहीं हो सकता। विवाह न करने और चित्तकी अस्वस्थताके सम्बन्धमें अितने स्पष्टीकरणसे मैं विश्राम लेती हूं। फिर भी हमेशा जिस मनोदशा पर काबू पानेकी कोशिश तो मैं करती ही हूं। अकसर उसमें सफल होती हूं। परन्तु यह सफलता अधिक समय तक नहीं टिकती।

मणिके प्रणाम

१. पू० बापूके साथ मैं बोलती नहीं थी, जिस वारेमें हमारे घरके रिवाजके विषयमें श्री महादेवभाजीके नाम पू० बापूने जिस प्रकार लिखा था :

तुम्हारा पत्र मिला। मणिके वारेमें तुमने लिखा सो जाना। कुछ तो मेरा दोष है ही। परन्तु मैं काममें अितना घिरा रहता हूं कि रातको देर तक कुछ न कुछ काम शहरमें होता ही है, इसलिये डॉक्टरके यहां खा लेता हूं। परन्तु डाह्या अहमदाबाद रहने आया तब मैं मानता था कि मणिको कुछ न कुछ शान्ति मिलेगी। मेरे साथ वह खुलकर बोल ही नहीं सकती। मैं उसे बुलाऊं तो भी वह बहुत हिचकिचाती है। यह उसीका दोष है सो बात नहीं। मैं खुद भी ३० वर्षका हुआ तब तक जहां बड़े हों उस जगह अेक अक्षर भी नहीं बोलता था। घरके बड़े लोग मौजूद हों तब बोलना नहीं चाहिये, यह घरका रिवाज था। यह स्वभाव बन गया। बड़े छोटोंके साथ ज्यादा बोलते ही नहीं।

मेरी तरफसे तो तुम्हें अमयदान ही है। तुम्हें न समझनेवाले मुझे तग करते थे। जिसलिये मैंने भी पूछ लिया। वह भी तुम्हारी व्यग्रावस्था देखनेके बाद। मैं ऐसी जवान लड़कियोंको जानता जरूर हूँ जो स्वयं जानती नहीं, किन्तु जिनकी चित्तकी व्यग्रताका कारण शादी न करना ही होता है। मैं मानता हूँ कि तुम्हारे लिये यह बात नहीं होगी। वेवल आह्ला बाहर रहा और मैंने पालकर अंग्रे बड़ा किया, जिसलिये वह सबके साथ पूरी छूट लेता है।

मणि तो पहले-पहल तुम्हारे और बापूजीके साथ खुलकर बरताव करने लगी है। और पत्र लिखना भी पहले-पहल तुम्हारे ही साथ सीखा। यह देखकर मुझे भी शुरूमें तो अजीब-सा लगा था। परन्तु मेरा खयाल है कि अब अंग्रेमें अधिक साहस आना जा रहा है। फिर भी मेरे साथ तो तुमकी हिम्मत खुलती ही नहीं। जिसके सिवा जिस सम्बन्धमें तो हम प्रत्यक्ष मिलेंगे तब बात करेंगे।'

१ यह पत्र मुझे भेजते हुये महादेवभाजीने लिखा था।

बम्बई, १४- -१९२१

प्रिय बहन,

*

*

*

जवाब बहुत ही दबिया है। वह पत्र ही तुम्हें भेज रहा हूँ। तुम्हें हिम्मत रखनी ही चाहिये। पितासे जितनी बात की जा सकती है अतनी दुनियामें बिम्बीसे नहीं की जा सकती। सास्त्रवाक्य अंग्रे है कि पिता, गुरु और वेदके आगे तो कुछ भी छुपाकर रखा नहीं जा सकता। अंग्रेके सामने अन्तरके द्वार खोले जा सकते हैं। तुम्हें तो बड़े सज्जन पिता मिले हैं। अंग्रे तुमसे बातें करनेकी अच्छा होती है, फिर भी तुम अंग्रेसे नहीं मिलती, यह तुम्हारे ही साहसकी कमी है। तुम्हारी ऐसी निर्दोष बालिकाको तो दुनियामें किसीके पास जाने या बातें करनेमें सकोच होना ही नहीं चाहिये। यह पत्र मिलनेके बाद बापूसे मिलना। सब बातें करना और मुझे पत्र लिखना।

तुम्हारा महादेव

परन्तु तुम्हें सावधान करना मेरा धर्म था और यह बताना भी कि
 एक बार एक बात कहनेके बाद शादीका विचार न किया जाय ऐसा
 कुछ नहीं है। हां, यदि व्रत ले लिया हो तो जरूर बात खतम हो जाती
 है। फिर तो आसमान टूट पड़े तब भी व्रतको तोड़ा नहीं जा सकता। परन्तु
 तुमने जब तक व्रत न लिया हो तब तक मेरे जैसा भी तुमसे पूछेगा। दूसरे
 तो आग्रह भी करेंगे। जिसका अर्थ यह नहीं कि मैं चाहता हूं कि तुम व्रत
 ले लो। वह तो जब व्रतके बिना न रहा जा सके तब अपनी अच्छासे लेना।
 अब मेरे लिये तो तुम्हारे विवाहकी बात करनी रह नहीं जाती। अतना
 ही नहीं, मैं औरोंको भी उससे रोकूंगा। परन्तु तुम्हें व्यावस्थासे निकल
 जाना चाहिये। कुमारीपनको हर तरहसे सुशोभित करना चाहिये। ब्रह्म-
 चर्यका तुम्हें धार्मिक अर्थ करना है और उससे धार्मिक फल पैदा करनेके
 लिये वह ब्रह्मचर्य तुम्हें पालना है जिसके बारेमें मैंने अभी 'नव-
 जीवन' में छप रही 'आत्मकथा' में लिखा है। जिसलिये तुम्हारी
 प्रकृति शान्त, प्रफुल्लित, अद्यमी और समभावी हो जानी चाहिये।

'मार्गोपदेशिका' बार बार पढ़कर उसे पचा डालो। गीताजीके
 प्रत्येक शब्दको उसके नियमोंके अनुसार समझना।

लोढ़ना-पींजना सीख लेनेके बारेमें मैंने तार दिया है। मैंने
 कराची भी तार दिया है। अभी तक नारणदासका जवाब नहीं आया।
 आये या न आये, मेरे पास ऐसी मांग तो और जगहसे भी आयी
 है। अलग अलग जगह तुम्हें कताजी सिखानेके लिये भेजते रहनेका
 विचार है। मैंने ५० रु० और सफर-खर्चकी मांग की है। जिससे
 अनुभव भी काफी होगा। बादमें देख लेंगे। वहां अभी किसी काममें
 न लगना। ३० रुपये तो लेती ही रहो। अन्नमें से बचें तो भले ही
 बचें। मैं हिसाब मांगूंगा।

बांपूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,
 सत्याग्रह आश्रम,
 सावरमती

अकोला जाने दृष्टे,
रविवार
(६-२-'२७)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हें अक्षर सुधारनेकी जरूरत है। अक्षर बड़े और साफ लिखनेकी आदत डालो। किसी खास मौके पर अच्छे लिखना ही काफी नहीं। जैसे महादेव (देमाजी) के अक्षर सदा अच्छे ही होते हैं वैसे लिखना चाहिये।

अभी तो हरिहरभाजीकी^१ वक्षामें मले ही जाती रहो। बोझनेवा महावरा रखनेसे हिन्दी आ जायगी। युसका शोक रहेगा तो अपने आप ज्ञान आ जायगा।

कराचीमें जवाब आने पर लिखूंगा।^२

कातने सम्बन्धी सारी क्रियाओंमें पूरी निपुणता प्राप्त कर लेना। अेक भी चीज बाकी न रहे। मैं सफरमें देखता ही रहता हू कि अमी चरित्रवान स्त्रियोंकी बड़ी जरूरत है।

मणिलाल कोठारीके नामका पत्र पढ़नेका तुम्हें अधिकार तो नहीं था, परन्तु पढ़ लिया तो कोजी बात नहीं। आज जवान भारतीय स्त्रीकी ब्रह्मचर्य-भालनकी शक्तिका कोजी विश्वास करनेको तैयार नहीं है। तुम और आश्रमकी दूसरी कुमारियां जिन अविदवासको झूठा साबित करे, जिसके लिये मैं तो तरम रहा हू।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल,
सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

१ सत्याग्रह आश्रमकी पाठशालाके अुस समयके शिक्षक।

२ पत्र न० ५० देखिये।

चि० मणि,

तुम्हारे दो पत्र मिले हैं। हिन्दी शुरू कर दी, यह अच्छा किया। जो करो उसमें स्वास्थ्यकी रक्षा करना। तो मैं निश्चिन्त रह सकूंगा।

अक्षरोंको बिलकुल मत बिगड़ने दो। भले ही लिखनेमें देर लगे। थोड़े समयमें सुधर जायंगे और गति बढ़ जायगी।

पूनियां तो मुझे बहुत ही अच्छी लगती हैं। मैं चाहता हूं कि रुबीकी सब क्रियाओंमें तुम्हें पहली श्रेणी मिले। तुम्हारा अच्छेसे अच्छा अप्रयोग कन्या-पाठशालाओंमें कताभी सिखलानेमें होनेवाला है। और अन्तमें ओश्वर तुम्हारी तबीयत ठीक रखे तो गरीब वहनोंके कल्याणमें करना है। स्त्रियोंमें जो काम करना है उसका कोई अन्त नहीं है और वह पुरुषोंसे तो मर्यादित रूपमें ही हो सकता है।

भोजनालयकी आलोचना मुझे सब लिखना। और शंकर^१ को प्रेमपूर्वक बताना। एक दो दिन खुद करके भी बताया जा सकता है। हमेशा उसमें भाग लेनेकी जरूरत नहीं होती। तुम्हें दूसरोंके साथ रहनेकी शक्ति पैदा करनी है। जब मैं महादेव और देवदासकी तरह तुम्हें भी चाहे जहां निर्भय होकर रख सकूं तब मैं प्रसन्न होऊंगा। किसीसे तुम्हें दुःख न हो, किसीको तुम दुःख न पहुंचाओ तब मुझे सन्तोष होगा।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,

सत्याग्रह आश्रम,

सावरमती

१. आश्रमका संयुक्त भोजनालय संभालनेवाले एक भाभी।

गुधवार
नासिक जाते हुअे,
(१८-२-२७)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया। अंसा दोखना है कि मैं वहा जल्दीसे जल्दी ८ तारीखको पहुचूंगा। अभी तक कराचीमे कोअी खबर नही आओ।

गंगादेवी^१ क्यों बीमार होती ही रहती हैं? बुनका जलवायु परिवर्तन करने कही जानेका अिरादा हो तो वैसा करे। तोताराम^१ और गंगादेवी दोनोंमे पूछना। खाने-पीनेमें परहेजसे रहती हैं क्या?

मैं आकर सस्कृतकी और पीजने, कातने वगैराकी परीक्षा लूंगा। तुम्हारे गुजराती अधर अभी और अच्छे होने चाहिये। गुजराती व्याकरणका अध्ययन खूब बढ़ा लेना।

समुक्त भोजनालयको सपूर्ण बनानेकी ओर आजकल मेरा मन अधिक रहता है। अब प्रयोग पूरा होना ही चाहिये। अिममें भरसक मदद देना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,
सत्याग्रह आश्रम,
सावरमती

१ आश्रमवासी दम्पति।

मौनवार
नेपाणी,
(२८-३-२७)

चि० मणि,

मेरी बीमारी का खयाल भी न करना । जो वर्ष बीत जाते हैं उनका हम खयाल नहीं करते । वैसे ही विकारी मनुष्योंके नसीबमें बीमारी भी बर्षोंकी तरह लिखी हुयी ही रहती है ! कोयी यूं ही चले जाते हैं । फिर भी जाना तो सभीको है, फिर हर्ष-शोक क्यों ?

अभी तक तुम्हारे वारेमें तार नहीं आया । अब तो आना चाहिये । तैयारी रखना । संस्कृत कितनी कर ली ? पींजने-कातनेका काम अब तो ठीक हो ही गया न ?

बापूके आशीर्वाद

यद्यपि अेक ही दिन लिखा गया है, फिर भी यह पत्र वहनोंके पत्रके वाद मिलेगा, क्योंकि डाकके समयके वाद लिखा है ।

बापूके आशीर्वाद^३

रविवार
(१९२७)

चि० मणि,

तुम्हारे पत्रकी प्रतीक्षा कर रहा हूं । मैं जानता हूं कि तुम जान-बूझ कर मुझे पत्र नहीं लिखतीं । परन्तु अैसा करनेकी अब तो जरूरत नहीं । संस्कृतकी पढ़ाई कितनी हुयी ? अब कातने-पींजनेमें पहला नम्बर आयेगा या नहीं ?

१. पू० बापूजीको रक्तचापका दौरा पहले-पहल हुआ ।

२. ५८ से ६७ नम्बर तकके पत्र आश्रमकी डाकके साथ आश्रमके व्यवस्थापक श्री नारणदास गांधीके नाम आये थे । वे आश्रमकी डाकमें आये हुअे पत्र जिनके हों उन्हें भेज देते थे ।

कराचीकी कोअी खबर^१ नहीं। तबीयत कैसी रहती है ?

मैं ठीक होता जा रहा हूँ। मेरी चिन्ता करनेका कारण नहीं।

बापूके आशीर्वाद

६०

शुक्रवार,
(१९२७)

चि० मणि,

तुम्हारे पत्र मिले हैं। यदि सम्मिलित भोजनालयमें खाना खाया जा सके तब तो बहुत ही अच्छा हो। जिस वारेमें मैंने गकरको पत्र लिखा है। अग्रे पढ लेना। चि० चपा^२की सभालका भार तुमने लिया, यह बहुत अच्छा किया।

अब तबीयत कैसी रहती है ?

बापूके आशीर्वाद

६१

(नदीदुर्ग,
२५-४-२७)
मौनवार
चैत्र वदी ९

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया। अमुका अन्तिम वाक्य अधूरा है और हमनाक्षर तो हैं ही नहीं। और न तिथि है। यह तो बड़ी अनावलीका सूचक है। हमारे यहा कहावत है कि धीरजका फल भीठा होता है। अनावलीमें आम नहीं पकते — अंसी भी हमारी अेक कहावत है। अुसका अंग्रेजी अनुवाद 'Haste is waste' किया जा सकता है। तुम बापूको अपनी माटीमें से धोती दे आओ, यह तो बहुत अच्छा किया। जिस

१. पत्र न० ५० देखिये।

२. डॉक्टर प्राणजीवनदामकी पुत्रवधू।

नियमको जारी रखो । उसमें डाह्याभाजी तथा यशोदा शरीक हों तो कैसा अच्छा हो !

कराचीका काम नहीं होगा, अस्ता माननेका कारण नहीं । अस्ता ही हो तो भी दूसरी जगहें तो तैयार ही हैं । परन्तु बिसका निश्चय हो जाय तो दूसरा विचार करेंगे ।

बापूके आशीर्वाद

६२

(नन्दीदुर्ग,
२-५-'२७)
मौनवार

चि० मणि,

• तुम्हारा पत्र मिला ।

बापू लिखते हैं कि तुम्हारा शरीर दुबला हो गया है । अस्ता क्यों ? शरीर तो मजबूत और तेजस्वी होना चाहिये । आदर्श कुमारीमें तो वीरता सभी तरहसे होनी चाहिये ।

यदि कराची जाना न हो तो मेरा विचार तुम्हें दिल्ली भेजनेका है, जहां चंपावतीको भेजनेकी बात थी । वहां बहुत लड़कियां हैं और बहुत काम है । दिल्लीका जलवायु तो अच्छा है ही । आजकलमें कराचीसे तार मिलना चाहिये ।

वहनोंमेंसे किसीको चोरोँका डर रहा ही करता हो तो मुझे बताना ।

रावा (गांधी)को कितनी चोट आजी ? क्या वह डर गयी थी ? उसे अलग पत्र लिखनेका समय अभी नहीं है ।

बापूके आशीर्वाद

१. आश्रममें रातको पहरा देनेमें वहनों भी शरीक होती थीं । अक बार मगनलालभाजीके घरमें चोर आये तब रावा जाग गयी थी ।

(नदीदुर्ग,
४-५-१९७)
बैसाख सुदी ३

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। गंगादेवीमे कहना कि डॉक्टर कहे वैसा जरूर करें और भूगका पानी पीना हो तो पियें। यहा बैठा हुआ मैं बहुत मार्गदर्शन तो कैसे कर सकता हूँ? ये नये डॉक्टर कौन हैं? और कबसे आने लगे हैं?

पहरेमें किन किन बहनोने नाम लिखवाये हैं?

मेरी तबीयत अच्छी होती जाती है। मुझे नियमपूर्वक लिखती ही रहना। तबीयत कैसी रहती है?

बापूके आशीर्वाद

वसुमतीबहनसे पत्र लिखनेको कहना।

(१९२७)

चि० मणि,

जो बीमार पड़ते हैं उन्हें क्या आश्रमने भाग जाना चाहिये? तुम कहा गयी हो यह भी मैं तो नहीं जानता। भागकर भी झट अच्छा हो जाना चाहिये। चैन न पड़े तो मेरे पास आनेकी छूट है, यह याद रखना। सहन होने लायक वैराग्य लिया हो तो पचेगा। न पचे बह वैराग्य कैसा? कुछ न कुछ समाचारोकी तो रोज ही बात देखता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

मेरे सफरकी तारीखें तो जाननी हो न?

(१९२७)
गुरुवार

चि० मणि,

तुम्हें बुखार आ गया और तुम्हें कमजोरी रहती है, यह मुझे अच्छा नहीं लगता। बूतेसे बाहर मेहनत नहीं करनी चाहिये। अब तो समय है या नहीं, यह मैं नहीं जानता। परन्तु कांग्रेसमें आनेके लिये तुम्हारा चुनाव हुआ होगा तो मुझे खुशी होगी ही।

वापूके आशीर्वाद

मेरे स्वास्थ्यके बारेमें अखबारोंमें कुछ आये तो समझ लेना कि अुसमें अतिशयोक्ति है। रक्तचापका अुतार-चढ़ाव तो अिस दौरेमें होता ही रहा है।

नंदीदुर्ग,
(१९२७)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला। कभी कभी अैसे समाचार देना।

हम तो न धरके हैं न बाहरके। रास्तेमें बैठे हैं। पूज्य वापूजीकी तवीयत मामूली रहती है। डॉक्टर आराम लेनेको कहते हैं। खुराकमें रोटी नहीं खाते। फल खाते हैं।

कृष्णदास^१ की तवीयत साधारण है। कमजोरी मालूम होती रहती है। बाकी सब मजेमें हैं। यहां राजगोपालाचार्यजी^२ तथा

१. 'Seven months with Mahatma Gandhi' के लेखक।
अेक समय वापूजीके मंत्रियोंमें थे।

२. चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य। तामिलनाडुके गांधीजीके मुख्य साथी। १९३७ में कांग्रेसने प्रांतोंमें मंत्रि-मंडल बनाये तब मद्रास प्रांतके मुख्यमंत्री। १९४६-४७ की अंतरिम केन्द्रीय सरकारमें अुद्योग और

गंगाधरराव^१ बेलगाववाले भी अब दो-चार दिन बाद जायेंगे । जि० कान्ति^२ और रमिक^३ मानें तो अपदेश देना । सूरजबहन क्या करती हैं ? कहा है ? अन्हें मेरा आशीर्वाद । आश्रममें जेकीबहन, डॉक्टर महेताकी लडकी, आओ हुओ है । अन्हें वहा अच्छा लगता है या नहीं ?

बहनोंकी प्रार्थनामें भाग लेती हो या नहीं ? पूज्य वल्लभभाओकी तबीयत अच्छी होगी । यहा नद्वबहनका पत्र आया था । अन्हें मेरा जय श्रीकृष्ण कहना ।

अिम सप्ताहमें बहनोने सूत्र बुल्गाह दिखाया है । असलिये मैं बधाओ देती हू । वहा प्रार्थना बहुत अच्छी चल रही है, यह जानकर आनन्द होता है ।

वाके आशीर्वाद

६७

नदीदुर्गे,
बैशाख सुदी १२
(१२-५-२७)

वि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला । तुम दोनो बहनोने नाम लिखा दिया, सो ठीक किया ।^१ मैं तो चाहता हू कि जितना शरीर सहन करे अतना पहरा तुम्हारे द्वारा भी हो (भले ही किसीके साथ रहकर) । डर जैसा भूत जिस सप्ताहमें दूसरा कोओ नहीं और वह तो महावरेसे और ओश्वरकी कृपासे ही जाता है । मुझे तो पूरा विश्वास है कि चोरोको रसद-मन्त्री । १९४७-४८ में पश्चिम बंगालके गवर्नर । १९४८ में पहले भारतीय गवर्नर जनरल । जुलाओ १९५० से अक्तूबर^२ १९५१ तक केन्द्रीय सरकारके गृहमन्त्री । आजकल मद्रासमें निवृत्तिमय जीवन बिता रहे हैं ।

१ श्री गंगाधरराव देशपांडे । कर्णाटकके नेता ।

२ गांधीजीके सबसे बड़े पुत्र हरिलाल गांधीके लडके ।

३ अुस अरसेमें चोरिया होनेसे आश्रममें पहरा देनेका निश्चय हुआ था । अुसमें नाम दर्ज करानेका अुल्लेख है ।

जब सचमुच विश्वास हो जायगा कि हमारा चौकीदार भी बुन्हें मारनेके लिये नहीं परन्तु मरनेके लिये ही वहां है और पहरा देनेवाले आश्रमवासी चौकीदार जैसे वैतनिक आदमी नहीं, परन्तु गृहस्थी हैं तब चोर हमारा पिंड छोड़ देंगे। तुममें से कोजी तो किसी दिन आत्मबल दिखायेगा और बुन लोगोंको प्रेमसे वगमें करेगा। परन्तु जिसमें शक नहीं कि यह सब सांपके विलमें हाथ डालने जैसा है। संभव है, तुममें से किसीको मार भी खानी पड़े, मरना भी पड़े। रोग देवताकी मार कौन नहीं खाता? स्त्री, पुरुष, बालक सभी बुसकी चपेटमें आ जाते हैं। राधा कितनी बार गिरी? रूखी^१ को क्या हुआ? जुहूके अस्पतालमें कितनी लड़कियां थीं? अगर यह सब हम सहन करते हैं तो चोर ब्रित्यादिकी मार भी हम हंसकर सहन करें जिसमें आश्चर्य क्या? सिपाहियोंसे रक्षा चाहनेवालोंको तो जरूर अचंभा होगा, मगर हमें नहीं होना चाहिये।

तुम्हारी पूनियां मैं कल कात रहा था तभी मिलीं। बुनमें से कुछ तुरंत कातीं। अेक भी तार नहीं टूटा। और आज मैंने सूतका कस निकालनेका अेक निजी अुपाय ढूंढा है। बुसमें तुम्हारी पूनियोंसे निकले हुअे तारकी बरावरी अेक भी तार नहीं कर सका। जिनसे अच्छी पूनियां मेरे हाथमें कभी नहीं आयीं। जिनके जैसी शायद अेक दो बार आयी हों तो भले ही आयी हों। परन्तु मैं नहीं मानता कि तुम्हारी पूनियोंसे अच्छी पूनियां कोजी बना सकता है। तुम्हारी पूनियां मिलनेके बाद दूसरी पूनियोंसे कातना मुश्किल हो सकता है। जैसी पूनियां हैं वैसे अक्षर कर लो, कातना भी वैसा ही करो, सभीमें पहला नम्बर रखो, यह मेरी बिच्छा और आशा है।

कराचीसे कल पत्र आ गया। नारणदास^२ की गैरहाजिरीसे काम अव्यवस्थित हो गया है। जिसलिये वे अेक महीना मांगते हैं।

१. श्री मगनलाल गांधीकी लड़की।

२. श्री नारणदास खुशालदास गांधी। वापूजीके भतीजे। अुस ससय आश्रमके व्यवस्थापक।

मैंने लिखा है कि यदि जुम्हे तुम्हारी हाजिरीकी जरूरत ही हो तो भले ही अेक महीना ले। शर्मके कारण बयबा तुम्हे बहा खीचनेके लिअे अर्थान् हम पर कौथी अपकार करनेके खानिर वे प्रयत्न करते हो तो बिलकुल न करनेको मैंने लिख दिया है। और तारसे जवाब मागा है। जहा खास जरूरत हो वही जाना है। जिस बीच सोची हुआ चीजोको पक्का करनी रहो।

बापूके आशीर्वाद

६८

नदीदुर्ग,

२१-५-'२७

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिला।

‘कदी नहीं हारना भावे साडी जान जावे’ यह गीत तो सुना है न ? जिसलिअे भले ही हमारी जान भी चली जाय, तो भी क्या ? कातने और अक्षरोके मामलेमें क्या हार मानी जा सकती है ? सावधान करनेको मैं अेक चौकीदार तो बैठा ही हूँ। बूद बूद करके सरोवर भरता है और ककर ककर करके पाल बधती है ! अुद्यमके आगे कुछ भी असभव नहीं ! निराश न होना, नियमपूर्वक कातनेसे गति जरूर बढेगी, और नियमपूर्वक किन्तु साफ और पूरे अक्षर लिखनेकी आदत डालनेसे अक्षर भी जरूर सुधरेगे। मेरे पास अैसे बहुतसे अुदाहरण हैं कि जिनके अक्षर बहुत खराब थे वे अम्पाससे अच्छे हो गये। कोठारके कामका भार लेकर तुमने बहुत अच्छा किया। अब अुसे हरगिज न छोडना और अच्छी तरह पूरा करना। हिमाव लिखना भले ही न पडे, परन्तु हितावके सिद्धान्त जान लेना। और कोठारके सिलसिलेमें दो घटे कातनेका समय न मिले तो भले ही कम हो जाय, परन्तु जितना समय मिले अुतने समयमें स्वस्थ चित्तसे कातना। अधीरतासे लम्बे समय तक कातनेकी

अपेक्षा अेकाग्र चित्तसे धीरजके साथ थोड़े समय कातनेसे कस बढ़ेगा और गति बढ़ेगी और सब तरहसे अच्छा सूत निकलेगा ।

गंगादेवीके वारेमें मुझे खबर देती ही रहता ।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,
सत्याग्रह आश्रम,
सावरमती

६९

१९२७
मौनवार

चि० मणि,

तुम्हारा कार्ड मिल गया था । जो पत्र तुम लिखनेवाली थीं वह नहीं मिला । मातर^१ में किस काममें लग गयी हो और कौन कौन, यह लिखना । कुछ भी सेवा करते हुअे शान्ति न खोना ।

काका (विठ्ठलभाजी) को मैंने लिखा था कि जब आप अपनी कुर्सी पर बैठकर तकली चलायेंगे तब मणिवहन आयेगी । उसके उत्तरमें वे लिखते हैं कि मणिवहन तो पागल है । मैंने लिखा है कि वे पागल हैं, इसीलिये पागलके साथ रहती हैं ।

यशोदा^२ के लड़केका नाम क्या रखा है ?

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,
मातर

१. मातरमें बाढ़-संकट-निवारणके कामके लिये मैं गयी थी ।

२. मेरे भाजी डाह्याभाजीकी पत्नी ।

मौनवार
(१९२७)

चि० मणि,

तुम्हारा पत्र मिल गया। गावोका अनुभव लिखकर रखना चाहिये जिससे भविष्यमें काम आये। वहीं भी अधीरता न रखी जाय। निराश न होना। अशान्त न होना। भुझे तो तुमसे बहुतसे प्रश्न पूछने होंगे। परन्तु वे अभी नहीं। मिलेगे तब या काम हो जाने पर। भुझे पत्र नियमपूर्वक लिखती रहना। तबीयत हरगिज न बिगड़ने देना।

बाका (विट्टलभात्री) से मिली होगी। बाका खूब काम करनेकी बुम्मीदसे आये है। वे सफल हो।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,
मातर

१ बाका (माननीय विट्टलभात्री)। १९२७ के चौमासेमें गुजरातमें अतिवृष्टि हुई और बहुत नुकसान हुआ। उस समय गुजरात प्रान्तीय समितिकी तरफसे पू० बापूने बाढ़-सकट-निवारणकी व्यापक योजना बनायी थी। विट्टलभात्री बड़ी व्यवस्थापिका सभाके अध्यक्ष थे। गुजरातके मतदाता-मंडलकी तरफसे वे व्यवस्थापिका सभामें गये थे। जिसलिजे गुजरातकी आफतके समय यह सोचकर कि अन्हे गुजरातकी मदद करनी चाहिये वे नडियादको मुख्य केन्द्र बनाकर बहा रहे थे और गुजरातमें सब जगह दौरा किया था। उनके आग्रहके कारण वाजिसराँय भी गुजरात आये थे। पू० बापूजी उस समय मैसूरमें नदीदुर्गमें आरामके लिजे गये हुये थे। बाढ़-सकट-निवारणके कामके लिजे वे गुजरातमें आना चाहते थे। परन्तु पू० बापूने लिखा था यदि और किसी कारणसे नहीं, तो जिस बातकी जाच करनेके लिजे ही कि आपकी जितने वर्षों तक दी हुई तालीमको हम हजम कर सके हैं या नहीं, आप यहा न आजिये।

(सावरमती,
१५-४-'२८)
रविवार

चि० मणि,

वहां जानेके बाद पत्र तक नहीं, यह ठीक नहीं। वहांका कार्यक्रम बताना। अनुभव लिखना।

साथका पत्र पढ़कर लंका जानेको जी करे तो लिखना।^१
(राष्ट्रीय) सप्ताह^२ कैसे मनाया?

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,
स्वराज्य आश्रम,
वारडोली,
सूरत होकर

(सत्याग्रह आश्रम,
सावरमती, २१-५-'२८)
मौनवार

चि० मणि,

चि० कांति (पारेख) के नाम लिखे गये पत्रमें शारदावहन^१ के सम्बन्धमें तुमने जो टिप्पणी लिखी है वह मैंने पढ़ी। जरा खेद हुआ। मैं तो नित्य स्मरण करता हूँ। जो कोभी वहांसे आता है उसे

१. कोलम्बोके कॉलेजमें खादीका प्रचार करनेके लिये।

२. ६ अप्रैल १९१९ का दिन रौलट कानूनके विरोधमें सत्याग्रह करनेके लिये नियत हुआ था। उस दिनसे देशमें दमनका दौरा चला और १३ अप्रैलको जलियांवाला बागमें हत्याकांड हुआ। उस अके सप्ताहमें हुआ ऐतिहासिक घटनाओंकी यादमें वह सप्ताह राष्ट्रीय सप्ताहके रूपमें मनाया जाता है।

३. श्री शारदावहन कोटक, अके आश्रमवासी।

पूछता हूँ। मीराबहन^१ ने तो बहुत कुछ कहा है। वह सब क्या लिखा जा सकता है? परन्तु मैं आशा छोड़ नहीं बैठा हूँ। यह मानकर बैठा हूँ कि सब ठिकाने आ जायेंगे। लिखनेका अुत्साह आये तब लिखना। वहाँवे (बारडोलीके लगान-सत्याग्रहके समयके) तुम्हारे काममें बल्लभभात्रीको सतोष है, यह मैंने बम्बयीमें अुनके मुहसे समझा। अितना सतोष हुआ। मेरे लिये अितना काफी नहीं। मुझे तो गाम्भीर्य, शान्ति, सतोष, विवेक, मर्यादा, निश्चय, सूक्ष्म सत्य-श्रयणता, तीव्रता, अध्ययन, ध्यान अित्यादि चाहिये। नहीं तो कुमारी और सेविकाको गोमा देनेवाला तुम्हारा जीवन नहीं बनेगा।

बापूके आशीर्वाद

वि० भणिबहन पटेल,
स्वराज्य आश्रम,
बारडोली,
सूरत होकर

७३

(सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती,
२८-५-२८)

वि० भणि,

मैंने तुझे मूर्ख माना है सो बिना बिचारे नहीं, यह तू सिद्ध कर रही है। मीराबहन जो कहे वह मेरे लिये कभी वेदवाक्य नहीं हो गया। वह बहन निर्मल है। . . . तू यहा होती तो तुझसे ही कहता।

१ मिस स्लेड। अुनके पिता अंग्लैण्डकी जलसेनाके बड़े अधिकारी थे। पू० बापूजीकी पुस्तके पढ़कर अुनसे आकर्षित होकर वे भारत आयी और अपने जीवनमें अुन्होंने भारी परिवर्तन कर डाला। बापूजीने अुनका नाम मीराबहन रखा। आजकल हूपीकेराकी तरफ गोसेवाका काम कर रही है।

तू नहीं थी जिसलिजे लक्ष्मीदासभाभी^१ से कहा। परन्तु किसी दिन तो मूर्ख न रहकर तू सयानी बनेगी, यह आशा रखता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,
स्वराज्य आश्रम,
बारडोली,
सुरत होकर

७४

स्वराज्य आश्रम,
बारडोली,
शनिवार
(४-८-'२८)

चि० मणि,

स्वामी (आनंद) तो यहां नहीं हैं। परन्तु तुम्हारा अनुके नाम लिखा हुआ पत्र पड़ा। आनेका हठ करनेकी जरूरत नहीं। सिपाहीका धर्म अपना शरीर ठीक रखना और सरदार कहे सो आनंदित होकर मानना है। तवीयत तो जल्दी ही अच्छी हो जायगी, यदि अच्छी बनानेमें मन लगाया जाय।

बापू और महादेव तथा स्वामी पूना^२ में हैं। आज वहांसे चले होंगे। पूनासे तार आना तो चाहिये था, पर नहीं आया। समझौता

१. श्री लक्ष्मीदास आसर। अक आश्रमवासी। मर्जी १९४९ में गांधी-स्मारक-निधिके मंत्री नियुक्त हुअे। दिसम्बर १९५२ में त्यागपत्र दिया। परन्तु फरवरी १९५३ में नये मंत्रीने काम संभाला तब तक अुस पद पर बने रहे। बादमें खादी ग्रामोद्योग बोर्डमें। १९५७ में निवृत्त हुअे।

२. सरकारके साथ समझौतेकी बातचीतके लिजे बम्बयीकी अुस समयकी कौंसिलके वित्तमंत्री सर सी० बी० महेताके बुलावे पर पूना गये थे।

होगा या नहीं, यह अभी नहीं कहा जा सकता। मुझे लगा करता है कि अब सरकारमें लड़नेकी शक्ति नहीं है। लोकमत युसके बहुत विरुद्ध है और युससे बहुत भूले हुआ है। आज सरभोग हो आया। आजकल बरसात नहीं है। आज बहुतमे लोग तो सूख जा रहे हैं।

बापूके आशीर्वाद

मणिवहन पटेल,
ठि० वल्लभभाभी बैरिस्टर,
खमासा चौकी,
अहमदाबाद

७५

आगरा,
१८-९-'२९

चि० मणि,

तेरा पत्र मिल गया। यशोदा आ गयी, यह बड़ा अच्छा हुआ। युसकी तबीयतके समाचार खेदजनक है। परन्तु अब वहा है असलिये ठिकाने पर है और संभव है कि देखभालसे अच्छी हो जायगी।

वल्लभभाभी वहा पहुंच गये हो तो कहना कि लखनभूमें ता० २७ को युनसे मिलनेकी आशा रखता हू।

भाभी अिन्दुलालकी पत्नीके बारेमें जाना। वह बहन दु खसे छूट गयी, ऐसा मैं मानता हू। . . . भाभीके बारेमें जरा आश्चर्य होता है। परन्तु आजकी हवामें तो यह चीज भरी ही है, तब आश्चर्य क्या? मेरी तबीयत अच्छी रहती है। अभी दूध, दही, फल पर हू।

बापूके आशीर्वाद

श्री० मणिवहन,
ठि० श्री वल्लभभाभी पटेल, बैरिस्टर,
अहमदाबाद,
बी० बी० सी० आभी० आर०

१ श्री अिन्दुलालकी पत्नीके देहान्तका बुल्लेख है।

(सत्याग्रह आश्रम,

सावरमती)

९-३-३०

चि० मणि,

तेरे पत्रकी मैं तो रोज वाट देखता था। तेरी याद किये बिना एक दिन भी नहीं गया। परन्तु तुझे मैं लापरवाह लगूं, जिसे समझता हूं। जिसके लिये मेरी दयाजनक स्थिति जिम्मेदार है। मुझे किसीके सामने देखने तकका समय नहीं मिलता। तू कहां है, क्या हो रहा है अित्यादि जानकर संतोष कर लिया करता था।

बापू तो तेरे बारेमें कुछ कह ही नहीं गये।^१ अन्हें कहां पता था? तुझे वहीं रहना है जहां तू शांत और सुखी हो सके। जेलमें तो समय आने पर जरूर जा सकेगी। जिस बारेमें महादेवने लिखा है। आश्रममें तुझे अच्छा लगे जिसे समझता हूं। परन्तु मेरी राय है कि यह ठीक नहीं। फिर भी जिसमें निग्रह काम नहीं देता। जिसलिजे शान्त रहता हूं। मेरी यही अच्छा है कि तू जहां रहे वहां सुखी रहे।

१. पू० बापूजीके दांडीकूचके मार्गके सिलसिलेमें व्यवस्था वगैराके लिजे गये थे। ७ मार्चको रासमें सभामें यह हुक्म मिला कि अमुक प्रकारका भाषण न दें। पू० बापूने कहा कि वे जिस आज्ञाका मुल्लंघन करेंगे। जिसलिजे तुरंत ही गिरफ्तारी हुयी। फिर मामला चलाकर तीन मासकी सादी कैद और पांच सौ रुपये जुर्माना अथवा तीन सप्ताहकी अधिक कैदकी सजा दी गयी। जिसलिजे कामके या किसी व्यक्तिके बारेमें कोअी सूचना देने या समझानेका अन्हें समय ही नहीं मिला था। अुत्त समय मैं बीमार होनेके कारण अिलाजके लिजे बम्बयी गयी हुयी थी।

मैं मंगलवार तक गिरफ्तार होनेकी आशा रखता हूँ।
तू बहादुर बनना। अपना शरीर सुधारना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन,
ठि० डाह्यामाजी वल्लभमाजी पटेल,
श्रीराम निवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बयी-४

७७

(१९३०)
गुरुवार

चि० मणि,

मेरे दो पत्र मिले हैं। चलती रेलमें लिख रहा हूँ। तुझसे हो सो दृढ़तासे कर गुजरना। तू अपने दूसरे पत्रमें लिखती है वह प्रमाण उपस्थित हो तो तू विलापारला अथवा बर्षा पहुँच जाना। मेरे पास आ जायगी तो अधिक समझाऊँगा और तुझे शान्ति भी होगी। मंगलवार या बुधवारको आना। जिस बीच तू वहाके अधिक समाचार भी दे सकेगी। थोड़ी बहनोंसे भी जो हो सो करना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल
नडियाद

(१९३०)

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। कल अन्तमें तेरे विषयमें पत्र लिखना रह ही गया। अब तो तू जायगी ही।^१ जिसके साथ पत्र भेज तो रहा हूं, यद्यपि उसकी कोबी जरूरत नहीं है।

देखना, मेरी, बापूकी और अपनी लाज रखना। अपनेको शोभित करना। गीता और गुजराती पढ़ने और समझनेका प्रयत्न करना। मुझे नियमपूर्वक पत्र लिखती रहना।

खेड़ामें नमकके गड्ढोंमें जहर डालनेकी बात सुनी थी। उसकी जांच करना और मुझे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,
नड़ियाद

७९

१९-५-३०

चि० मणि,

भीश्वर तेरी रक्षा करेगा। रोज तुझे याद करता हूं। अब तू बुदास नहीं रहती होगी।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,
नड़ियाद

१. मैं सूरत जिलेमें शराबकी दुकानों पर पिकेटिंगका काम करती थी। उस काममें लगी थी तब खेड़ा जिला समितिने खेड़ा जिलेमें जिस कामके लिये मेरी मांग की थी। जिसलिये वहां जानेके चारेमें अल्लेख है।

य० म०^१

१४-७-३०

चि० मणि (पटेल),

बाह^१ सच्चे बापू आ गये तो नक्ली बापूको भूल गयी क्या ?
और अब तो व्याख्यान देनेवाली हो गयी, फिर क्या पूछना ? तेरी
तबीयत नारीरिक या मानसिक कैसी है ? मेरे पत्र तो मिल गये न ?

डाह्याभायी कैसे हैं ? यशोदाका अब क्या हाल है ? बिल्कुल
अच्छी हो गयी क्या ?

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिव्रह्म पटेल,

डॉ० कानूंगाका बगला,

अलिमत्रिज,

अहमदाबाद

१ यखडा मंदिर। यखडा जेलसे लिखे गये पत्र पू० बापूजी
आश्रमके व्यवस्थापक श्री नारणदास गांधीके नाम भेजते थे। और
वे सबको पत्र पहुंचाते थे।

२ पू० बापू तीन मास और तीन सप्ताहकी पूरी सजा भुगतकर
ता० २६ जूनको छूटे थे।

चि० मणि (पटेल),

तेरी प्रसादी कभी सप्ताहमें मिली। तू काममें है, अच्छा कर रही है और तुझे वांछित कार्य मिल गया, यह तो जानता हूं। फिर भी तेरे पत्र पाना चाहता हूं।

खूब जिओ, खूब सेवा करो।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,
श्रीराम मैन्शन,
सैण्डहर्स्ट रोड,
वम्बयी

चि० मणि (पटेल),

तेरा पत्र मिला। बापू मेरे साथ चार पांच दिन रहकर गये।^१ तेरे समाचार मिले। ओश्वर तेरा भला ही करेगा। मुझे लिखती रहना। डाह्याभायीसे लिखनेको कहना।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,
श्रीराम निवास,
पारेख स्ट्रीट,
सैण्डहर्स्ट रोड,
वम्बयी

१. उस समय पू० बापूजी तथा पू० बापू दोनों यरवडा जेलमें थे। परन्तु दोनोंको अलग अलग रखा जाता था। सरकारके साथ समझौता करानेके लिये सर तेजवहादुर सप्रू तथा श्री जयकरने बातचीत शुरू की थी। उस सिलसिलेमें परामर्श करनेके लिये कांग्रेस कार्यसमितिके कुछ सदस्योंको यरवडा जेलमें अकेल रखा गया था।

य० म०

२२-८-'३०

वि० मणि (पटेल),

अपना अनुभव तूने ठीक ठीक बताया है। तू बापूसे मिल गयी,
यह भी जाना। बापू तों नहीं मिले। मुझे बराबर लिखती रहना।
बम्बयीमें हो तब बेरीनबहन^१ और लीलावती^२ से मिलना।

मुझे पत्र लिखनी रहना।

बापूके आशीर्वाद

वि० भणिवहन पटेल,

श्रीराम निवास,

पारेख स्ट्रीट,

सैण्ट्रल रोड,

बम्बयी

१ स्व० दादामाजी नवरोजीकी पौत्री।

२ श्री कन्हैयालाल मुशीकी पत्नी। आजकल राज्यसभाकी सदस्य।

य० मं०,
७-९-'३०

चि० मणि (पटेल),^१

तेरा पत्र मिला। बापू तथा जयरामदास^२ दो दिन और साथ रहकर चले गये।^३ अतः तनेमें तेरा पत्र मिला। जिसलिसे बापूने भी पढ़ा। बापूके नामका मैंने पढ़ा। मां सम्बंधी वर्णन हृदयद्रावक है। अधिकतर प्राचीन माताओं ऐसी ही थीं। जिसलिसे तूने जो वर्णन किया है, उस पर आश्चर्य नहीं होता। फिर भी यह प्रेम, उसमें मोह होने पर भी, अतना बुज्ज्वल है कि नित नया जैसा ही लगता है। पत्र लिखनेके नियमका भंग न करना। यात्रामें (जेलमें) पहुंच जाय तो दूसरी बात है।

बापूके आशीर्वाद

(आर्थर रोड जेलमें)

१. बापूजीको आश्रमवासियोंको पत्र लिखनेकी छूट थी। जिसलिसे ये पत्र बापूजी आश्रममें भेजते थे और वहांसे जिस जिसके पत्र होते उन्हें भेजनेकी व्यवस्था होती थी।

२. श्री जयरामदास दौलतराम। सिंधके पू० बापूजीके मुख्य साथी। १९३० में कराचीमें एक सभा पर पुलिसने गोली चलायी थी, उसमें एक गोली अिनके पेटसे पार हो गयी थी। १९३१ से १९३४ तक कांग्रेसके मंत्री। १९४६ में अन्तरिम सरकारके समय बिहारके गवर्नर। १९४७ से १९५० तक केन्द्रीय सरकारमें खेती और खुराक विभागके मंत्री। १९५० से १९५६ तक आसामके गवर्नर। आजकल 'दि कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी' के मुख्य संपादक।

३. समझौतेकी जो बातचीत चल रही थी उसके सिलसिलेमें फिर अिन्हें अिकट्टा किया गया था।

यरवडा मंदिर,
१४-९-३०

चि० मणि (पटेल),

तू आशा रखती है, जिसलिअे यह लिख रहा हू। तुझे कैसे मिलेगा, यह तो दैव ही जाने। तेरा पत्र बापूको पढ़नेके लिअे जाने दिया गया था। तुझे लिखनेकी छूट मिले तो लिखना। अब तो जबरदस्तीकी शान्ति है। अुसका पूरा अुपयोग करना। अिसे भी मैं सेवा मानता हू। स्वास्थ्यको समालना। कार्यक्रम ठीक बनाना। खाने-पीनेको क्या मिलता है, अित्यादि बातें लिखना।

बापूके आशीर्वाद

८६

घ० मं०
२७-९-३०

चि० मणि (पटेल),

तूने मुझे हर हफ्ते पत्र लिखनेको तो कहा है परन्तु वह मिलेगा क्या? तू लिख सकेगी या न ही, अिस बारेमें भी शका है। देखना दारीरको समालना। प्रत्येक क्षणका सदुपयोग करना और हिमाब रखना।

बापूके आशीर्वाद

(आर्यर रोड जेलमें)

८७

घ० मं०
१४-१२-३०

चि० मणि,

अब तू बाहर निबल गयी तो तेरे ब्यौरेवार पत्रकी आशा रखता हू। अपने अनुभव लिखना। तेरा स्वास्थ्य बंसा है?

बापूके आशीर्वाद

(धम्बभी)

१ आर्यर रोड जेलमें।

य० मं०

२१-१२-'३०

चि० मणि (पटेल),

तू लिखे या न लिखे, मैं तो लिखता रहूँ न ? अपना वचन भूल गयी न ? मुझे तू पत्र लिखती ही रहनेवाली थी । जागें वहींसे सवेरा, भूलें वहींसे फिर गिनें । अब वचनका मूल्य समझ । अपने अनुभव लिखना । तेरा स्वास्थ्य कैसा रहा ? क्या खाती थी ?

बापूके आशीर्वाद

(बम्बयी)

य० मं०

२७-१२-'३०

चि० मणि (पटेल),

तेरा पत्र अन्तमें मिला जरूर । कहा जा सकता है कि अंक हृद तक बदला मिल गया ।^१ अपना शरीर तो अच्छा कर ही डालना । तेरे पास सेवा^२ अितनी पड़ी थी कि पढ़नेकी जरूरत नहीं थी । तूने

१. सावरमती जेलमें खुराकके सम्बन्धमें और दूसरे कैदियोंके सम्बन्धमें लिखनेकी छूट नहीं मिलती थी । जिसलिसे जेलसे छूटनेके बाद मैंने सावरमती जेलके सब हालचालका व्यौरेवार पत्र पू० बापूजीको लिखा था ।

२. सावरमती जेलमें कुछ वयोवृद्ध बहनें आतीं, कुछ बच्चोंवाली और कुछ छोटी लड़कियां जैसी भी आतीं । उनमें गांवसे आनेवाली बहनोंकी संख्या बड़ी थी । जिन सबकी छोटी बड़ी सुविधाओंके बारेमें मुझसे हो सकती वह सेवा करनेका प्रयत्न मैं करती थी ।

लडाजी^१ तो अच्छी लड़ी मालूम होती है। और वह अुचित थी। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। अेक ही दिन दस्त बन्द होकर सस्त मरोडा आया था। अिसलिअे खाया हुआ निकाल दिया और दूसरे दिन केवल सागका पानी ही लिया। अिससे कब्ज मिट गया। अिस निमित्तसे दूध जो छूटा तो छूटा ही है। यहा मिलनेवाली ज्वार या बाजरेकी अेक रोटी दिनमें लेता हू। और साग तथा थोडे बादाम। मेरी चिन्ताका जरा भी कारण नहीं।

बापूके आशीर्वाद

(साबरमती जेलमें)

९०

य० म०

३-१-'३१

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। बापूसे मिलना हो तो कहना कि मुझे अुनसे अीर्ष्या होती है, क्योकि वे तो बाहर भी हैं और आराम-घर^२ में भी। रोज डाँक्टरके यहाँ जानेका आनन्द^३। अैसा आनन्द तो केवल बाहर रहकर भी कभी नहीं पाया। परन्तु अिन सब बातोका बदला अितना तो मिलना ही चाहिये कि हमेशाके लिये दात और नाककी तकलीफ मिट जाय।

१ साबरमती जेलमें चूडिया पहनने देनेके बारेमें हमें लडाजी छेडती पडी थी।

२ जेलमें।

३ अुस समय पू० बापू आर्यर रोड जेलमें थे और दातके अिलाजके लिये अुन्हे डा० डी० अेम० देमाजीके दवाखानेमें, फोर्टमें खादी-ग्राम-अुद्योग भवन — अुस समयके अनुसार वाजिट वे लेडलाकी मजिल — पर रोज अेक महीने तक पुलिसके पहरेमें ले जाया गया था। वहा बम्बजीके कुछ कार्यकर्ता अुनसे मिल लेते और लडाजीके बारेमें हिदायतें ले जाते थे। मैं और डाह्याभाजी भी रोज मिलने जाते थे।

बिस वार भी मेरे ही पड़ोसी होंगे न? राजेन्द्रबाबू' हों तो कहना कि पत्र लिखें। उनसे पूछना कि मेरा उत्तर मिल गया था या नहीं।

वैसे तू सब खबरें देनेवाली है, बिसलिअे बाहर है तब तक देती रहना।

बाह्याभावीने लिखनेकी सौगन्ध खा ली दीखती है।

बापूके आशीर्वाद

(बम्बयी)

९१

य० मं०

१०-१-३१

चि० मणि,

तूने लिखा है वैसा ही मैंने हरिलाल'के बारेमें सोचा था। मेरा तो खयाल है कि जो कुछ हुआ उसका हाल प्रकाशित होता तो उसमें कोअी नुकसान नहीं था। हरिलाल जाग्रत होता। परन्तु जाग्रत

१. डॉ० राजेन्द्रप्रसाद। बिहारके मुख्य नेता। १९१७ में हुअे चम्पारनके नील सत्याग्रहके समयसे बापूजीके साथ हुअे। १९३४, १९३९ और १९४७ में कांग्रेसके अध्यक्ष। १९४७ में संविधान-सभाके अध्यक्ष। जिस समय भारतके राष्ट्रपति।

२. पू० बापूजीके सबसे बड़े पुत्र स्व० हरिलाल गांधीने पू० बापू आर्यर रोड जेलमें थे तब उनसे मुलाकात मांगी थी, परन्तु हरिलाल पिये हुअे थे और सब-कुछ सरकारका रचा हुआ प्रतीत हुआ, बिसलिअे पू० बापूने मुलाकात करनेसे अिनकार कर दिया था। फिर भी उसी दिनके 'बीविनिंग न्यूज' में उनको पू० बापूके साथ हुअी मुलाकातका वर्णन छपा और उसमें पू० बापूके मुंहमें लड़ाजीके प्रतिकूल कुछ शब्द रखे गये। बिसका पता चलने पर पू० बापूने आपत्ति की थी और दूसरे दिन अखबारमें सुधार आ गया था।

होता या न होता, हमारा मार्ग सीधा है। सब स्वजन हैं। अथवा सब परजन है।

तेरे अक्षर बाकी सुपर रहे हैं। अब कहा बमनेका त्रिरादी है?

बापूके आशीर्वाद

(बम्बजी)

९२

य० म०

१५-१-३१

वि० मणि,

सरदार-सम्बन्धी तेरा पत्र मिला। हरिलालको तो हम जानते ही हैं। बापूको अब दातोंके लिजे कब तक ठहरना पड़ेगा? मच्छरोंका कष्ट होने पर भी दातोंका निवटारा हो जाय तो यह बाधनीय ही है। मैं मानता हू कि बुनके डॉक्टरके पास जानेकी जरूरत अब तक है तब तक तो तू वहीं रहेगी। हम दोनों मजेमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

सुमित्रा^१ कैसी है? यशोदा अब चलती फिरती है? विठ्ठलभाजी क्या वहीं रहेंगे?

(बम्बजी)

१ बाका कालेलकर उस समय पू० बापूजीके साथ यरवडा जेलमें थे।

२ स्व० डॉक्टर कानूगाकी पुत्री।

य० मं०
२२-१-'३१

चि० मणि,

तेरा सुन्दर लम्बा पत्र मिल गया। उसके जवाबमें मुझे थोड़े ही लम्बा लिखना है? मेरी यात्रा तो अहातेके अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक सीमित है। न कोअी गार्ड है और न कोअी दूसरा, जिसके साथ विवाद हो। मेरी ट्रेनकी छत आकाश है। उसके अगणित तारोंका वर्णन करना चाहूं तो करना नहीं आता। और जो तारे मैं देखता हूं वही तू देखती है। बिसलिअे मेरे पास लिखनेको कुछ नहीं है। मैं भी समझता हूं कि तू और थोड़े दिनकी मेहमान है। हम आराम-घरमें ही शोभा देते हैं।

बापूके आशीर्वाद

(अहमदाबाद)

९४

मौनवार
(१६-२-'३१)

चि० मणि,

तेरे पत्र तो मिल गये। परन्तु मुझे लिखनेका समय कहां मिलता है? बिसलिअे मेरे पत्र आयें या न आयें तू तो लिखती ही रहना। आज हम दिल्ली जा रहे हैं। डॉ० अन्सारी, दरियागंजका पता है। सरदार आज बम्बयी जा रहे हैं।

बापूके आशीर्वाद

मणिवहन,

ठि० डाह्याभायी वल्लभभायी पटेल,

राम निवास,

माधव आश्रमके पास,

बम्बयी

१. क्योंकि मैं फिर गिरफ्तार होनेवाली थी।

चि० मणि,

तेरे पत्र मिलते रहते हैं। मेरे जवाब न मिलनेसे अब न जाना। मुझे आजकल पत्र लिखनेका समय मिलता ही नहीं। आज थोड़ासा समय चलती हुई परिपद में मिल गया, उसका उपयोग कर रहा हूँ।

यह पढ़कर प्रसन्नता हुई कि हाह्यामाश्रीका स्वास्थ्य अच्छा हो गया। उन्हें और यशोदाको मेरा आशीर्वाद कहना।

लक्ष्मीदास (आसर) से और मजुक्शा से पत्र लिखनेको कहना। मैं मानता हूँ कि कमसे कम एक डाक तो मुझे मिलेगी।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
श्रीराम मैदान,
सैण्डहर्स्ट रोड,
बम्बयी

चि० मणि,

आज मुझे साथी कैदियोंको लिखनेकी छूट मिली है, इसलिये लिख रहा हूँ। मुझे यदि लिखनेकी छूट है तो जिसे मैं लिखूँ उसे उत्तर देनेकी छूट मिलनी चाहिये। मुझे तुरन्त उत्तर लिखना। लीलावती,

१ लदनकी गोलमेज परिपदमें।

२ श्री किशोरलाल मशहवालाकी भतीजी डॉ० मजुबहन। बारडोली स्वराज्य आश्रममें १९२९ से डॉक्टरके रूपमें उस प्रदेशके गरीबोंकी सेवा-शुश्रूषा कर रही हैं।

३ स्व० लीलावतीवहन देसाजी। डॉ० हरिभाजी देसाजीकी पत्नी — नन्दूबहनकी भाभी। १९५१ से १९५६ तक बम्बयीकी राज्य-सभाकी सदस्य।

नन्दूबहन, मृदु आदि दूसरी बहनोंको आज नहीं लिखता। उनके समाचार भी देना। और कौन हैं?

महादेव यहां आ गये हैं। हम तीनों मजेमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

(अपने हाथसे)

श्रीमती मणिवहन पटेल,

प्रिजनर,

प्रिजन, वेलगांव

९७

य० मं०

२२-४-'३२

चि० मणि,

जैसे लोग मौसममें बरसातकी राह देखते रहते हैं, वैसे ही हम लोग वहांके पत्रोंकी^१ राह देख रहे थे। उनमें से अक-दो मिले। $\times \times \times^2$ छूटनेके बाद यहां होकर ही जानेका विचार रखना। सोमवार हो तो मंगलवार तक ठहरकर दोपहरको बारहसे या साढ़े ग्यारहसे अक बजे तक मिलनेका वक्त सबसे अच्छा होता है। उस समय आयेगी तो हम दो^३ तो मिल ही सकेंगे। $\times \times \times$ हम तीनोंकी^४ तबीयत अच्छी है। $\times \times \times$

१. उस समय मैं वेलगांव जेलमें सी क्लासमें थी। हमें तीन महीनेमें अक पत्र लिखने और अक मुलाकात करनेकी छूट थी। मुलाकात न करें तो उसके बजाय पत्र लिख सकते थे। ता० १५-५-'३२ को मैं जेलसे छूटनेवाली थी।

२. तीन चौकड़ीकी निशानी जेल-अधिकारियों द्वारा पत्रके काटे हुए भाग बतानेके लिये लगायी गयी है।

३. पू० बापूजी तथा पू० बापू।

४. तीसरे महादेवभाभी।

मैं देखता हूँ कि तूने अपने अक्षर सुधारनेका प्रयत्न अच्छी तरह किया है। यह बताता है कि प्रयत्नसे अक्षर अच्छे हो सकेंगे। और यह नियम सब बातों पर लागू होता है।

गौता कठस्थ करनेका अर्थ यह है कि अर्थके साथ आनी चाहिये और व्युच्चारण शुद्ध होना चाहिये। शिक्षिका कौन है? शायद यह जवाब तो तू मिलते समय ही देगी, अथवा आखिरी खत लिखने दें तो पत्र भी लिख डालना। तन्दुरुस्ती अच्छी है या नहीं, यह तो हम लोग देखकर प्रमाणपत्र दें तब सही। x x x

बाबा और यशोदा अकेले बार-बार यहां आ गये। बाबा तो कुर्मी पर चढ़ बैठा था। और जितना ज्यादा मौजमें आ गया था कि अपने नये जूते भूल गया। उसके सौभाग्यसे या डाह्याभाजीके सौभाग्यसे हममें से किसीने देख लिये और तुरन्त भेज दिये। यशोदाकी तबीयत बहुत अच्छी नहीं कह सकते। उसने कुछ वर्षोंमें अच्छा स्वास्थ्य रखा ही कहा है? डाह्याभाजी हर सप्ताह आते हैं और हम दोनों उनसे मिल सकते हैं।

जीवनरामका काम अभी चलता रहता है। देवदास गोरखपुर (जेलमें) है। उसके पत्र अभी आया है। वह अकेला है, मगर आराममें है। पठन अच्छी तरह कर रहा है। लक्ष्मीको अब बेचारी हरगिज नहीं कहा जा सकता। पापा (राजाजीकी बड़ी लड़की) की देखभाल जरूर करती है। परन्तु पापा अब अच्छी हो गयी कही जा सकती है। राजाजी मजेमें हैं। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहना है। उनके साथी भी

१. आचार्य जीवतराम कृपालानी। वे बिहारके मुजफ्फरपुर कॉलेजमें अध्यापक थे। और चम्पारनके मामलेमें बापूजी बिहार गये तब कॉलेज छोड़कर पू० बापूजीके साथ हो गये थे। गुजरात विद्यापीठके दूसरे आचार्य। बारह साल तक कांग्रेस महासमितिके मंत्री रहे। उसके बाद अध्यक्ष हुए। उसके बाद कांग्रेससे अलग हो गये। आजकल प्रजा सोशलिस्ट दलके अध्यक्ष और लोकसभाके सदस्य हैं। यह पत्र लिखा गया उस समय वे पकड़े नहीं गये थे और बाहर काम कर रहे थे।

बुनके काफी साथ हैं। अिन्दु^१ मुझसे नहीं मिली। अब कहाँ है, यह पता नहीं। बहुत करके पूनामें ही है। कमला (नेहरू) प्रयागमें है। कमलापति (जवाहरलालजी) की प्लुरसी तो कुछ शान्त हुई मालूम होती है। परन्तु थोड़ा बुखार रहता है।

चरखेके बारेमें अहमदाबाद लिखूंगा। परन्तु बढ़िया चरखा चाहिये तो यहांसे भी दे सकूंगा। × × ×

× × × वाको तो पहला पत्र मैंने आज ही लिखा है। परन्तु उसके पत्र मिलते रहते हैं। वह और दूसरी वहनें (यरवडा जेलमें) मजमें हैं। मीठूवहन अपनी कक्षा चलाती है।

चश्मा टूट गया हो तो वहां भी बदलवाया जा सकता है। परन्तु अब निकलनेका समय नजदीक आ गया है। जिसलिजे जिस सुझावमें बहुत सार नहीं है।

तेरा पत्र आज ही यहां आया और आज ही मिला है। और यह उत्तर भी आज ही लिखा जा रहा है। कल यहांसे निकलेगा, ऐसी आशा रखता हूं। वहां कब मिलेगा यह हम सबके भाग्य पर आधार रखता है।^२

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
प्रिजनर,
प्रिजन, बेलगांव

१. पंडित जवाहरलाल नेहरूकी लड़की जिन्दिरा गांधी उस समय पूनामें पढ़ती थीं।

२. यह पत्र पू० वापूजीने पू० वापूके हाथसे लिखवाया था।

९८
(तार)

मणिवहन पटेल
मेट्रल जेल,
बेलगाव

पूना,
२-५-३२

यशोदा बल गुजर गयी। यह मानना चाहिये कि वह जीवित
मृत्युमे छूट गयी।'

गांधी

९९

यरवडा मंदिर,
२-७-३२

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। मेरा सन्देश मिला होगा। सूने पूनियां भेजनेका विचार किया जिससे भेजनेका पुण्य तो पा चुकी। भेजी नहीं यह अच्छा ही किया। अब यहां खराब पूनिया रही ही नहीं हैं। जो पड़ी हैं वे बहुत हैं। सब महादेवकी ही बनायी हुयी हैं। लगभग दो मामने अक्वट्टी होती रही है। महादेव ज्यादातर छक्कडदासकी भेजी हुयी पूनिया काममें लेते हैं, क्योंकि युनकी रयी अत्तम है और पूनिया बडी

१ यह तार पहले तो मुझे दिया नहीं गया था। परन्तु जेलके डॉक्टरने ३ तारीखकी सुबह मुझे खबर दी कि आपका एक तार आया है और उसमें किमीके गुजर जानेके समाचार हैं। उसी दिन दोपहरको एक बहनकी मुलाकातका प्रसंग आया और उसमें यशोदाके गुजर जानेका मुझे पता लगा। शामको मैंने मेट्रनसे झगडा किया कि मुझे पता चला है कि मेरा तार आया है और वह तार जब तक मुझे नहीं दिया जायगा तब तक मैं कोठरीमें बन्द नहीं होऊंगी। बहुत झगडा होनेके बाद अन्तमें मुझे तार दिया गया।

सावधानीसे बनायी हुयी हैं। मैं मगन चरखे पर महादेव जैसा वारीक सूत कभी नहीं कात सकता। यज्ञका सूत अपने लिये हरगिज काममें नहीं लेना चाहिये, यह मेरी हमेशासे राय रही है और वह ठीक ही है। यदि यज्ञके निमित्त कातनेवाला लापरवाह रहे, तो उसकी परीक्षा हो गयी और वह फेल हो गया। यज्ञका सूत सबसे ज्यादा सावधानीसे कातना चाहिये। जितना सूत काते उतना देकर खुद जो भलाबुरा सूत मिले वही काममें ले तो उत्तम है। परन्तु ऐसा करनेका साहस न हो तो अन्तमें यज्ञके लिये एक घंटा या आध घंटा रखकर कमसे कम १६० तार तो कृष्णार्पण कर ही देना चाहिये।

तू सामूहिक प्रार्थना पसन्द करती है, यह विलकुल समझमें आता है। क्योंकि तेरी प्रार्थना ही सामूहिकसे शुरू हुयी। परन्तु अकेले प्रार्थना जरूर करनी चाहिये। भले ही वह एक ही मिनटके लिये हो। अन्तमें तो हृदयमें यही रटन चलती रहनी चाहिये। और यह अकेले प्रार्थना करनेकी आदत न पड़े तो हो ही नहीं सकता। अकेले प्रार्थना तो सोते, नहाते, खाते, कोयी भी क्रिया करते हुये हो सकती है। जिसलिये उसका बोझा तो होता ही नहीं। अलटे उससे मन हल्का हल्का हो जाता है—होना चाहिये। ऐसा अनुभव न हो तो उस प्रार्थनाको कृत्रिम समझना चाहिये।

डाह्याभायीकी समस्या जरा कठिन है। परन्तु वे बड़े समझदार हैं। जिसलिये अपने आप स्थिर हो जायंगे। जिसमें किसीको उनका पथ-प्रदर्शन नहीं करना है। यदि फिर शादी करनेकी इच्छा होगी तो उन्हें कोयी रोकनेवाला नहीं है। और शादी नहीं करनी हो तो उन्हें कोयी ललचानेवाला नहीं है। दूसरे लोग तो तंग करेंगे ही। उनसे डाह्याभायी जरूर निवट लेंगे। मेरा मिलना बन्द हो गया है, यह जैसे प्रसंग आते हैं तब खटकता है। परन्तु जिस तरह सहन करनेमें ही हमारा धर्म है। वायें हाथकी कोहनी अमुक रीतिसे काममें लेनेसे दुखती है। आजकल लगभग एक माससे कपड़े नौकर धोता है। मेरे वरतन

जेलके ही हैं। चमकते हुए तो नहीं रहने, पर साफ रहने हैं। तू शरीरको सभालना। पत्र लिखती रहना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
ठि० डॉक्टर बलवन्तराय कानुंगा
अेलिसब्रिज
अहमदाबाद

१००

य० म०
२६-८-१२

चि० मणि,

तेरे कैद होनेके बाद किसीके नाम भी कोई पत्र नहीं आया जिसका क्या कारण है? कैद होनेके बाद तुरन्त पत्र लिखनेका अधिकार तो है ही न? अभी तक न लिखा हो तो अब लिखना। हो सके तो जिन बार शरीर सुधार लेना। सुराक जो आवश्यक हो वह लेने या मागनेमें सकोच न रखना। मेरी सलाह है कि अपनी पढ़ाईका काम तैयार करके बाकायदा कच्चे विषयोंको पक्का कर लेना। गुजराती व्याकरण पक्का कर ले। और भाषा पर अधिक काबू पा ले तो अच्छा। अंग्रेजी जानती ही है, इसलिये उसे भी पक्का किया जा सकता है। जिसमें कमलादेवी (चट्टोपाध्याय) की मदद ली जा सकती है। सस्वतमें लीलावतीवहन (मुन्शी) मदद कर सकेगी, साथ ही भराठी भी अधिक अच्छी कर ली जाय तो ठीक। थोड़ा स्त्रियो सबधी खास ज्ञान भी प्राप्त कर लेनेकी आवश्यकता है ही। परन्तु यह तो मेरा सुझाव हुआ। जिसमें मे तुझे कुछ पसन्द न हो तो जो पसन्द हो वह चुन लेगा। जिसमें से कुछ भी पसन्द न हो तो कुछ नया चुन लेना। मेरा हेतु तो जितना ही है कि यह जो अमूल्य अवसर मिला है उसका पूरा सदुपयोग ज्ञानवृद्धिके लिये कर लेना। कातनेकी छूट ही तो कातना। प्रार्थना और डायरीको तो भुलाया ही नहीं जा सकता।

हम तीनों आनन्दमें हैं। बापूकी संस्कृतकी पढ़ाई बितनी तेजीसे हो रही है कि तू देखे तो आश्चर्य करे। पुस्तक हाथसे छूटती ही नहीं। नौजवान विद्यार्थीमें भी बिससे अधिक लगन नहीं हो सकती। कातते हैं परन्तु ४० नम्बर तकका। और लिफाफे तो बनाते ही हैं। महादेवके ८० नम्बर चल ही रहे हैं। बिसके सिवा फ्रेंच और अर्दू है। मेरी धीमी गाड़ी मगन चरखे पर चलती है। पढ़ाई तो लूली-लंगड़ी ही है। पत्र बहुत वक्त खा जाते हैं। x x x

किसी समय मुझे पत्र लिखनेकी गुंजाबिश हो और बिच्छा हो जाय तो लिखना। हम सबकी तरफसे आशीर्वाद।

बापू^१

मणिवहन पटेल,
प्रिजनर,
प्रिजन, वेलगांव

१०१

(य० मं०)
२१-९-'३२

वि० मणि,^२

तुझे आश्वासनकी जल्दत होगी क्या? खबरदार, यदि अंक भी आंसू गिराया तो। जो सौभाग्य मुझे मिला है वह विरलोंको ही कभी कभी मिलता है। बिससे खुश हो सकते हैं, रो तो सकते ही नहीं। तेरे और तेरे जैसोंके लिये अपवास्त नहीं है। परन्तु पूर्ण तन्मयताके साथ कर्तव्य-

१. मैं ता० ११-८-'३२ को अहमदाबादसे गिरफ्तार हुआ थी। मुझे १५ मासकी सजा हुई थी। उसके बाद वेलगांव जेलके पते पर यह पत्र लिखा गया था।

२. पू० बापूजीने ब्रिटिश मंत्रि-मंडलके साम्प्रदायिक निर्णयके विरुद्ध ता० २०-९-'३२ से अपवास्त गुरू किया था, जो ता० २६-९-'३२ को शामको छोड़ा था। उस मौके पर लिखवाया हुआ पत्र। यह पत्र वेलगांव जेलमें मुझे ता० २४-९-'३२ को मिला।

पालन है। मुझे जब लिखना हो तब लिखनेकी छूट मैंने पा ली है। जिसलिअे मुझे लिखना। यह पत्र तुझे तुरन्त मिलना चाहिये। दूसरी बहनोको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

मणिब्रह्म पटेल,
(प्रिजनर,
सेट्रल प्रिजन)
बेलगाव

१०२

प० म०
८-१०-'३२

चि० मणि,^१

तेरा लम्बा पत्र मिल गया था। मेरे लिअे तो लम्बा नहीं था। अपवास तो अब गयी बीती बात हो गयी। वह श्रीस्वर-दत्त वस्तु थी, जिसलिअे सुशोभित हो गयी। अब शरीर फिर बड़ी तेजीसे बन रहा है। शक्ति लगभग आ गयी है। दूध दो पौंड और ढेरो फल ले रहा हू। फलोमें नारंगी, मोसम्बी, अनार अथवा अगूरका रस और दूधी अथवा टमाटरका रस। x x x काफी घूम-फिर सकता हू। कमसे कम २०० तार कातता हू। ४५ अकके। पत्र तो काफी लिखता ही हू। जिसलिअे कोयी चिन्ताका कारण रह ही नहीं गया है। बाको दिनमें मेरे साथ रहनेकी छूट है। देवदासको मिल जानेकी छूट है। देवदासकी तबीयत अब ठीक है।

तुझे खानेके सपने आते हैं, अिममें थोडा-बहुत अपच कारण हो सकता है। अैसे सपने या तो बहुत भूखे पेट रहनेसे आते हैं या बदहजमीसे। अिन कारणोको दूढकर अुचित अुपाय कर और फिर निश्चिन्त रह। जीवन व्रनबद्ध हो तो ये कारण समय पाकर नष्ट

१ यह पत्र २४-१२-'३२ को दिया गया था अँसा जेलकी मुहरसे पता चलता है।

हो ही जाते हैं। दीर्घकालके आवरण अेकाअेक मन्द पड़ जायंगे अैसा माननेका कारण नहीं है। वे अपना समय लेते ही हैं। बिसलिअे घबराना नहीं चाहिये। निराश भी नहीं होना चाहिये। प्रयत्नमें शियिल भी नहीं होना चाहिये और परिणामके बारेमें निःशंक और निश्चिन्त रहना चाहिये। यही गीताकी अनासक्ति है।

अुपवासका असर अलग अलग होता है, बिसमें आश्चर्य नहीं। अुसका आवार शरीरकी बनावट पर और मानसिक तैयारी पर है। अुपवासकी जिसे आदत ही न हो वह अेकसे भी घबरा जायगा और अुसके अस्थि-मंजर ढीले हो जायंगे। जिसे आदत है अुसके लिअे वह खेल हो जाता है। बिसी तरह जिसके शरीरमें चरबी बगैरा है ही नहीं वह बहुत लम्बा अुपवास न करे। बहुत चरबीवाला धीरज रखे तो खूब लम्बा सकता है और शारीरिक दृष्टिसे अुसका लाभ अुठा सकता है।

बापू और महादेव मौज कर रहे हैं। बितना अेकान्तवास तो हमने कभी अनुभव किया ही नहीं था। बिससे खूब लाभ हुआ है।

तेरा शरीर अच्छा होगा। लीलावती और कमलादेवी ठीक रहती होंगी। और जो वन्हें हों अुन्हें आशीर्वाद। लीलावतीसे कहना कि मुंशी'का मुझे सुन्दर पत्र मिला था। किसी समय मुझे लिखनेकी गुंजाबिश हो और वैसी अुमंग आवे तो लिखें।

बिस पत्रके साथ नन्दूबहनका जो पत्र यहां आया है वह भेज रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन पटेल,
प्रिजनर,
सेन्ट्रल प्रिजन,
बेलगांव

१. श्री कन्हैयालाल मुंशी, बम्बलीके प्रसिद्ध अेडवोकेट। १९३७ से १९३९ तक बम्बली प्रान्तके गृहमंत्री। भारतके स्वतंत्र होनेके बाद १९५० से १९५२ तक भारत सरकारके खेती और खुराक विभागके मंत्री। १९५२ से १९५७ तक अुत्तरप्रदेशके गवर्नर।

१०३

(तार)

पूना,

२८-१०-'३२

मणिवहन पटेल,

कैदी, बेलगाव जेल

आशा रखता हू कि दादीकी मृत्युसे तू विह्वल नहीं हुआ होगी।
ऐसी मृत्युकी सब अिच्छा करते हैं। बहुत समयसे तेरा पत्र क्यों
नहीं आया ? प्यार।

बापू

१०४

(तार)

पूना

३१-१०-'३२

मणिवहन पटेल,

कैदी, बेलगाव जेल

दादीने बुधवारकी दोपहरकी करमसदमें चार घटेकी बीमारीके
बाद शातिपूर्वक शरीर छोडा ! आशा करता हू कि शुक्रवारकी सुसका
विवरण देते हुअे जो पत्र लिखा है वह तुझे दिया गया होगा। हम
सब आनन्दमें हैं। प्यार।

बापू

१०५

(तार)

पूना,

१९-११-'३२

मणिवहन,

कैदी, वेलगांव जेल

डाह्याभाभीको ७ दिनसे बुखार आता है। अब, मालूम हुआ है कि टाइफाइड है। और कोभी खराबी नहीं है। खास नर्स देखभालके लिये हैं। चिन्ताका कोभी कारण नहीं है। रोजके समाचार भेजनेकी कोशिश करूंगा।

वापू

१०६

यरवडा मंदिर,

२०-११-'३२

चि० मणि,

डाह्याभाभीके वारेमें दिया हुआ मेरा तार मिला होगा। तुझको हमेशा खबर देनेकी और तुझे लिखना हो वह लिखनेकी (डाह्याभाभीको या अुसके वारेमें) अिजाजत मिल गयी है। अिसलिये तू वहांसे रोज लिख सकती है। वह पत्र मैं डाह्याभाभीको पहुंचा दूंगा। यहांसे तो रोज पत्र लिखा ही करूंगा। डॉ० मादन'का पत्र आया है। वह अिसके साथ भेज रहा हूं। अुसके बाद आज भी भाभी करमचन्द'का पत्र आ गया है। अिसलिये कल तकका हाल अच्छा ही माना जायगा। आज १४ दिन पूरे हुये हैं। अभी बुखार १०० से १०३ के बीच रहता है। अेक बार ९९।। तक भी गया था। छाती, फेफड़े वगैरा ठीक हैं।

१. वम्बलीके कुशल पारसी डॉक्टर

२. वम्बलीके अेक शेयर-दलाल। पूज्य वापूके भक्त शुभेच्छु।

फलोंका रस, बारलीका पानी और कभी कभी पतली छाछ अठनी चीजें ले सकना है। सास नर्म रस्ती गजी है। सब तरहसे पूरी सावधानी रहती है, जिसलिअे चिन्ताका जरा भी कारण नहीं है।

हम सब आनन्दमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
सेन्ट्रल प्रिजन,
बेलगांव

१०७

य० म०

(२२-११-३२)

चि० मणि,

तुझे तार दिया है। पत्र लिखा है। दोनों मिले होंगे। तू रोज लिखे तो मुझे पत्र मिलेगा और वह डाह्याभाजीको पहुंचा दिया जायगा। आज भी सबर अच्छी ही है। देवदास देखकर आया है। वह कहता है कि डाह्याभाजीको देखकर तो कोभी कह ही नहीं सकता कि टाबिफाजिड हुआ है। अंसी हिम्मत और शक्ति बताता है।

सब बहनोंको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन पटेल,
प्रिजनर,
सेन्ट्रल प्रिजन,
बेलगांव

१. डाह्याभाजीको बम्बयीमें टाबिफाजिड हुआ था, जिसलिअे यह छूट पूज्य बापूजीने सरकारको लिखकर ले ली थी।

वि० मणि,

तेरा लम्बा पत्र — तुझे खबर देनेके बाद पहला ही — आज मिला। तू व्यर्थकी न करने जैसी चिन्ता करती है। तुझे जानना चाहिये कि वापू और तू जेलमें हैं तब बाहर बैठे हुअे लोग जो कुछ करना चाहिये उसे करनेसे चूक नहीं सकते। टाबिफाजिडका पता चलते ही तुरन्त वालचन्द ने करमचन्दको कहा कि रात-दिनकी दो नर्स रखो, डॉक्टरोंमें से जिसे रोज बुलाना अुचित हो उसे बुलाओ; और सारा खर्च खुद ही देनेको कहा। रोज ३०-४० रुपये खर्च होते हैं। वे ही देते हैं। अस्पतालसे ज्यादा अच्छी देखभाल होती है। घरके लोगोंमें करमचन्द, छोटूभाभी^१ हैं (जो सारे दिन पास ही रहते हैं), और दो नर्स हैं जो बहुत मिलनसार हैं और डाह्याभाभीके स्वभावको माफिक आ गयी हैं। बिसके सिवा वल्शी^२ और दूसरे मित्र भी हैं ही। बिस समय डाह्याभाभीके पास तू नहीं है यह तुझे खटकना स्वाभाविक है। लेकिन जो अीश्वरको अधिक चाहता है उसकी वह ज्यादासे ज्यादा कसौटी करता है। यहां करमचन्द, छोटूभाभी वगैराके पत्र रोज आते हैं। यह तीसरा हफ्ता है। अब बुखार १०२ से ऊपर नहीं-जाता। कल तो नॉर्मल भी हो गया था। डॉक्टर आशा करते हैं कि अगले सोमवार तक बुखार विलकुल नॉर्मल हो जायगा और बढ़ना घटना बन्द हो जायगा। तुझे तो डॉ० मादनका, जो देखभाल और अिलाज करते हैं, वल्लभभाभीके नाम आया हुआ पत्र भी भेजा था। उससे भी तू समझेगी कि डॉक्टर भी

१. स्व० सेठ वालचन्द हीराचन्द। पूज्य वापूके अेक मित्र।

२. मेरे काकाके पुत्र।

३. स्व० जमनादास वल्शी। दम्बजीके अेक शैयर-दलाल। पूज्य वापूके अेक भक्त।

प्रेमसे देखभाल कर रहे हैं। मोमम्बीका रस, छाछ बगैरा देने हैं। माध-
रण तीर पर तो टाजिफाजिडके बीमारको दस्त या अँमा ही कुछ गुरूमे
हो जाता है। डाह्याभाजीको अिनमें से कोअी व्याधि नहीं है। जिसलिअे
चिन्ता करनेका कुछ भी कारण नहीं। तू अपने काममें परायण रहना
और अँसी प्रार्थना करना कि डाह्याभाजी जल्दी अच्छे हो जाय।
'दादीके' लिअे शोक हो ही नहीं सकता। धुनके जैसी माग्यमाली मृत्यु
कितनोको मिलती है? हम अमुक स्वजनकी सेवा नहीं कर पाये और
वह चला गया, यह भावना पैदा हो तब अँमा निश्चय करके निश्चिन्त हो
जायें कि आगे किसीकी भी सेवा करनेका मौका हाथमे नहीं जाने देंगे।

हम तीनों आनन्दमें हैं। मोनेके कुछ घटे छोडकर हम तीनोंका
बाकी सारा समय अस्पृश्यता-निवारणके काममें लगता है।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
प्रिजनर,
सेन्ट्रल जेल,
बेलगाव

१०९

म० म०

२६-११-'३२

चि० मणि,

आज डाह्याभाजीके अधिक अच्छे समाचार हैं। बुखार १००।। से
आगे गया ही नहीं और ९८।। तक अुतरा था। जिसलिअे कह सकते
हैं कि अब अुतार पर है। कल अथवा परसो बिलकुल नॉर्मल होकर
फिर नहीं चढेगा, अँसी डॉक्टर आशा रखते हैं। कमजोरी है सो तो
होगी ही। परन्तु चिन्ताका जरा भी कारण नहीं। अिमलिअे अब तुझे

१ मेरी दादी लगभग ९० वर्षकी अुन्नमें गुजर गयी। वे अन्न तक
रखीअी बगैराका काम करती रही।

तार करनेकी जरूरत नहीं रही और यहांसे तेरे पास तार भेजनेकी भी जरूरत नहीं रही।

तुझे रुपया भेजनेके लिये तो वापूने करमचंदको कल लिख ही दिया है। हम तीनों भजेमें हैं। तेरा पत्र डाह्याभाजीको भेज दिया है। अपनी तबीयतके समाचार क्यों नहीं भेजती ?

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
बी क्लास प्रिजनर,
सेंट्रल प्रिजन,
वेलगांव

११०

य० म०

२७-११-'३२

चि० मणि,

आज कलसे भी ज्यादा अच्छी खबर है। बुखार अंतरकर ९७।। तक गया था। १०१।। से ज्यादा नहीं बढ़ा। नींद अच्छी आती है।

तू अपने कर्तव्यमें निमग्न रहना।

वापूके आशीर्वाद

डाह्याभाजीके खर्चका बोझा सब मित्रोंने अठा लिया है।

श्री मणिवहन पटेल,
प्रिजनर,
सेंट्रल प्रिजन,
वेलगांव

१११

यरवडा मंदिर,
३०-११-३२

चि० मणिवहन,

आज डॉ० कानूगाका पत्र आया है। वह साथमें भेज रहा हूँ।
अिममे तुझे पता लग जायगा कि डाह्याभाजीकी चिन्ता करनेका कारण
नहीं। बुखारके जानेमें तो अभी समय लगेगा, मगर अिसमें चिन्ता करने
जैसी कोजी खास बात नहीं। हम तीनों आनदमें हैं।

बापूके आसीर्वाद

श्री मणिवहन,
श्री कलास प्रिजनर,
सेंट्रल प्रिजन,
बेलगाव

११२

य० म०
६-१२-३२

चि० मणि,

डाह्याभाजीका बुखार रविवारको बिलकुल अुतर जाना चाहिये
था, मगर अुतरा नहीं। नॉर्मल तो होता है। परन्तु ९९-१०० तक
चढ़ता है। अिसलिअे शायद अभी अिस हफ्ते तक और चले। डॉक्टरोंको
अव कोजी चिन्ता नहीं रही। वे तो शक्तिके लिअे सेनेटोजन देने लगे
हैं। और डेड मेर दूध भी देने हैं, जो अुच्छी तरह पच जाता है।
अवालाल^१, ठक्कर^२, बा वगैरा अिन अेक दो दिनोमें डाह्याभाजीको

१ मेठ अवालाल सासभाजी।

२ स्व० श्री अमृतलाल वि० ठक्कर (ठक्करवापा)। १९१४ से
सर्वेण्टस ऑफ अिडिया मोसायटीके सदस्य। हरिजन-सेवक-सघके बरसो
तक मंत्री, १९४४ से १९५१ तक कस्तूरबा स्मारक-निधिके ट्रस्टी
और मंत्री, गांधी-स्मारक-निधिके अेक ट्रस्टी।

देख आये। सब कहते हैं कि डाह्याभाजी आनंदमें हैं। किसीको नहीं लगता कि चार सप्ताहसे टाबिफाभिडके बीमार हैं। तू जरा भी चिन्ता न कर।

मेरा अपवास' तो अब पुराना हो गया। 'टाबिम्स' से सब जान लिया होगा। ऐसे अपवास तो मेरे जीवनमें होते ही रहेंगे। जिसलिये जिसे स्वाभाविक समझकर कार्य-परायण रहना। तेरा स्वास्थ्य अच्छा होगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
प्रिजनर,
सेंट्रल प्रिजन,
वेलगांव

११३

य० मं०
९-१२-'३२

चि० मणि,

यह मानकर कि तुझे बम्बईसे नियमपूर्वक खबरें पहुंचती रहती हैं, मैं रोज लिखनेकी चिन्ता नहीं रखता। डाह्याभाजीके स्वास्थ्यमें सुधार होता ही जा रहा है। अभी दिनमें दो तीन घंटे थोड़ा बखार रहता है। फिर भी शक्ति खूब आती जा रही है। आज ही देवदास आया है। वह डाह्याभाजीसे मिलकर आया है। वह कहता है कि डाह्याभाजी घोड़े जैसे लगते हैं। डॉक्टर खुराक बढ़ाते जा रहे हैं। अब दूध वगैराके

१. अप्पासाहव पटवर्धनने जेलमें भंगीका काम करनेकी अनुमति मांगी थी। वह उन्हें नहीं दी गयी, जिसलिये उन्होंने बहुत थोड़ी खुराक लेना शुरू कर दिया था। पू० बापूजीको जिस बातका पता लगा तो उन्होंने भी ३-१२-'३२ को सरकारके जिस रवैयेके खिलाफ अपवास शुरू कर दिया। ता० ४-१२-'३२ को समझौता हो गया तो अपवास छोड़ दिया।

सिखा सागका झोल भी दिया जाता है। और खूब आनन्दमें है।
 बाज नटराजन' का पत्र आया है। उसमें भी ऐसे ही अच्छे समाचार
 हैं। जिसलिजे तुझे अब बिलकुल चिन्तामुक्त हो जाना है। तेरे लम्बे
 पत्रका उत्तर जरा अवकाश मिलने पर लिखाऊंगा।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिवहन पटेल,
 'बी' प्रिजनर,
 सेंट्रल प्रिजन,
 वेलगाव

११४

(५० म०)
 ३-१-३३

चि० मणि,

आजकल मुझे एक मिनटका भी अवकाश नहीं रहता। मेरा
 खयाल है कि अब रोजका पत्रव्यवहार बन्द कर दिया जाय।
 डाह्याभाजी अब बिलकुल अच्छे हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
 प्रिजनर,
 सेंट्रल प्रिजन,
 वेलगाव

११५

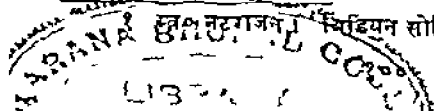
[वेलगाव जेलकी मेरी एक साथी बहनके नाम पू० बापूजीके
 पत्रसे।]

३०-३-३३

*

मणिफा मुघडपन सरदारका अतिराधिकार है, यह मैं ही देख
 पाया। मणिकी मुघडता देखकर मोतीलालजी चकित हो गये थे।
 आश्रममें मैंने उनकी कोठरी मोतीलालजीको दी तो वोले भुठे, "अंती

बाज नटराजन' 'मिडियन सोशियल रिकॉर्मेर' के सम्पादक।



सुधड़ता तो मैंने आनन्द-भवनमें भी नहीं देखी।” बिसलिअे यह तो तू
 उससे अच्छी तरह सीख लेना। जिस पर अंडेले उस पर अपनी सेवा
 अंडेलेनेकी भी उसकी शक्ति अजीब है। उसकी निडरता तो ऐसी
 है कि तुम लोगोंमें से कुछ वालायेँ उसकी स्पर्धा कर सकती हो।
 बिसलिअे बिस ओर ध्यान नहीं खींच रहा हूँ।

*

बापूके आशीर्वाद

११६

य० मं०
 ४-४-३३

चि० मणि,

पत्रोंकी तेरी शिकायत समझमें नहीं आती। तुझे पत्र नियमित
 लिखे ही जाते हैं। क्यों नहीं मिलते बिसकी अब जांच हो रही है।
 बापू लिखते थे बिसलिअे मैं लिखे बिना काम चला लेता था। परन्तु
 कुछ न कुछ तो नीचे लिखाता ही था। किसी समय यह भी न
 हुआ होगा। बिसलिअे कुछ पता नहीं चलता। हम कोअी तुझे पत्र न
 लिखें तो तुझे दुखी होनेका जरूर अधिकार है और गुस्सा भी आयेगा।
 परन्तु तुझे यह मान ही लेना चाहिये कि कुछ भी कारण हो तो भी
 यह नहीं हो सकता कि तुझे पत्र न लिखा जाय। कोअी आकस्मिक
 बात हो गयी होगी, यह सबसे सीधा अनुमान है।

यहां सब मजेमें हैं। बापूकी संस्कृतकी पढ़ाअी फिर शुरू हो गयी
 है। यह तो नहीं कहूंगा कि धड़केसे चल रही है, मगर काफी अच्छी
 चल रही है। जितना सीखा है उतना तो याद रखनेका सतत
 प्रयत्न करते हैं। डाह्याभाअी लगभग हर सप्ताह मिल जाते हैं।

मेरे हाथका तो जैसा था वैसा ही हाल है। परन्तु कोअी बाधा नहीं
 पड़ती है। महादेवका स्वास्थ्य अच्छा है। छगनलाल (जोशी) का भी

१. जेलमें मिला ता० ८-४-३३ को; मुझे दिया गया
 ता० १५-४-३३ को।

अच्छा है। तुझे अच्छी पूनिया चाहिये तो यहासे भेजी जा सकती हैं। बहुत आती रहती है। तेरे विषयमें समाचार मृदुलाकी तरफसे मिले थे। कमलादेवीकी तरफसे भी और लीलावतीकी तरफसे भी। मालूम होता है सभी पर तूने अच्छी छाप डाली है। बा और मीरा बहन मजेमें हैं। मीराबहन हर हफ्ते पत्र लिखती हैं। काशामाह्व आजकल यही है और हरिजन-पत्रोंके काममें सहायता देते हैं। पत्रोंके गुजराती, बंगाली और हिन्दी संस्करण निकल रहे हैं।

बापूके आशीर्वाद

पुनश्च मैं अगले महीनेकी ४ तारीखकी अपना पुण्य^१ क्षीण होने पर मृत्युलोकमें प्रवेश कर रहा हूँ।

म० (महादेवभाभी)

श्रीमती मणिवहन पटेल,
वी क्लास प्रिजनर,
सेन्ट्रल प्रिजन,
बेलगाव

११७

यरवडा मंदिर,
२६-४-३३

वि० मणि,^२

तेरा पत्र २-३ दिनों पहले ही मिला। तू कितना ही लम्बा क्यों न लिखे वह हमें लम्बा नहीं लगेगा। अतनी ही बात है कि यहासे और बुसमें भी मेरे पासवे बहुत लम्बे पत्रोंकी आशा तू रखती हो तो बुसे मैं पूरा नहीं कर सकता। तू आशा रखे यह तो मैं पूरी तरह समझ सकता हूँ। हमारे पास जो विविधता, जो सुविधायें, जो वैभव विद्यमान है, वे तुझे तो मिल ही कैसे सकते हैं? अतः सब सुविधाओंका

१ सजा।

२ यह पत्र आधा श्री महादेवभाभीके अक्षरोंमें और बाकीरा भाग पूज्य बापूके अक्षरोंमें लिखा हुआ है।

उपयोग केवल सेवाके लिये न करते हैं अथवा बुसीके लिये ये 'मुविधार्य' पैदा न करते हैं, तो हम अयोग्य सेवक सावित होंगे और बुसे भी अधिक अयोग्य वुजुर्ग सावित होंगे। सैकड़ों वच्चोंके मां-बाप होनेका दावा करके बैठ जाना और हवामें जुड़ते रहना जरा भी गोभनीय नहीं माना जा सकता। जिसलिये हम आरामसे जिस वैभव अित्यादिका उपयोग कर रहे हैं जिसकी ओर्ष्या तुझे या मृदुला जिस किसीको करनी हो पेट भरकर करते रहना। मीराबहनके वारेमें तूने बुलाहना दिया भी है और फिर वापस भी ले लिया है। वापका धर्म क्या है? जिन वच्चोंको जो चाहिये वह बुन्हें दे या सब वच्चोंको अेक जैसा देकर घोर अन्याय करे? और संसारके सामने या नासमझ बालकके सामने न्यायपरायण सावित होनेके प्रयत्नमें किसीके प्राण भी ले ले? तुझे तेरी बीमारी मिटानेके लिये बाजरेकी रोटी और मक्खन निकाली हुयी छाछ देनी पड़े तो क्या भारती (साराभायी) जैसी लड़कीको शहद, मक्खन और गेहूँके फुल्के देनेकी जरूरत होते हुये भी बाजरेकी रोटी और छाछ ही दी जाय? वापका धर्म प्रत्येक बालकके श्रेयके लिये जितना आवश्यक हो बुतना देना है। जिससे आगे बढ़कर श्रेयको हानि न पहुंचे जिस हद तक अधिक देनेकी भी बुसे छूट है। परन्तु ऐसा करना बुसका फर्ज नहीं है। यह सब जान क्या तुझे आज देनेकी आवश्यकता है? परन्तु मुझे तो ज्यों ज्यों कागज भर देना है, जिसलिये अितना अनावश्यक सयानापन दिखा रहा हूं। हम पर तुझे जरा भी गुस्सा नहीं आया तो फिर जी क्यों जला रही थी? अितनी कम श्रद्धा क्यों रखी? और तूने निश्चयपूर्वक क्यों नहीं मान लिया कि हम दोनोंमें से अेकका पत्र तो जरूर गया ही होगा? मैं अवश्य मानता हूं कि लिखा जा सके तो हम दोनोंको लिखना चाहिये। परन्तु जहां पत्र मिलनेके वारेमें ही अनिश्चय हो वहां जिस तरह लिखनेकी बुमंग बहुत नहीं रहती। किसी भी तरह अेक तो पहुंचेगा ही, यह समझकर अेक तो नियमित रूपमें लिखा ही जाता है। और आगे भी लिखा जाता रहेगा, यह तुझे विश्वास रखना चाहिये। तेरे पत्रका

ब्यौरेवार बुतर देनेकी जिम्मेदारी तो सरदारने ही ली है। जिसलिअे तेरे सन्देशों बगैरका जवाब वे ही पहुँचायेंगे। और ब्यौरेवार बुतर भी वे ही देंगे। कुठका जवाब देना तो मुझे अच्छा लगता है, परन्तु अपने अिम लोभका मैं सवरण कर लेता हूँ।

जानदीका आपरेशन तो भूतकालकी वस्तु हो गयी। वह आश्रममें कभीकी चली गयी है और मजेमें है। बीचमें अुमे सरदी और बुतार हो गया था। परन्तु यह तो क्षणिक हो था। . . मिल गये।

के हाथ खभे जैमे हो गये हैं। . . अुमे फलकी तरह ममान रहा है। वह पति है, मित्र है, शिक्षक है, सेवक भी है। अुमसे अधिक अच्छा पति विधाता भी नहीं ढूँढ सकता था, अैसा अभी तो लगना है। . . अुमके योग्य है या नहीं, सो तो दैव जाने। परन्तु अुनकी ऋटिया मैंने स्वयं शादी करानेसे पहले . . के मामने रख दी थी, और यह लिख दिया था कि वह सम्बन्ध करना न चाहे तो निमकोच सगाभी तोड सकता है। परन्तु . . के मातहत तालीम पाया हुआ

ऐक बार किये हूअे निश्चयने कैसे डिगे? . . विवाहके अवसर पर सबने अुमे अरने प्रेमसे नहलाया था। सबने कुठ न कुछ भेड दी थी। लवे समय तक अुन लोगोंको साज-सामान और कपडों पर खर्च भी करनेकी जरूरत नहीं रहेगी। अिममे जितना सतोष मिले अुनना ले लेता।

हमारे दारोगा अब मुझे हमारे रहनेके बाडेमें ले जानेके लिअे आकर खडे हो गये हैं। अब ग्यारह बजेंगे, जिसलिअे अब अुपने पित्रडेमें जा रहा हूँ। स्नान आदि करनेके बाद फिर १२ बजे मुसे हरिजन-गृहमें ले आयेंगे।

(पू० बापूके अक्षरोंमें)

अितना बापूने महादेवने लिखवाकर अभी मुझे दिया। जिसलिअे बाकीका मुझे पूरा करना है। तेरे पत्रकी सूची डाह्याभाओकी भेड

१. श्री लक्ष्मीदास आसरकी लडकी।

देता हूँ। जिसलिजे पुस्तकों वगैराके जो सन्देश है वे अन्हें मिल जायंगे। डाह्याभाजी पिछले सप्ताह आ गये थे। आनंदमें हैं। अब स्वास्थ्य पहले जैसा हो गया माना जा सकता है। बाबा मजेमें है। परीक्षामें पास हो गया। (अस समय छह वर्षका था।) जिसलिजे अब पहली कक्षामें वाकायदा भरती कर दिया गया है। अब कुछ कुछ पढ़नेमें असका ध्यान लग रहा है। आज 'टाबिम्स' में फस्ट ऐम० बी० बी० ऐस० का परिणाम पड़ा। अससे मालूम होता है कि जीतू^१ पास हो गया। परन्तु अभी तो अँसी और चार परीक्षाओं हर साल देनी हैं। कल श्री सरलादेवी^२ का पत्र आया था। ता० २२ का अहमदाबादसे लिखा हुआ पत्र था। असमें वे लिखती हैं कि कल अर्थात् ता० २३-४-२३ को मसूरीके लिजे रवाना होंगे। सारा परिवार जायगा। साथमें बिन्दु^३ और असकी मां भी जायंगी। श्री निमूवहन^४ वादमें जायंगी। सब बड़े आनंदमें हैं। जिस बार दोनों जनों चिन्ता नहीं करते, जिसका विश्वास दिलाते हैं। . . . अन्हें कुछ कम चिन्ता है। अंबालालभाजीकी जिनेवा जानेकी बातें अखबारोंमें आ रही हैं। परन्तु अुनके पत्रमें जिस वारेमें कोअी अुल्लेख नहीं। अगले पत्रमें कुछ न कुछ पक्की खबर आयेगी। कमलादेवी दो दिन पहले वापूसे मिलने आओ थीं। वापस वम्बओ गयीं। . . .

देवदास भटकता भटकता कल वम्बओ आया है। कल यहां मिलने आनेवाला है। मयुरादास भी कल यहां आये थे। श्री जमनालालजी दो-तीन महीने अलमोड़ा रहने गये हैं। अुनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। डॉक्टरोंने पहाड़ पर जानेकी सलाह दी। जानकीदेवी भी साथ गयी

१. डॉ० कानूगाके पुत्र।

२. श्री अम्बालाल साराभाजीकी पत्नी।

३. श्री बिन्दुमती चिमनलाल सेठ। १९५२-१९५७ तक वम्बओ राज्यकी अुप-शिक्षामंत्राणी।

४. स्व० निर्मलावहन वकुभाजी।

हैं। बुल (खुरसोदबहन) और बुनकी बहनें सब पंद्रह दिनके लिये बल महाबलेद्वार गयी हैं। बुनकी माका बड़ा आग्रह था जिसलिये गयी हैं। ताजी होकर बादमें दो बहनें तो ठिकाने (जेलमें) पहुच जायगी ही। श्री जमनावहन टाजिफाजिडमें पड़ी हैं। यशवतप्रसादके रोज पत्र आते हैं। और अब तो अच्छी तबीयत है, थैसा लिखते हैं। नदूबहन तो तुमसे मिल गयीं। जिसलिये क्या लिखू? अंक आख खो बैठी। परन्तु वे तो बड़ी सतोपी और धीरजवाली हैं। लिखती हैं कि तुम्हारे साथ न हो सकनेका दुःख है।

हमारे पत्र देरसे मिले तो जिसकी चिन्ता न करना। पता नहीं कितने पत्र गुम हो गये। परन्तु यहासे तो अच्छी तरह गये दीखते हैं। आभिन्दा प्रत्येक पत्र रजिस्ट्रीसे ही भेजनेका निश्चय किया है। जिसलिये तुरत पता लग जायगा। यह पत्र भी रजिस्ट्रीसे ही भिजवाया है।

दादा साहब^१ अभी तक रत्नागिरिमें ही है। वहा घरकी व्यवस्था कर ली है। सारा परिवार वहा पहुच गया है। बेचारे शरीरसे जर्जर हो गये दीखते हैं। कमू^२ अब तेरह वर्षकी हो गयी। प्रोप्रायटरीमें पढ़ने जाती है। दादाका पत्र पिछले सप्ताहमें आया था। तुम दोनोंके समाचार पूछे हैं। महादेवभाओका पुण्य (सजा) अब पूरा होने आया है। अगले महीनेके बीचमें फिर मृत्युलोकमें पहुच जायगे (छूटेंगे)। कितने समयके लिये, सो तो बुनके पाप-पुण्य पर निर्भर है!

बल नडियादसे मणिभाओका^३ २० तारीखका लिखा हुआ पत्र मिला। हीरा मामी^४ का २० तारीखको स्वर्गवास हो गया। अंक तरहमें,

१ खुराकमें आवश्यक तत्वोंकी कमीसे जेलमें नदूबहनकी आख जाती रही थी।

२ स्व० दादासाहब मावलकर।

३ स्व० दादामाहब् मावलकरकी पुत्री।

४ पूज्य बापूके मामाके लडके।

५ पू० बापूकी मामी।

तो वे पीड़ासे छूट गयीं, क्योंकि बीमारी ऐसी थी कि जीनेसे मरना अच्छा था। फिर भी मनुष्य चला जाता है तब सगे-संबंधियोंको वियोगका दुःख होता ही है।

जिस बार तुम्हारा मन स्वस्थ रहता है, जिससे हम बहुत प्रसन्न हुये। ऐसा ही रहना चाहिये। यह तो हमारी सामान्य स्थिति हो गयी है। और वर्मका पालन करते हुये मनको जो शान्ति रहनी चाहिये वह न रहे तो यह माना जा सकता है कि कहीं न कहीं हमारी भूल हुआ होगी। शरीर भी नियमित आहार और सुन्दर जलवायुमें यथासंभव अच्छा रहना चाहिये। जो भी शारीरिक दुःख हो उसको सुधार लेनेका पूरा अवकाश यहां मिलता है। उसका सदुपयोग कर लेना चाहिये। बाहर हम शरीर पर समय या ध्यान बिल्कुल नहीं दे सकते। यहां जितना समय देना हो उतना दिया जा सकता है। जो भी तकलीफ हो वह डॉक्टरको बताना चाहिये और इलाज करा लेना चाहिये। मामूली कसरत भी करनी चाहिये। नियमित रूपमें रोज घूमना-फिरना चाहिये। बहुत पढ़ना न हो सके तो चिन्ता नहीं, परन्तु शरीरको संभालना चाहिये। यह बात तो तुम दोनों पर लागू होती है। मेरी तबीयत अच्छी है। हमारी कोसी चिन्ता न करना। हम तो जरूरतकी सब चीज जुटा सकते हैं और जो सुविधा चाहिये वह प्राप्त कर सकते हैं। जिसलिसे हमारे वारेमें पूछनेका क्या है?

अब अगले मासके मध्यमें फिर पत्र लिखेंगे। तुम्हारा पत्र आ गया तो ठीक, वरना हम तो लिखेंगे ही।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
पी० आर० नं० १०२४९,
वेलगांव सेंट्रल प्रिजन, हिडलगा

१. मैं और मृदुलाबहन।

चि० मणि,

पिछली बारकी तरह इस बार भी तुझे रोज लिखा जा सकेगा और तू भी रोज लिख सकेगी। मैं चाहे रोज न लिख सकू या लिखवा सकू, परन्तु महादेव तो लिखेंगे ही। और समझ हुआ तो मेरे हस्ताक्षर करा लेगे। यह पत्र तेरे और मृदुला दोनोंके लिखे है। यह भी महादेव ही लिख रहे हैं।

तुम दोनों बीर लड़किया हो। मैं मानता हू कि तुम कभी नहीं घबराओगी। मेरी जरा भी चिन्ता न करना। मैं समझता हू कि मेरा शरीर पिछले अपवामकी तुलनामें इस समय अधिक ताजा और समर्थ है। राजाजी^१ ने बहुत झगडा किया। आज शान्त होकर वापस जा रहे हैं। थोड़े दिनमें लौटेंगे। बल्लभभाजी बड़ी शान्तिसे सब सहन कर रहे हैं और महादेवसे अन्होंने प्रतिज्ञा की है कि मुझसे जरा भी बहम न करके सपूर्ण सहयोग — भले ही मौनमे — देंगे। यह वृत्ति मुझे प्रिय है। थोड़े दिन तो वे इस मौनको जरा कड़ी हद तक ले गये, बुनका विनोद सूख गया। परन्तु अब फिर फूटने लगा है।

यह अपवाम^२ अनिवार्य था। जिसका मुहूर्त यही था, जिसमें जरा भी शक नहीं। गणितके मवालकी तरह मैंने जिसका हिसाब

१ श्री राजगोपालाचार्य ।

२ अस्पृश्यता-निवारणके लिये समाज-शुद्धि तथा आत्मशुद्धिके यज्ञके रूपमें किया गया २१ दिनका अपवास ता० ८-५-'३३ मे २९-५-'३३। यह पत्र अपवास शुरू करनेमे पहले यरवडा जेलमे लिखा गया था। बापूजीको अपवाम शुरू करनेके दिन ही शामको जेलसे छोड दिया गया था।

मिला लिया है। यह उपवास किसीके विरुद्ध नहीं है। मुझे पता नहीं कि किस चीजसे आघात पाकर मैंने यह प्रतिज्ञा की। बहुतसी बातोंका जाने-अनजाने जरूर असर हो रहा था। परन्तु बात यह है कि मुझमें कहीं न कहीं अपवित्रता होगी। तभी तो मेरे साथ सम्बन्ध रखनेवाले हरिजन-सेवक कुन्दन जैसे नहीं हैं? और अस्पृश्यतारूपी राक्षस रावणसे भी बुरा है। रावणके दस मस्तक थे, जिसके सैकड़ों हैं। जिन सबका नाश संघोंसे नहीं होगा, करोड़ों रुपयोंसे नहीं होगा, हरिजनोंको अधिकार दिलानेसे नहीं होगा। सवर्ण हिन्दुओं और हरिजनोंको भाभीकी तरह मिलानेके लिये उनके हृदय बदलने चाहिये। असा विशाल आध्यात्मिक कार्य हमारे पास जितनी भी आध्यात्मिक पूंजी हो उसे खर्च कर दें तभी हो सकता है। यह मार्ग तो पुराना है। राजमार्ग है। आज तक नहीं सूझा, येही आश्चर्य है।

दोनों शान्त रहना; और समय आने पर सहयोग देना। मेरे साथ उपवास हरिजिज न करना।

तुम दोनोंको
वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
प्रिजनर,
हिडलगा सेंट्रल प्रिजन,
बेलगांव

११९

य० मं०
(८-५-३३)

चि० मणि,

तुझे शनिवारको पत्र लिखा है। तू जवाब भी रोज लिख सकती है। जिसमें मृदुका भी भाग है। कोजी वहन दुखी न हो। परन्तु सब अपनेमें जहां जहां मेल भरा हो उसे निकालनेका प्रयत्न करें। कोजी न

कोशी ययामभव रोज लिखा करेगा। मैं खुद शान्त हूँ। हम सब
आनंद कर रहे हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
प्रिजनर,
हिडलगा सेंद्रल प्रिजन,
बेलगाव

१२०

(पणकुटी,
पूना)
१५-९-'३३

चि० मणि,

नासिकसे (पूज्य बापूका) पत्र तुझे नियमित मिलता ही है, जिस
कारण मैंने कुछ भी नहीं लिखा। अब देखता हूँ कि मैंने लिखा होना
तो तुझे मिल जाता। खैर। अगर मैं बाहर रहा तो जहा होऊंगा
वहा तू मुझे मिलने आ ही जायगी, यह मान लेता हूँ। मैं जानता हूँ
कि तू दो दिन बेलगावमें रहेगी। फिर नासिक तो जायगी ही। तेरा
स्वास्थ्य अच्छा होगा। मैं भजेमें हूँ। आज बम्बयी जा रहा हूँ। २१
ता० को अहमदाबाद। २३ ता० को वर्धा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
सेन्द्रल प्रिजन,
हिडलगा,
बेलगाव

११०

१२१

(वर्धा)

२९-९-'३३

चि० मणि,

तेरा कार्ड मिल गया। तुझे जब तक रहना पड़े तब तक रहकर अच्छी होकर आना। वापूका पत्र मुझे भी मिला है। मुत्तसे मालूम हुआ कि बुनके साथ आजकल चन्द्रभाभी^१ हैं।^२ बहुत ठीक हुआ। मुझे पत्र लिखती रहना। डाह्याभाभीसे कहना कि मैंने करमचन्दको जवाब दिये हैं। मैं अच्छा हूँ।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
रामनिवास, पारेख स्ट्रीट,
सैण्डहर्स्ट रोड,
बंबई - ४

१२२

वर्धा,

७-१०-'३३

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। जहां मिलना हो वहां फुरसत लेकर आना। परन्तु जिसका यह अर्थ न करना कि अगले युगमें भी आये तो हर्ज नहीं। बाबाको जरूर साथ लाना। मुसे अच्छा लगेगा। मैं अच्छा होता जा रहा हूँ, अर्थात् शक्ति आती जा रही है। मैं यहां ७ नवम्बर तक हूँ।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बंबई - ४

१. डॉ० चन्द्रूलाल देसायी।

२. पूज्य वापू नासिक जेलमें थे तबका जिक्र है।

१११

वर्षा,
२२-१०-१३

चि० मणि,

तेरा कार्ड मिला। तुम तीनों की राह बुधवारको देखूंगा। बाबा आयेगा न? तू अच्छी होती जा रही होगी। स्वामी आज पहुँचे हैं। शेष गारी बातचीत बुधवारको होगी।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
ठि० श्री डाह्याभाजी वल्लभभाजी पटेल,
पारेख स्ट्रीट,
मैण्डहस्टे रोड,
बवभी - ४

वर्षा,
४-११-१३

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। डाह्याभाजी काफी जूझ रहे हैं। जहाँ गदगी अथवा कृत्रिमता पायी जाय वहाँ भले ही लगानार जूझते रहें। तेरी देखभाल अच्छी तरह हो रही होगी। मुझे नियमित लिखती ही रहना। बाबा महा आ गया यह तो बहुत अच्छा हुआ। बा तेरे जानेके बाद (जेल जानेके लिये) निकलेगी। उसके लिये तैयारी तो कर रखनेकी जरूरत है ही।

बापूके आशीर्वाद

१ मुदुलावहन, डाह्याभाजीका ६ बरसका लडका और मैं।

२ स्व० विठ्ठलभाजीका शव जहाँजमें आ रहा था। अन्तर्द्वारा अंस बारीमें बवभीमें बड़ी खटपट और खर्चा हो रही थी कि अंसका अग्नि-भस्कार कहा और किम दग्ध किया जाय।

चि० मणि,

डाह्याभाजीका क्या हाल है यह मैं नहीं जानती। मुझे मेरे आशीर्वाद और वावाको भी। तू जब वल्लभभाजीको पत्र लिखे तब मेरे आशीर्वाद लिख देना। मेरे बारेमें वापूजीने लिख दिया है जिसलिजे मैं नहीं लिख रही हूँ। यहां सब मजेमें हैं। वहांके (समाचार) लिखना। यहां वापूजीसे मिलने बहुत लोग आते हैं। आज शंकरलाल^१ आये हैं।

वाके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,

ठि० श्री डाह्याभाजी वल्लभभाजी पटेल,

रामनिवास,

पारेख स्ट्रीट, सैण्डहर्स्ट रोड,

बम्बयी

१२५

वर्षा,

५-११-'३३

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। मैंने वातावरणको डाह्याभाजी काफी शुद्ध कर रहे हैं। मेरा वहां आना नहीं होगा। मुझे व्यौरेवार लिखती रहना। वा कदाचित् यहांसे १३ तारीखको चलेगी। मुझे नागपुरका काम पूरा करके^२ यहां लौट आना है। अतने समय यहां रह जानेका वह लोभ रखती है। अहमदावादमें रणछोड़भाजी^३के यहां रहेगी असा मानता हूँ, अथवा लाल बंगला तो है ही। यह तो मुझे देखना होगा।

१. श्री शंकरलाल वैकर।

२. उस समय मध्यप्रान्तमें पू० वापूजी हरिजन-यात्रा करनेवाले थे। मुसीका अल्लेख है।

३. अहमदावादके श्री रणछोड़भाजी सेठ।

तू कुछ कहना चाहती है ? पैरका अिलाज जितना हो सके बुतना तो करना ही । बिना सोचे-समझे बुताबली न करना ।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन,
ठि० श्री डाह्याभात्री पटेल,
रामनिवान,
पारेव स्ट्रीट,
वम्बो - ४

१२६

नागपुर,
९-११-'३३

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला । तूने मुझे सब माफ लिखा, यह समझदारी की है । अंमा ही करती रहना । तू नहीं लिखेगी तो कौन लिखेगा ? डाह्याभात्रीको गलतफहमी हुआ और गुस्मा आया, यह आश्चर्यकी बात है । मगर बुमका खयाल न करना । अन्हें शायद सारी बात भालूम भी न हो । अन्हें दुःख हो, जिसे समझ भी सकता हू । तू ही जितना समाधान हो सके बुतना करना । तू चाहे तो मैं अन्हें लिखू और बुनका दुःख मिटाऊ । मुझे यह ज्यादा अच्छा लगेगा । यह पत्र भी तू अन्हें पढाना चाहे तो पढा देना ।

वा मगलवारको वर्धा छोडेगी । थोडे समय अर्थात् कुछ घटे अकोला रहेगी । फिर अुघर आवेगी । वा जिस समय कुछ दुविधामें है । चिन्तित भी है, फिर भी (जेल) जानेका निश्चय बुमने अपने आप ही प्रगट किया है । तू अुमे अच्छी तरह दृढ़ करना ।

तू अच्छी तरह सा-मीकर शरीरको यथासभव सुधार लेना । मुझे नियमित लिखनी रहना । विजलीका अिलाज आवश्यक हो बुतना लेना ही । अहमदावादमें भी लिया जा सकता है । दातोका क्या किया ?

शनिवारको जवाहरलाल वर्गारा वर्गा आयेंगे ।

मृदु बिलाहावादमें क्या कर आजी ? सन्तोष ले कर आजी ?
अुसे लिखनेको कहना । दांतोंका अुसने क्या किया ? सरलादेवी
(अुसकी माता) के और समाचार हों तो लिखना ।

नागपुरमें बहुत अच्छी सभा हुअी थी । आरंभ तो अच्छा हो
गया । वहांकी 'श्मशान-क्रिया' के समाचार लिखना ।

वर्गा ही लिखना ।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
ठि० डाह्याभाजी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बयी - ४

१२७

चांदा,

१४-११-'३३

चि० मणि,

तेरा लम्बा पत्र मिला । तूने लिखा सो अच्छा किया । मेरे सामने
तू परदा रखेगी तो तेरा दुर्भाग्य ही होगा । अवश्य ही मनुष्यके मरते
समय हम अुसके दोषोंको याद न करें । हम अुसके गुणोंका ही स्मरण
करें । मेरे अुपस्थित न रहनेका अुनके व्यवहारके साथ कोअी सम्बन्ध
नहीं । अुनके गुण मैं नहीं पहचान सका सो बात नहीं । मैं वहां
अिसलिये नहीं आ सका कि मैं कहीं किसी दूसरे कार्यक्रममें शामिल
नहीं हो सकता था । आजकल या तो मैं यरवडामें शोभा देता हूं
या हरिजन-कार्यमें । हरिजन-कार्यके खातिर ही मैं बाहर हूं, यह
केवल सरकार या जनताको कहनेके लिये नहीं, परन्तु मेरे हृदयमें
भी यही चीज है । दूसरे काममें मैं पड़ ही नहीं सकता । मालूम

१. श्रीं विठ्ठलभाजीकी 'श्मशान-यात्रा और अग्नि-संस्कार' ।

होता है लोग भी यह चीज समझने लगे हैं। मुझसे सरकारके अकुश सहन न होने, मैं अपने ढंगसे कुछ कर न पाता। मैं तेरा या डाह्याभाओका पयप्रदर्शन न कर सकता था। जिसलिये मैं मन मारकर बैठा रहा। जिसके सिवा मेरे जीवनमें दूसरी बात भी है। यह भी तू जान ले। रसिक (गावी) मृत्युशय्या पर था, वह चाहता भी रहा होगा कि मैं अुमके पास पहुँचू। परन्तु मैं दिल्ली नहीं गया, वा गयी। रसिक मर गया। मैंने आभू तक नहीं बढ़ाया। मैं खा रहा था तब तार आया। खाना खतम किया और अपने काममें लग गया। मेरे जीवनमें ऐसी घटनाओं बहुत हुआ हैं। मौतके बारेमें मैंने कुछ विचार बना रखे हैं, वे दृढ़ होते जा रहे हैं। मैं मृत्युको भयानक चीज नहीं समझता। विवाह भयानक हो सकता है, मृत्यु कभी नहीं। जिससे तेरी शकाका समाधान हो जाता है? न हो तो मुझे फिर पूछना।'

बहाका वर्णन तूने बढ़िया किया है। बड़ा दुःखद है। लोगोंका प्रेम समझने लायक है। यह प्रेम व्यक्तिके प्रति नहीं है, परन्तु जो चीज लोगोंको चाहिये अुमे जिस व्यक्तिमें वे मानते हैं उसीके लिये वह प्रेम है। जिसलिये यह बड़ी निर्मल वस्तु है। यह लोक-जागृतिकी सूचक वस्तु है, दुनियाकी आत्में खोलनेवाली है। विट्ठलभाओी स्वतन्त्रताके पुजारी थे, जिस बारेमें कोओी शका कर ही नहीं सकता।

अब बाबे बारेमें। मुझे समय होता तो मैं अुम पत्रमें अधिक समझाता। बाका दिल कमजोर हो गया है। वह मदिर (जेल) जाना चाहती भी है और नहीं भी चाहती। भीतर ही भीतर वह जेल जानेका धर्म समझती है, जिसलिये उसे छोड़ नहीं सकती, मगर मैं बाहर हूँ जिसलिये उसे अन्दर जाना अच्छा नहीं लगता। मैंने कोओी आग्रह नहीं किया। उसकी भरजी पर छोड़ दिया है। मेरे लिखनेका आशय यह था कि तू उसे धर्म-पालनमें दृढ़ बनाना और समझाना। तुझ पर अुमे

१ श्री विट्ठलभाओीकी श्मशान-यात्रामें भाग लेने पू० बापूजी नहीं गये। उसीके कारण जिस पत्रमें समझाये गये हैं।

बासूया और प्रेम है। मैं कुछ भी कहूंगा तो वह हुक्मके रूपमें माना जायगा और वा दब जायगी। बिसलिबे कुछ नहीं कहता। नहीं कहता, बिसका अर्थ भी वा तो बेक ही करती हैं कि उसे जेल जाना ही चाहिये।

तेरे दांतोंकी और पैरकी बात समझा। जैसा डॉक्टर कहते हैं वैसा ही करना। थोड़ी राह देखनी ही पड़े तो हठ करनेकी जरूरत नहीं। डाह्याभाबीको लिख रहा हूं।

पत्र वर्धा ही लिखना।

बापूके आशीर्वाद

मणिवहन पटेल,
रामनिवात,
सैण्डहर्स्ट रोड,
बम्बयी-४

१२८

(चित्तलदा)

१९-११-'३३

चि० मणि,

तू अपने और कुटुम्बियोंके विचार मेरे सामने अंडोल रही है, यह बड़ी समझदारीकी बात है। डाह्याभाबी या गोरवनभाबीके मनमें मेरे बारेमें जरा भी गलतफहमी हो, यह मुझे असह्य प्रतीत होता है। तू बम्बयीमें होगी तब तो गोरवनभाबीके नाम लिखा हुआ पत्र पढ़ ही लेगी। अतः परसे तुझे कुछ लिखना हो तो लिखना।

मेरा पत्र तो तुझे मिला ही होगा। अखबारोंमें कुछ लिखनेकी जरूरत नहीं मानता। अखबारवाले मुझे न समझें या जान-बूझकर गलतफहमी फैलायें, तो उसका जवाब देनेकी मुझे हमेशा जरूरत दिखायी नहीं देती। परन्तु तुम भाबी-बहन चाहो तो मैं जरूर दूंगा। मेरी स्थिति विलकुल साफ है। डाह्याभाबी जो कहता है उसमें काफ़ी सत्य है। दास वगैराके चरित्रमें दोष जरूर बताये जा सकते हैं। दोषरहित

कौन है ? परन्तु मेरे न आनेके साथ विठ्ठलभाभीके दोषोका कीभी सवध नहीं । जो आदर दूसरे नेताओंने पाया है वह पाने लायक विठ्ठलभाभी भी जरूर थे । अुनका त्याग, अुनकी लगन, अुनकी कुशलता, बाप्रेमके प्रति अुनकी बफादारी, ये सब गुण दूसरोंमें अुनमें कम हरगिज नहीं थे ।

तेरी अपनी बुदारता मुझे चकित कर रही है । यह तेरी ही विशेषता नहीं है, जिसे समझ लेना । मैंने यह चीज असम्भव स्त्रियोंमें देखी है । स्त्रिया अपने प्रति हुअे दुर्व्यवहारको भूल जानेके लिये हमेशा तैयार रहती हैं । इस गुणसे स्त्रीजाति सुसोभित हुआ है । परन्तु स्त्रीके जिस गुणका पुरुष जातिने खूब दुरुपयोग किया है । परन्तु यह तो विषयान्तर हो गया । मेरी दृष्टिसे अब तू सुसोभित हो रही है, जिसका मैं गर्व कर सकता हू न ?

वर्धा लिखना ।

बापूके आशीर्वाद

मणिवहन पटेल,
रामनिवास,
सैण्डहस्ट रोड,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बयी-४

१२९

कडला,
२-१-३४
सुबहके ४ बजे
प्रार्थनासे पहले

चि० मणि,

तेरे समाचार अब सीधे मिलेगे या नहीं, यह प्रश्न है । सरदारकी ओगमें मिलने है । अितनेसे सन्तोष नहीं हो सकता । डाह्याभाभीसे पुछवाना हू । तू लिख मके तो लिखना । शरीर और मन अच्छा

रखना। मेरा तो ठीक चल रहा है। बाको हर हफ्ते नियमित और लम्बे पत्र लिखता हूँ। आज तो जितना ही।

पता बर्बाक लिखना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
प्रिजनर,
हिडलगा सेन्ट्रल प्रिजन,
बेलगांव

१३०

(कानपुर)

२३-७-३४

चि० मणि,

तू ठीक नियमसे लिखती रहती है। विसी तरह लिखती रहना। मेरे पत्रकी आशा न रखना। महादेव है विसलिजे मैं कुछ पत्र लिखनेसे बच जाता हूँ। अब सरदारको भी लिखनेकी जरूरत नहीं रहती। तेरी तरह मैं भी मानता हूँ कि तेरा वहां रहना ही तेरे लिये मुन्दर औपधि है।

शायद अब तो जल्दी ही मिलेंगे।

बापूके आशीर्वाद

पुनश्च : साथका पत्र तेरे ही नाम भेज रहा हूँ, उसे बापूको तुरन्त पहुंचा देना। तूने भास्करवाली बात कहकर बापूको काफी भड़का दिया। ऐसे तो मैंने कभी लोगोंके साथ बातें की थीं। परन्तु मैं अकेला कहां हूँ? मेरे साथ कोअी नहीं तो बेलवहन और दो लड़कियां तो हैं ही। विसलिजे हमारा सवाल बिलकुल आसान नहीं है। बर्बामें चारा निश्चय होगा, ऐसी आशा रखें।

१३१

(कातपुर)

२५-८-१३४

वि० मणि,

तेरी दो पक्किया पड़ी। तू आजकल नहीं लिखती, यह बिलकुल ठीक है। स्वास्थ्यकी लापरवाही न करके उसे अच्छी तरह मुधार लेना। लिखने योग्य हो तब तो अच्छी तरह लिखना ही। अब मुझ पर बहुत दया करनेकी बात नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

१३२

वर्धा,

३१-१०-१३५

वि० मणि,

तू बीमार क्यों पड़ती रहती है? पितृभक्तिका यह अर्थ तो नहीं करती कि पिता बीमार पड़े तो तू भी बीमार हो जाय? माता-पिता अपग थे तब श्रवणने अपना शरीर वज्र जैसा बनाया और अपने कंधे पर कावर रखकर दोनोंको यात्रा कराती थी। किंग लियरकी लड़कीने खुद तदुस्त रहकर पिताकी सेवा की थी। तू क्यों बुढ़िया जैसी बन कर बैठी है? अपना न हो तो बुखार और बुखार न हो तो सरदी, कुछ न कुछ तो रहता ही है। अमका कारण दूढ़ कर वज्र जैमी काया क्यों नहीं बना डालती?

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल,
८९, वॉर्डन रोड,
बम्बयी

१३३

वर्मा,

१२-११-३५

चि० मणि,

बिस्के पीछेका भाग वापूको पड़ा देना। ऐसी खबर है कि जवाहरलालके व्यवहारसे सब बहुत खुश हो गये थे।

वापू मजेमें होंगे। वे डॉक्टरोंको हंसाते होंगे^१। तू अपने स्वास्थ्यके विषयमें गाफिल न रहना।

वापूके आशीर्वाद

मणिवहन पटेल,
८९, बॉर्डन रोड,
बम्बई

१३४

(कानपुर)

२६-८-३७

चि० मणि,

केवलराम^२का पत्र तो तूने जो वापस दिये अुन्हींमें था। मुझे पता नहीं कि तारका पहला भाग नहीं था। अब दोनों बिस्के साथ भेजता हूं। आज मीरावहन दिल्लीसे आनेवाली गाड़ीम ६-८ पर आ रही है। राजकुमारी कल सुबह बम्बईसे आ रही है।

वापूके आशीर्वाद

मणिवहन पटेल,
पुरुषोत्तम बिल्डिंग,
ऑपेरा हाउसके पास,
बम्बई

१. थुस समय पू० वापूकी नाकका ऑपरेशन कराया गया था।

२. स्व० केवलराम। भेक आश्रमवासी।

१२१

वि० भणि,

कजी वपोंमें तुझे मेरे नाम पत्र लिखना पडा है। काफी खबरोसे भरा है। जिसी तरह लिखती रहना। नासिककी सिपाही-शाला सम्बन्धी खबरको सच मानकर मैंने टिप्पणी लिखी है। तू खेर या मुन्शोमे मिले तो बात भी करना।

वहाका अधिकारी बगं यदि मद्य-निषेधके काममें दिलसे सहयोग न दे, तो मन्त्रियोंको गवर्नरसे वृद्धताके साथ कहना चाहिये। युनका दिल जिस काममें नही, यह विश्वास होना चाहिये।

जमीनोके बाबत तो वल्लभभाजीका पत्र आया, उसके पहले ही मैं लिख चुका था। जिस सम्बन्धमें विधान-सभामें हुआ चर्चा मुझे भेजना।

अदलील साहित्यके बारेमें कदम अठाये ही नहीं जा सकते, यह मैंने नही कहा। अपनी राम जरूर दी। मुझे यह अन्देशा जरूर है कि लोगोंको गदगी अच्छी लगती है, जिसलिसे वह बेकाबूके दूर नहीं होगी। विद्वानोंको ही धन आये तब वह बन्द हो। मैं तो मानता हू कि अदलील लेख वर्गका कानूनमें बन्द हो सकते हो तो अन्हें उस तरह बन्द करनेका प्रयत्न होना चाहिये। परन्तु जितना याद रख कि विद्यार्थीको ऐसी चीजें पढनेको मजबूर करनेमें और अखबारोंमें गंदे लेख छापनेमें बड़ा फर्क है।

१ नासिक जेलमें पुलिस ट्रेनिंग स्कूल (धानेदारोका तालीम देनेवाली पाठशाला) है। वहा तालीम पानेवाले अुम्मीदवारोको शामके भोजनमें शराब दी जाती है, ऐसा मैंने सुना था और उसके बारेमें पू० बापूजीको खबर दी थी।

२ रास और वारडोलीकी जो जमीनें सरकारने जब्त कर ली थी और दूसरोको बेच दी थीं, अन्हें खरीदारोंसे वापस लेकर असल मालिकोंको सौंपनेके बारेमें विधान-सभामें विधेयक पेश हुआ था, उस पर हुआ चर्चा।

राजकोटका^१ मामला अद्भुत है। जो हो रहा है वह टिका रहेगा तो लोग मुंहमांगा ले सकेंगे, जिसमें सन्देह नहीं। त्रावणकोर^२ के बारेमें बापूने ठीक किया है। रामचन्द्रन्को बुलाकर अच्छा किया। यद्यपि बापूका पत्र आया उससे पहले मैं अपना वयान^३ तो प्रकाशित कर चुका था। मेरा खयाल है कि मुझे वयान देना ही चाहिये था। अब तुरन्त त्रावणकोर जानेकी बात नहीं रहती।

नाकमें से पानी गलेमें टपकता रहे, यह विलकुल अच्छा नहीं कहा जा सकता।^४ उसे मिटाना ही चाहिये।

बड़ोदेकी बात समझा। भादरणमें^५ जो कुछ हो वह बताना।

मैं १५ तारीखके आसपास वर्षा पहुंच जानेकी आशा रखता हूं। यहाँका काम ९ तारीखको पूरा होगा।

१. राजकोट सत्याग्रहका प्रारम्भ जिस समय हुआ था।

२. त्रावणकोर राज्यमें राज्यके विरुद्ध सत्याग्रह हो रहा था। उस समयके दीवान सर सी० पी० रामस्वामी अयरने पू० बापूको त्रावणकोर बुलाया था। उन्होंने जवाब दिया था कि यदि मुझे जेलमें बन्द सत्याग्रहियोंसे मिलने दिया जाय तो मेरा वहां आना सार्थक होगा।

३. जिस वयानमें उन्होंने त्रावणकोरके विद्यार्थियोंके अपद्रवका अुल्लेख करके अुन्हें मन, वचन और कर्मसे अहिंसाके पालनका आदेश दिया था और लड़ाजी चलानेवालोंसे यह विचार करनेको कहा था यदि वे हिंसाकी शक्तियोंको काबूमें न रख सकें तो लड़ाजीके हितमें ही सविनय कानून-भंग स्थगित करनेमें समझदारी है या नहीं। सम्पूर्ण वक्तव्यके लिअे देखिये 'हरिजनसेवक', ता० २२-१०-३८, पृ० २८७।

४. पूज्य बापूको तेज जुकाम होता था तब नाकका पानी गलेके भीतर अुतर जाया करता था।

५. भादरणमें बड़ोदा राज्य प्रजा-मंडलके १९३८ के अधिवेशनके पू० बापू अध्यक्ष थे।

६. उस समय पू० बापूजी सरहद प्रान्तके प्रवासमें थे। अुसीका अुल्लेख है।

सुभाषबाबूके बारेमें जो हो रहा है वह मेरे ध्यानमें है। अमोलिये मेने कार्य-समितिमें थोड़ीसी चर्चा तो की थी। परन्तु बापूकी राय यह रही कि जवाहरलालके आने तक राह देखें। असलिये मैं चुप रहा। अगले बार अध्यक्षके चुनावमें कठिनायी तो होगी ही। मैंने 'हरिजन' में जो सुझाव दिया है उस पर बापू विचार करे। मेरी राय है कि जैसा हो रहा है वैसा होने देनेमें हानि है।

अब दोनों पत्रोंके उत्तर आ गये। बापूको फुरसतमें पढ़ा देना।

मेरा स्वास्थ्य सचमुच ही उत्तम रहता है। बापूको जिस प्रान्तमें जाना चाहिये। मौलानाको साथ लेकर।

बापूके आशीर्वाद

मणिवहन पटेल,
पुरुषोत्तम विल्डिंग,
ऑपेरा हाउसके सामने,
बम्बयी

१३६

सेगाव-वर्षा,
२८-११-३८

चि० मणि,

तेरा पत्र मिल गया। अतने कामोंमें तू लिख सकेगी, यह आशा नहीं रखी थी। दूर बैठा बैठा तेरे पराक्रम देख रहा हूँ। तू पुण्यशाली है। तेरी हिम्मतके बारेमें मेरे मनमें कभी शका नहीं थी। तू जेलमें ययासमय न जाना। यह काम राजकोटवालोका है।

तेरा शरीर ठीक रहता होगा।

बापूके आशीर्वाद

मणिवहन पटेल,
तारधरके पास,
राजकोट

१ राजकोट सत्याग्रहके समय भूज्य बापूने मुझे राजकोट भेजा था। यह पत्र वहाके पते पर लिखा गया है। बादमें मुझे वहा गिरफ्तार कर लिया गया था।

१२४

सेगांव-वर्धा,
५-१२-'३८

चि० मणि,

तेरा वर्णन बढ़िया है। तेरे कामका क्या पूछना? तू मेरा कहना मानकर शरीरमें तेल मलवाना^१ अथवा स्वयं मलना। जो सिपाही अपना शरीर स्वस्थ नहीं रखता वह सजाका पात्र होता है। ऐसा ही होना चाहिये।

लोग अहिंसाका पाठ समझ गये हों और मारपीट वगैरा सहन कर लें, तो भुनकी हार होती ही नहीं। महादेव^२ यहीं हैं। मजेमें हैं। जानवृझ कर कम लिखते हैं। जिस वार 'हरिजन' में बहुत लिखने दिया है। ऐसा वार-वार नहीं होने दूंगा। कुछ भी जिम्मेदारी न होना अच्छा है। आजकल मेरा स्वास्थ्य तो ठीक ही है।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
तारघरके पास,
राजकोट

१३८

सेगांव-वर्धा,
२२-१२-'३८

चि० मणि,

तू और मृदुला ठीक मिली हो। तेरे दोनों पत्र मिल गये। आराम अच्छी तरह लेना। तू कातती है यह बहुत अच्छा है। खुराक वगैराका हाल लिखा जा सकता हो तो लिखना। मृदुला समय किस तरह बिताती है?

१. सूखी हवा और ठंडमें वच्चोंके गाल फट जाते हैं और खून निकलने लगता है। राजकोटकी सूखी हवा और ठंडमें मेरे सारे शरीरकी लगभग यही हालत हो गयी थी।

२. श्री महादेवभाजीको उस समय रक्तचाप काफी रहता था।

महादेव कलकत्तेके पामकी गीशाला देवने ४ दिनके लिजे गये हैं। २४ ता० को आ जानेकी समावता है। मेरा स्वास्थ्य अच्छा रहता है। बाको वहा आनेकी अिजाजत तो अभी नहीं मिली। क्या गुरुकुलके लिजे देहरादून जा रही हैं। मैं पहली जनवरीकी बारडोली जा रहा हू। मुझे और मृदुलाको

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
स्टेट जेल,
राजकोट (काठियावाड)

१३९

सेगाद वर्धा,
१९-२-१३९

वि० मणि,

तेरा लम्बा पत्र और और दूसरे पत्र मिल गये। तूने जो जो कदम उठाये धुनमे मैं तो मुग्ध हो गया हू। कहीं दोष निकालने जैसी बात नहीं। मैं देखता हू कि तू सत्याग्रहका शास्त्र अच्छी तरह समझ गयी है। इसलिजे बिल्कुल निश्चिन्त हू।

१ पूज्य बापू अिजाजत देने तभी बाहरका कोभी आदमी लडाओके लिजे राजकोट जा सकता था।

२ पूज्य बाको और मुझे पकडकर स्टेशनसे सीधे सणोसराके डाक-बगनेमें ले जाकर रखा गया था। वह मकान सूना पडा था और वहा कोभी सुविधा नहीं थी। वहा पहुचनेके बाद पूज्य बाकी तबीयत बिगड गयी। दूसरे दिन मुझे राजकोटके जेलमें हटा दिया गया। मैंने जब तक पूज्य बाके साथ मुझे या राजनीतिक कैदियोंमें से पूज्य बाकी देखभाल कर सकनेवाली किमी बहानाको न रखा जाय तब तक खाना लेनेमे अिनकार कर दिया। इस बीच पूज्य बाको सणोसरासे बम्बा हटा दिया गया था। तीसरे दिन मुझे भी बम्बा ले गये। वहा पहुचनेके बाद पूज्य बाने मुझे खाना खिलाया। मृदुलाको पकडकर बम्बा लाये तो हम तीनों साथ हो गये।

मुझे राज्यकी ओरसे रोज तार नहीं मिलता। दो तीन आये थे। यहांसे रोज पत्र गये हैं। पहले तू बताती थी अुस पते पर लिखे थे। फिर मैंने राज्यसे शिकायत की कि मेरे पत्र क्यों नहीं मिलते, तब मुझे तार दिया गया कि पत्र फर्स्ट मेम्बरके मारफत भेजे जायं। अब मैं वैसा ही करता हूं।

तुम्हारी तरफसे तो रोज मिलते ही हैं। जिसलिअे शान्ति है। मृदुको अलग नहीं लिखता। वह चिन्ता न करे। क्या वहांका भार कम है जो वह कांग्रेसका अुठायेगी?

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिवहन पटेल,
स्टेट प्रिजनर,
ठि० फर्स्ट मेम्बर ऑफ दि कौन्सिल,
राजकोट (काठियावाड़)

१४०

सेगांव,
१८-२-'३९

चि० मणि और मृदुला,
तुम दोनों वहां हो यह अीश्वरका अनुग्रह है। तुम तीनों सबके साथ हो यह मुझे अच्छा लगता है। परन्तु अीश्वर जैसे रखे वैसे रहना है।

सुभाषबाबू वगैराके बारेमें तुम्हें कुछ विचार करनेका नहीं है। जिसके लिअे तो तुम जेलमें ही हो। अीश्वर मुझे जैसी सृज देगा वैसा करता रहूंगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
कैदी,
फर्स्ट मेम्बरके मारफत,
राजकोट

१४१

राजकोट,

५-३-३९

चि० मणि,

तू क्यों परेशान होती है? ये अनुभव क्या तेरे लिये नये हैं? जिस मामलेमें तो तू मेरी आशासे आगे बढ़ गयी है। मैं अपने आप आया हू। धर्म समझकर आया हू। बीनवरकी प्रेरणाने आया हू। जरा भी दुःखी न होता। वाजकल किसीको पत्र नहीं लिखता। अक बाको लिखा था, यह तुझे लिख रहा हू।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,

कैदी,

फस्ट मेम्बरके मारफत,

राजकोट

१४२

मेवाप्राम-वर्षा,

४-५-४०

चि० मणि,

तेरे भेजे हुअे आकडे अच्छे हैं। मुझे पत्र लिखनेकी अपेक्षा तू काने तो अधिक अच्छा।

बापूने पूछना कि वे अक हजार में अन्हें भेजूं या सीधे पृथ्वी-सिंहको। बापूकी तबीयत कैसी रहती है?

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन,

मारफत सरदार पटेल,

६८, मरीन ड्राइव,

बम्बयी

१२८

सेवाग्राम-वर्धा,

१३-६-'४०

चि० मणि,

यहां आओ तब 'वलवंतसिंह' के लिये एक अलार्मवाली घड़ी लेते आना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
मारफत सरदार पटेल,
६८, मरीन ड्राइव,
बम्बई

सेवाग्राम-वर्धा, सी. पी.

७-५-'४१

चि० मणि,

नंदूवहन (कानूगा) तेरी खूब शिकायत कर रही थीं। कहती थीं, हठ करके शरीरको गला रही है। अच्छी तरह खाती नहीं। मैं जिन्हें हारनेके लक्षण मानता हूं। सत्याग्रही अपना शरीर अच्छा ही रखता है। जिसलिये मेरी खास सिफारिश है कि तू शरीरको सुधार।

सब बहनोंको आशीर्वाद। वहांके कामके समाचार मिलते ही रहते हैं।

मेरा स्वास्थ्य उत्तम रहता है। वा दिल्लीमें है। बहुत दुबली हो गयी है।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
प्रिजनर,
बरवडा सेण्ट्रल प्रिजन,
बरवडा

१. वहांके एक आश्रमवासी।

चि० मणि,

तेरा पत्र आज मिला। आशा तो रखता हूँ कि यह तुझे जेलमें ही मिलेगा। एक पत्र मैंने तेरे लिजे डाह्याभाजीको भेजा है। यह अच्छी खबर है कि तूने अपने स्वास्थ्यको सभाला है।

छूटने पर तुझे थोड़े समय बम्बयी रहना हो तो जहाँ रहकर मेरे पास आ ही जाना। अहमदाबाद^१ के बारेमें मृदुला और गुलजारीलाल^२ आये हैं। यही हैं। बातें हो रही हैं। बापूको या तुझे जेलमें बैठकर ऐसी बातका विचार ही नहीं करना चाहिये। अधिक लिखनेकी जरूरत नहीं। जमनालालजीके बारेमें चिन्ताका बिल्कुल कारण नहीं। सब ठीक हो रहा है। मनु त्रिवेदी^३ भजेमें है। वा थोड़े दिनोंमें दिल्लीमें आ जायगी। लीलावती (आसर) अुनके साथ है।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,

प्रिजनर,

यरवडा सेंट्रल प्रिजन,

यरवडा, पूना

१ अहमदाबादके हिन्दू-मुस्लिम दंगेका अुल्लेख है।

२ श्री गुलजारीलाल नदा। अहमदाबाद मजदूर-संघके मंत्री। कुछ समय बम्बयी राज्यके थममंत्री। आजकल केन्द्रीय सरकारके राष्ट्रीय योजना मंत्री और राष्ट्रीय योजना-आयोगके अुपाध्यक्ष।

३ पूनाके सेवामावी सज्जन स्व० प्रो० जे० पी० त्रिवेदीके पुत्र।

चि० मणि,

तुझे अेक पत्र लिखा है। जेलमें मिलना चाहिये। यह तेरे पत्रके उत्तरमें है। पत्र कल मिला और रातसे पहले नहीं पढ़ सका।

तेरी तरह मैं यह कैसे मानूं कि यदि मैं अहमदावादमें होता तो जो दंगा हुआ वह न होता? आज किसीके लिये ऐसा कहना मुश्किल है। मैं जीश्वरके चलाये चलता हूं। उसने मुझे यहां डाल दिया है। मैं जानता हूं कि गुजरातमें ऐसे बहुतसे गांव हैं जहां मैं बस सकता था।

मनुभाजी^१ बड़ी बहादुरी दिखला रहे हैं। कल ही सारा परिवार प्रार्थनामें आया था।

वा. तो आजकल नबी दिल्लीमें (निमोनियासे) रोगग्रय्या पर पड़ी है। बुखार आता है। लिखती है कि चिन्ताका कोई कारण नहीं। कल मैंने लीलावतीको वहां भेजा है। जानकीबहन^२ की तबीयत बहुत अच्छी कही जा सकती है। नंदूबहनने किस आवार पर खराब बताया? वे पहले कभी नहीं घूमती थीं अुतना आजकल घूमती हैं। अच्छी तरह खाती हैं।

कनू^३ की सगाजीकी बात लटक रही है। अभी तो नहीं होगी, यही मानकर चलना है। लड़की भी अपने घर गयी है।

मीराबहन चोरवाड़में गरमी बिता रही हैं। दुर्गाबहन^४ की तबीयत अच्छी होती जा रही है।

१. प्रो० त्रिवेदीके पुत्र। त्रिवेदीके देहान्तका अुल्लेख है।

२. स्व० जमनालालजी वजाजकी पत्नी।

३. श्री नारणदास गांधीका पुत्र।

४. स्व० महादेवभाजी देसाजीकी पत्नी।

तू वहाका काम ठीक करके दो तीन दिन मेरे साथ रह जाय,
यह मैं जरूर चाहता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

चि० डाह्याभाजी,

मणिवहन आये नव यह पत्र अुमे दे देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाजी पटेल,
६८, मरीन ड्राइव,
बम्बई

१४७

सेवाग्राम-वर्धा, सी पी,

११-८-'४१

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला था। किशोरलालभाजी^१ ने तो जवाब दिया
ही। भानुमती^२ का अँसा क्यों हुआ? डॉक्टर क्या कुछ भी नहीं कह
सकते? बेबीका जीना कठिन है। जिये तो भी शायद दुर्बलता रह
ही जायगी।

बापूको मेरे पत्र पहुँचे क्या? जल्दी पहुँचें अिसलिअे दोहरी
सावधानी तो रखी थी।

तेरे परेशान होनेका कुछ भी कारण नहीं। हर हालतमें जेल
जानेका धर्म थोड़े ही है। बाहर^३ बैठकर तू बापूका ही काम कर

१ आश्रमवासी स्व० किशोरलाल घ० मशरूवाला।

२ मेरी भाभी।

३ गुजरातमें बाढ-सकट आया था। अुसके लिअे चदा करनेमें
मैं महादेवभाजीके साथ लगी हुअी थी।

रही है। बिस समय जेलमें जायगी तो मनको झूठा संतोष देगी।
जानेका समय आने पर तुझे अेक क्षणके लिये भी नहीं रोकूंगा। अभी
तो जो गुजराती काम करें अुन्हें काम देते रहना है।

तुझे अच्छे अंजीर मुझे पांच पाँड भेजना।

वह व्याकरण मिल गया है।

महादेव आ गये होंगे। अब तक कितना चंदा हुआ? यहां ठीक
चल रहा है।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल और

श्री महादेव देसाजी,

६८, मरीन ड्राइव,

बम्बजी

१४८

सेवाग्राम,

३१-८-'४१

चि० मणि,

तुझे तो मैं जान-बूझकर नहीं लिख रहा था। अभी तुझे जेलमें
नहीं भेजना है। समय आने पर तो भेजूंगा ही। तू बाहर रहकर भी
काम तो कर ही रही है। तुझे भेजनेका समय जरूर आयेगा। अभी
तो निश्चिन्त होकर सेवा करना और अपना स्वास्थ्य अच्छा कर लेना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,

६८, मरीन ड्राइव,

बम्बजी

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। तूने मारा व्योरा^१ भेजा मो ठीक किया। मैंने कल जमावाला^२ का पत्र भेजा है। उसके अनुसार तुरत अलाज करनेका मेरा तो आग्रह है। तबीयत बहुत गिर जानेके बाद अलाज देकार भी जा सकता है। डॉ० नाथूभाजी^३ से चर्चा कर लेनेकी मुझे तो जरूरत मालूम होती है।

मुझे बराबर समाचार देती रहना।

बापूके आशीर्वाद

श्री भणिवहन पटेल,
६८, मरीन ड्राइव,
बम्बई

चि० मणि,

चि० डाह्याभाजी लिखते हैं कि तू कल छूट रही है। वे यह भी कहते हैं कि तेरा स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। आनेकी सुविधा हो तो तू यहा आ ही जाना। न आ सके तो पूरा पत्र लिखना। तुझसे मिलनेको तो मैं अतुल्य हूँ ही। बहुत समय हो गया है।

बापूके आशीर्वाद

१ व्यक्तिगत सविनय भगके समय पू० बापूको स्वास्थ्यके कारण जेलसे छोड दिया गया था। उनके स्वास्थ्यके व्योरेवार समाचार मैंने पू० बापूजीको लिखे थे।

२ बम्बईके अेक प्राकृतिक चिकित्सक।

३ डॉ० नाथूभाजी पटेल, अेम० डी०, बम्बईके अेक प्रसिद्ध डॉक्टर।

चि० मणि,

तूने पत्र ठीक लिखा। मैं जानता हूँ कि दूध वगैराकी सुविधा वापू प्राप्त कर लेंगे।^१ जिसलिअे चिन्ताकी बात ही नहीं।

तेरा स्वास्थ्य विलकुल सुधर जाना चाहिये। तू अितने अधिक अेकाशन करती है, जिसके औचित्यके वारेमें मुझे शंका है। तेरे साथ मैंने चर्चा नहीं की, परन्तु मनमें यह बात बनी रही है। जिसे लिखनेका विशेष हेतु तो यह है कि अहमदावादका काम निवटाकर तुझे यहां आ जाना है, यह याद रखना।

वहां सबको आशीर्वाद। डॉ० (कानूगा) अच्छे होंगे।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन वल्लभभाभी पटेल,
मारफत डॉ० कानूगा,
अेलिसब्रिज,
अहमदावाद

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। पढ़ा। पढ़ते ही फाड़ दिया। भूलसे रख लिया था, परन्तु निजी देखकर तुरन्त ही मेरे पास पहुंचा दिया।

परन्तु तूने जो लिखा अुसमें निजी क्या है? मैंने तो तेरे सम्मानके लिअे और तुझे निर्भय करनेके लिअे ही फाड़ा है और अैसा ही तेरे पास भेज दूंगा।

१. पू० वापू अुस समय अहमदनगरके किलेमें नजरबन्द थे। अुनके स्वास्थ्यके समाचार मेरे नामके पत्रमें आये थे। वे मैंने पू० चापूजीको लिखे थे।

अपवाद तो शायद हममें सबसे अधिक मैंने किये होंगे। दक्षिण अफ्रीकामें तो चाहे जिस बहाने कर डालता था। एक वर्षसे अधिक समय तक अेकाशन भी किया। मेरी राय है कि अिमकी अपेसा अल्पाहार बहुत बड़ी चीज है। अपवादका स्थान है, मगर मृत्युके निमित्त हरगिज नहीं। जन्मके निमित्त क्यों नहीं? मैंने यह भी किया है, परन्तु विचार करके छोड़ दिया। अिससे तू अपने अेकाशनकी बात समझ ले। शरीर जोश्वरका घर है। उसे ज्योका त्यों ही रखना चाहिये।

तेरा सुधडपन क्या मैं नहीं जानता? मोतीलालजीने ' तो तुझे पहला नम्बर दिया था। परन्तु तुझे साधियोंके प्रति अुदार रहना चाहिये। तू अँसा नहीं करती अिमलिजे तेरा पडोमी-धर्म भग होता है। फिर तू अपना दोष मान लेती है। मानना या तो दोषको पकड रखनेके लिये या दोषको निकालनेके लिये होता है। क्या तू दोषको निकालना नहीं चाहती? तू अपनी सुधडता दूसरोको दे और अपनीकी रक्षा तो कर ही। मेरी तरह अपने लायक साफ कर लेना। जेलमें रहकर भी यह कला नहीं सीखी? महादेवके पाससे तूने क्या लिया? अुनकी अुदारता तूने देखी थी?

अितना तो तेरे लिये बहुत हो गया। अगर पूरा जवाब मिल गया हो तो यहा आ जा। मेरे लिये मत आना। आये तो धर्म समझकर और मनको अुदार बनाकर या बनानेके लिये आना। अगर तुझे दुरा लगा हो तो यहा आकर क्या लेगी? अपने दोषोंको पहाडके समान मानें, और दूसरोके दोष पहाड जैसे हो तो भी अुन्हें रजक्णके समान मानें तब मेल बैठेगा।

कुछ भी खानगी न रखनेका नियम बना ले तो अिसकी नकल भेज देता। बहुतोंके समझने लायक है।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिवहन वल्लभभाभी पटेल,
मारफत डॉ० कानूंगा,
अहमदाबाद

१ पंडित मोतीलाल नेहरू।

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। वह स्पष्ट है।

अपवासके वारेमें तू लिखती है, अतः मैं सूचित करता हूँ कि
 उसे केवल शरीर-शुद्धिके लिये ही कर। तब तुझे खुद ही अपना
 पता लग जायगा। और उसका आध्यात्मिक फल मिलनेवाला होगा
 तो मिल जायगा और तू वहम या आडम्बरसे बच जायगी। महादेव
 या वाके लिये और कुछ नहीं तो अपवास तो करें, यह विचार
 बिल्कुल गलत है। वे जानते हों तो उन्हें क्लेश ही हो। प्रियजन
 चल वैसे तब उनके लिये उनका प्रिय और कठिन काम हम करें।
 जिसलिये महादेव जैसे मीठे बननेकी कोशिश करें। वाके समान
 आस्तिक बननेका प्रयत्न करें। ये दो अदाहरण तो जवान पर आ
 गये, जिसलिये दे दिये। दूसरे और दिये जा सकते हैं। शरीर केवल
 अश्वरके रहने या आत्माको पहचाननेका घर है यह जान लें, तो
 सब कुछ अपने आप ठिकाने आ जाय। ऐसा हो जाय तो धर्मके
 नाम पर चल रहा ढोंग मिट जाय। तेरा जीवन सरल है जिसलिये
 और बहुतसे प्रलोभनोंको तू पार कर सकी है जिसलिये मैं जितना
 परिश्रम तेरे लिये कर रहा हूँ। तू सब तरहसे अँची अठ जाय तो मैं
 जानता हूँ कि तू बहुत अधिक काम कर सकती है।

जिसी कारणसे तुझे यहां अथवा आश्रममें खींच लाना है। बापू
 स्वयं यही चाहते हैं, जिसलिये तुझे खींचनेका मनमें अधिक उत्साह
 होता है। ऐसा हो तब तो तू भी नहीं चाहेगी और मैं भी नहीं चाहूंगा
 कि एक घड़ी भी तू उन्हें छोड़कर कहीं रहे। और तू मेरे आसपास होगी
 तो तुझमें सहनशीलता बढ़ेगी, क्योंकि यह स्थल ऐसा है जहां अनेक
 स्वभावोंके अनुकूल बननेकी और अलिप्त रहनेकी जरूरत है। अर्थात्

हम गुणग्राही बनकर रहें। दूसरोंका अवलोकन करके हम उनके गुणोंका अनुकरण करें, और अवगुणोंको सहन करें, क्योंकि अवगुणोंको दूर करनेका सबसे अच्छा अुपाय यही है। इसलिये जल्दी आना।

नदूबहन, दीवान मास्टर,^१ कानूंगा वगैराके समाचार तूने भेजे यह ठीक किया।

अब तो सवेरा हो गया और रोशनी बुझा रहा हू, इसलिये बस।

वहा सबको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल,
मारफत श्री डाह्याभाभी पटेल,
मरीन लाजिन्स,
वम्बयी

१५४

महाबलेश्वर,
५-५-'४५

चि० मणि,

तूने अच्छा पत्र लिखा। जो खबर तूने दी वह और कोयी मुझे न देता। सायका पत्र कानजीभाभी^२ को दे आना। अब तो तू यहा आनेवाली है, इसलिये अविक नही लिख रहा हू। कल नरहरि (परीख), मणिलाल (गाधी), कमलनयन^३ और सत्यनारायण^४ आये थे।

१ स्व० जीवलाल दीवान।

२ श्री कन्हैयालाल नानाभाभी देसायी। गुजरात कांग्रेस समितिके १९४६ से १९५६ तक अध्यक्ष। १९४६ से संविधान-सभाके सदस्य। उसके बाद १९५६ तक लोकसभाके सदस्य।

३ श्री जमनालाल बजाजके पुत्र।

४ दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार समितिके मंत्री।

आज मुन्शी आयेंगे। कमलनयन और मुन्शी तो जैसे आये वैसे चले जायेंगे।

तुम सबको

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
मारफत श्री डाह्याभाजी पटेल,
६८, मरीन ड्राइव,
बम्बयी

१५५

(सेवाग्राम)

२५-७-'४५

चि० मणि,

अब तू क्यों पत्र लिखने लगी? मुझे आशा भी नहीं रखनी चाहिये।

यह तो तुझे पुष्पा^१ के वारेमें लिख रहा हूं। वह बहुत दुःख पा रही है। उसने मुझे मिलनेको लिखा है। परन्तु तू उससे मिलने जायगी तो ठीक है। वह अपने घर तो होगी ही। पता है: नजी हनुमान गली, शरडाकी चाल, दूसरी मंजिल, कमरा नं० १२, मणिलाल पोपटलाल दोशीके मारफत।

तेरा स्वास्थ्य ठीक होगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
मारफत श्री डाह्याभाजी पटेल,
६८, मरीन ड्राइव,
बम्बयी

१. बम्बयीकी यह लड़की घरसे भागकर पू० बापूजीके पास चली गयी थी। उन्होंने उसे समझाकर घर वापस भेज दिया था। पर वह फिर आश्रममें लौट आयी। आजकल श्री भणसालीके पास आश्रममें रहती है।

चि० मणि,

तेरे दो पत्र मिले। कानजीभाजीके नामका पत्र तेरे पास भेज रहा हूँ। तू अपनी डाकके माध्यम से देना।

यस्यवद्वा पैक्टके धारेमें एक समालोचना विचार कराना। पैक्टमें दस वर्षकी बात है। परन्तु वह १९३५ के कानूनमें नहीं है। तो युक्त अमल कानूनमें कराया जा सकेगा या नहीं? पकवाना^१ विचार करें। कौमलमें मिलना हो तो मिलें। मेरी राय स्पष्ट है। कानून सहायता न भी करे। राजनीतिक रूपमें लड़ा जा सकता है, जिस विषयमें दो मत नहीं हो सकते। यह जरूर सोचना है कि जिस समय यह लड़ाई छेड़ी जाय या नहीं। परन्तु जिसकी चर्चा तुम्हारे महा आने पर कर लेने।
बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
६८, मरीन ड्राइव,
बम्बयी

१५७

[यह पत्र पू० बापूजीने मोनमें लिखा था।]

(बाल्मोकि मंदिर,
नजी दिल्ली,
१९४५ के बाद)

नकल करनेका काम तो बनूकी सौंपा है। मैंने तुझसे कहा था कि कतूमे लिखवाना। तेरी की हुअी नकल है, जिसलिजे जिसे पास करता हूँ। और यही दूंगा। परन्तु जिममें दोष है। हमेशा हागिया जरूर छोड़ना चाहिये। रोज पत्र आने हैं। युक्त तू अवलोकन करती

१. श्री भगन्दास पकवासा बम्बयीके एक सालीसिटर। बम्बयीकी कॉमिलके अध्यक्ष थे। आजकल मध्यप्रदेशके गवर्नर।

हो तो पता चलेगा कि तैयार किये हुअे पत्रोंमें हाथिया जरूर होता है। अब दूसरा मत लिखना। यह तो भविष्यके लिअे तुझे शिखा है। यह तो मैंने तुझे सिर्फ बता दिया।

१५८

सेवाग्राम,

१४-२-'४६

चि० भणि,

तेरा पत्र मिला। तूने अच्छे समाचार दिये हैं।

'धारासमानो मोह' (विधान-सभाओंका मोह) गुजरातीमें होने पर भी सबके लिअे है।

अखबारकी कतरन लौटा रहा हूं।

तेरे सुझावों पर जितना अमल हो सकेगा करूंगा।

तू अपना स्वास्थ्य संभालना। अब तो जल्दी ही मिलना है, विसलिअे अधिक नहीं लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

१५९

१८-३-'४३

चि० भणि,

यह पत्र देखना। सरदारको पढ़ाना हो तो पढ़ा देना। अगर न मिले तो यह बात ही मत करना। जो होता है वह ही जायगा।

बापूके आशीर्वाद

अखबर का पत्र लौटा देना या भेज देना।

१. देगिये, 'हरिजनमेधा', १०-२-'४६, पृ० ८।

२. श्री अखबरनाशी नाथन। नज्जामुल्ले रसूलिनी मेवासास आश्रमनिवासी। आजकल लोकमान्य नगर।

१४१

चि० मणि,

मायका पत्र^१ पढ़कर जो करता हो सो कर। तेरी अनन्य
दिनभक्तिने तेरे हाथोंमें महान सेवा करनेका अवसर दिया है। जिसका
जो उपयोग करना हो करना।

खाकमारों^१ के बारेमें जो पत्र मैंने लिखा उसमें कुछ तथ्य है क्या ?
अन लोगोंने ध्यौरेबार लिखा है।

सायका पत्र राजकुमारीको देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन,

ठि० सरदार पटेल,

१ बीरगजेव रोड,

नजी दिल्ली

चि० मणि,

सायके पत्र पर तो डाह्याभाजीको हस्ताक्षर करने हैं, जैसा लगता
है। तू देख लेना। मुझे तो अिन विभागका पता भी नहीं। शायद
आश्रमके हस्ताक्षर चाहिये। तू देख लेना और फिर जो करना हो
वह लिखना।

काश्मीरके बारेमें तो मैं सरदारको लिख चुका हू। वह मिला
होगा। लम्बा वयान जो जवाहरलालको भेजा है वह सरदारके लिखे
भी है।

१ निर्वासित-सम्बन्धी पत्र।

यहां तो समस्या अलझी हुई है। आशा तो है कि सुलझ जायगी। मैंने कल भाषणमें जो कहा उससे पता चलेगा कि मुझे यहां क्यों रुकना पड़ा।

प्रफुल्ल वगैरा मिलते रहते हैं।

खाकसार लाहौरमें मिले थे। उन्हें पत्र दिया था तो मिला होगा। कामसे सांस लेनेकी भी फुरसत मिलती है या नहीं?

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
ठि० सरदार पटेल,
१ औरंगजेव रोड,
नयी दिल्ली

१६२

कलकत्ता,
१३-८-४७

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। हस्ताक्षर करनेके कागज मैंने तुझे ज्योंके त्यों वापस भेज दिये। मैंने ऐसा समझा है कि अनु पर मेरे हस्ताक्षरोंकी जरूरत नहीं है।

बरसातके बिना क्या होगा? यह स्वतंत्रता महंगी पड़ती मालूम होती है।

मालूम होता है सरदारके स्वास्थ्य पर बिल कामका पूरा-पूरा बोझ पड़ेगा।

साथका पत्र पढ़कर सरदारको पढ़वा देना।

अनुका अंक भी मिनट लेना चोरी करने जैसा लगता है।

बापूके आशीर्वाद

मणिवहन पटेल,
नयी दिल्ली

१. गुजरात, काठियावाड़, कच्छमें बिल साल भारी बकाल था।

चि० मणि,

तुझ पर मुझे दया आती है। परन्तु दया कैसी ? तू भार बुठाने योग्य है। थिमलिजे बुठानी रहना और सरदारका भार कुछ हल्का करना।

रामस्वामी^१ को बट्टव चोट आजी, यह तो तुझसे सुना। अक पत्र बैसा था जरूर, परन्तु मैंने अक पर विश्वास नहीं किया था। मैंने तो पत्र लिखा ही नहीं था। अब लिखूंगा।

साथके पत्र पहुँचा देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,

नयी दिल्ली

चि० मणि,

सब पत्र साथमें हैं। मयात्पान पहुँचा देना। तुझ पर हृदमे ज्यादा काम तो नहीं लाद रहा हूँ ? जिसी तरह सब पत्र जल्दी पहुँचा सकता हूँ। जवाहरलालवाला पत्र सरदारको पठवाकर जिस तरह जल्दी मिले अक तरह भेज देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,

नयी दिल्ली

१ बावणकोरकी अक समामें सर सी० पी० रामस्वामी पर हमला हुआ था और अन्हें गभीर चोट आजी थी।

चि० मणि,

तुझे कामका भार नहीं लगता, यह अच्छा है। कांजी तो सरदारके पास पूरा हाथ बंटानेवाला चाहिये।

मेरा पत्र तू अगुहें फुरसतमें पढ़ाना।

मुगीला^१ का अन्ते भेज देना।

यहां तो कल रातको अकल्पित बात हो गयी है। जिन्हें छुरा लगा कहा जाता है अन्हें छुरा लगा ही नहीं। दो आदमी लड़े तां जल्द थे। धुनमें वह हार गया। अधिक पता अब चलेगा। अभी नहाकर आया और यह लिखने बैठा हूं।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
नयी दिल्ली

चि० मणि,

मत्र पत्रोंकी व्यवस्था कर देना। तू तो मेरे अपवासको अिगारेमें समझ गयी होगी। राजाजीने बहुत मायापच्ची की, परन्तु जैसे जैसे वे दलील करते गये वैसे वैसे मैं मजबूत होता गया। पंद्रह दिनकी दोस्ती झूठी ही थी क्या? ^१

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
नयी दिल्ली

१. पू० वापूजीके मंत्री श्री प्यारेलालकी बहन डॉ० मुगीला नैयर। दिल्ली विधान-सभाकी सदस्य थीं। आजकल अध्यक्ष।

२. कलकत्तेमें थोड़े समय जो गान्ति रही थी वह।

चि० मणि,

आज वहाँके लिजे खाना हो रहा हूँ, जिसलिजे जितना हो।
मेरा रुदन तो ठीक है, मगर अममें सार नहीं है। जितने दवावके बाद
दिल्ली तो आना ही चाहिये। वहाँ सरदार और जवाहर निश्चय
करेंगे कि क्या किया जाय। मेरे रहनेकी व्यवस्था जुन्हें जहा करनी
हो वहा करें। बिडला हाजूमका मैं वहिष्कार नहीं करता। परन्तु
बाराम मिले या न मिले मुझे भगी-निवास अच्छा लगता है। सरदारकी
आवृत्त भी मुझे वही रखनेमें है। रातको वहा कोअी न आ सके,
जिममें हर्ज नहीं। गाढी दिल्ली अकमप्रेम। ब्रजकृष्ण^१ मे कह देना।
वापूके जागीवाँद

श्री मणिवहन पटेल,
नजी दिल्ली

१६८

(बिडला भवन,
नजी दिल्ली)
२९-९-४३

चि० मणि,

मायमें नारणदान गाधीका पत्र है। जुन्हें तार देकर मेरा जवाब
मिलने तक रोक दिया है। परन्तु क्या करना चाहिये, यह सरदारसे
पूछकर मुझे बताना।

१ दिल्लीके श्री ब्रजकृष्ण चादीवाला। पू० वापूजीके अंक भक्त।

दूसरी चीज पट्टणीका^१ तार है। वहां भी यही आया होगा।
असका क्या करना है? मैंने समझा है कि शामलदास^२ जो कुछ करता
है वह सरदारकी सहमतिसे करता है। जिसका उत्तर भी पूछ कर
बताना।

दोनों चीजें वापस भेज देना।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
मारफत सरदार पटेल,
नयी दिल्ली

१६९

न० दि०
२९-१२-'४७

चि० मणि,

पत्रवाहक सेवकराम हरिजनोके शुद्ध सेवक है। सब हरिजनोंको
सिक्के लाना ही चाहिये और बम्बयी बिलाकेमें कच्छ, काठियावाड़, गुज-
रात, अुदयपुर, जोधपुर वगैरामें बसा ही देना चाहिये। जिसके लिये
सरदार जितना कर सकें अुतना करें।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
मारफत सरदार पटेल,
नयी दिल्ली

१. भावनगरके श्री अनंतराम पट्टणी।

२. स्व० शामलदास गांधी। पू० वापूजीके भतीजे।

(विडला भवन,
नयी दिल्ली)
१३-१-४८

चि० मणि,

आज मरदारके साथ चान हुआ। जिसलिजे अब और नहीं।
मुझे बहावलपुरके^१ लोगोंमें मिलना है। फिर बुलाऊंगा। मुझे गलत-
फहमी कैसे हुआ, यह समझमें नहीं आता। उसे ठीक करूंगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिवहन पटेल,
नयी दिल्ली

१ बहावलपुर राज्यके, जो पाकिस्तानमें चला गया है, सरकारी
नौकर।

पूर्ति

डाह्याभाजी पटेल तथा अनुके पुत्रको

१

यरवडा मंदिर,

७-८-३२

चि० डाह्याभाजी,

महादेवके चश्मेका एक कांच टूट गया है, जिसलिसे वे परेशान होते हैं। यहां वह कांच मिल नहीं सकता। यह चश्मा पिछले साल जून-जुलाजीमें डॉ० भास्करने^१ फोर्ट-स्थित व्हिटनकी कंपनीमें बनवाया था। उसका नम्बर व्हिटनके यहां जरूर होगा। लेकिन वहां न मिले तो डॉ० हीरालाल पटेल^२, जिन्होंने महादेवकी आंखोंकी परीक्षा की थी और नम्बर दिया था अनुके यहां यह नम्बर मिलेगा। अगर भास्करसे मिला जा सके तो अनुसे मिलकर व्हिटनकी दुकानसे यह नम्बर निकलवाना और चश्मा बनवाकर तुरन्त भेजना। जिस चश्मेके कांच और डंडीका माप भी जायद अनुके वहां होगा। परन्तु न हो तो माप साथवाले पत्र पर भेजा है। भास्कर न हो तो डॉक्टर हीरालालसे मिलना वे बनवा देंगे। भास्करको पिछले सप्ताह महादेवने एक रजिस्टर्ड पत्र भेजा था। वह अनुहें मिला नहीं दीखता। करमचन्दकी पत्नी अब विलकुल अच्छी होंगी।

१. डॉक्टर भास्कर पटेल, जिन्होंने वम्बजीमें लड़ाईके दौरानमें कांग्रेसका कामचलायू अस्पताल चलाया था। अनुकी सेवाओं वोरसद प्लेग निवारण कार्यमें बहुत अपयोगी सिद्ध हुयी थीं। १९५१ से १९५६ तक वम्बजीकी विधान-सभाके सदस्य। १९५६ से वम्बजी राज्यके मद्य-निषेध विभागके उपमंत्री।

२. वम्बजीके आंखोंके एक डॉक्टर।

मणिबहनका पत्र अभी जिन दिनोंमें तो नहीं आया। महादेवका काम चश्मेके बिना चन्द हो गया है। अिमलिअे जल्दी भेज देना।
वावा भजेमें होगा। हम तीनों भजेमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

आज बापूने डॉ० अन्मारीको तुम्हारे पते पर एक पत्र लिखा है। वह अुन्हे पढुचा आना। वे ११ तारीखको बम्बयीमें खाना होनेवाले है, अिसलिअे नी दस तारीखको तो बम्बयीमें ही होंगे।

अुस्मान सोभानीके महा ठहरे होंगे। नहीं तो जहा ठहरे हो वहाका पता अुस्मानके यहासे मिलेगा। तलाश करके पत्र पढुचा आना।

बापूके आशीर्वाद

वि० डाह्याभाजी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बयी-४

२

य० म०

२६-१०-३२

वि० डाह्याभाजी,

मणिबहनका पत्र भी अब तो तुम्हे नियमित मिलना सम्भव है। अिमलिअे तुम्हारे पढने या सुननेकी सामग्री बढ गयी। परन्तु माहिल्य पढनेके साथ अब तुम्हारे विस्तर छोडनेका समय भी नजदीक आता जा रहा है न? फिर भी विस्तर छोडनेकी अधीरता न हानी चाहिये। यह तो जानते हो न कि विस्तरमें भी सेवा हो सकती है?

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाजी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बयी-४

१ बम्बयीके अेक मिल-मालिक

चि० डाह्याभाभी,

तुम्हारे स्वास्थ्यके समाचार रोज मिलते रहते हैं। ऐसी व्याधियां भी हमारी परीक्षाके लिये आती हैं। तुम खूब धीरजसे सहन कर रहे हो, ऐसा भाभी करमचन्द्र लिखते हैं। तुमसे यही आशा रखी जा सकती है। मणिवहनकी चिन्ता न करना।

प्रभु तुम्हारी रक्षा करेगा ही।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाभी पटेल,

रामनिवास,

पारेख स्ट्रीट,

वम्बजी-४

४

चि० डाह्याभाभी,

देवदास तुम्हारे कुशल-समाचार देता है और कहता है कि हमारे पत्र तुम्हें रोज मिलें तो तुम्हें प्रसन्नता होगी। हम तो जान-बूझकर तुम्हें नहीं लिखते, यद्यपि रोज आशीर्वाद तो जाते ही हैं। रोज तुम्हारा स्मरण होता है। अब पत्र भी मिलेंगे।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाभी पटेल,

रामनिवास,

पारेख स्ट्रीट,

वम्बजी-४

चि० डाह्याभाजी,

मि० नटराजन दिवते है

" I have every hope and pray that Dahyabhai will pull through the remaining few days without complication His age and active habits and his naturally strong constitution are most potent assets He is a favourite at our home, having been with us nearly all the time when he was living with his uncle He calls Kamakoti¹ 'Akka' like her brothers and sister and is always a welcome visitor without any ceremony² "

अुन्हे मैंने पत्र लिखा था । अुसके अुत्तरमें अुन्होंने जो पत्र लिखा था अुसीमें से अुपरका अुद्धरण दिया है । कल भाजी करमचन्दका पत्र देखे मिला था । मैं अस्पृश्यताके बारेमें आये हुअे लोगोंके साथ व्यस्त था, अिसलिजे कल नहीं लिख सका । मालूम होता है तुम्हारा बुखार धीरे धीरे जुतरता जा रहा है । अच्छी तरह आराम लिया जाता हो और खाने-पीने वगैराके नियमोंमें भूल न होती हो तो टाइफाइड

१. स्व० नटराजनकी लडकी ।

२ मुझे पूरी आशा है और मैं प्रार्थना करता हू कि, बाकीके थोडे दिन डाह्याभाजी बिना किसी अुपद्रवके निकाल देंगे । अुनकी अुमर, सक्रिय जीवन तथा स्वाभाविक रूपमें मजबूत शरीर अुनके हकमें है । हमारे घर वे सबके लाडले हैं । जब वे अपने चाचाके यहा रहते थे तब अधिक समय हमारे यही बिताते थे । कामकोटीको अुनके भाजियों और बहमके साथ वे भी 'अक्का' कहते हैं । हमारे यहा वे घरके सदस्य जैमे ही हैं ।

बुखारसे फायदा ही होता है, क्योंकि शरीरसे सब जहर निकल जाता है।

तुम आनन्दमें होगे।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाजी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
वस्वजी - ४

६

य० मं०

२७-११-'३२

चि० डाह्याभाजी,

बाज तुम्हारी तबीयतके और भी अच्छे समाचार हैं।

कल मैं लिख चुका हूँ कि बीमार भी सेवा कर सकता है। वह जिस प्रकार मिली हुआ शान्तिका उपयोग भगवानका चिन्तन करनेमें करे, अपने क्रोधको, अपनी अधीरताको रोक कर सेवा करनेवालोंमें प्रेम फैला कर करे। पश्चिमका और अंक यहाँका अुदाहरण मेरे सामने हैं। फ्रांसकी अंक अठारह वर्षकी लड़कीने अपनी अत्यंत गंभीर बीमारीमें अपनी मुगध बितनी फैलायी कि अब अुसे 'सेण्ट' की पदवी मिली है। अुतने तो अखण्ड निद्राका सेवन किया।

पोरबन्दरके पास विलखाके लावा महाराजको कोढ़ हो गया था। वे विलखाके शिवालयमें आसनवद्ध होकर बैठ गये। नित्य रामनाम जपते। रामायण पढ़ते। अन्तमें रोगमुक्त हुअे और प्रत्यात क्याकार बने। अुन्हे मैंने देखा था। अुनकी क्या सुनो थी।

जो श्रीशवर-भक्त है वह तो बीमारीका भी गदुपयोग कर सकता है। बीमारीसे हारना नहीं।

बापूके आशीर्वाद

वि० डाह्याभाजी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
सेण्डहस्ट रोड,
बम्बयी - ४

७

य० म०

१७-१२-३२

वि० डाह्याभाजी,

तुम्हारा काम अभी पूरा नहीं हुआ, परन्तु तुम हिम्मत नहीं हार सकते। रोगका मिटना रोगी पर आधार रखता है, यह जानते होले। रोगी कभी निराश होता ही नहीं और ज़खीर भी नहीं होता। जब तक दुःख भोगना ही तब तक भोगे, परन्तु धुमके साथ जूझता रहे। सभी देवानों और मारी खुराकोंमें रामनाममें अधिक शक्ति है, यह अनुभव न किया हो तो कर देयना। शक्ति शक्ति विद्युत-शक्तिने अधिक है। वह तुम्हें शान्ति और बुत्साह देगा। तुम पत्र लिखनेका लोभ रखते दिख्वाओ देने हो। यह लोभ छोड़ना चाहिये। तुम्हारा वर्तमान जिस समय पूरा आराम लेना है। विनोदमें दो वाक्य मित्रोंको या हमारे जैसे बुजुर्गोंको लिखाये जा सकते हैं, परन्तु दफ्तरके कामका विचार नहीं किया जा सकता। अतना मान लेना। ईश्वर तुम्हारा कल्याण ही करेगा।

यह पत्र मैंने बायें हाथसे लिखा है।

बापूके आशीर्वाद

डाह्याभाजी व० पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बयी - ४

(य० मं०)

२०-१२-३२

चि० डाह्याभाजी,

लम्बा पत्र लिखना था, परन्तु समय नहीं रहा। अब तो जल्दी अच्छे हो जाना है। वा, बेलावहन^१ और बाल मेरे साथ बैठे हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाजी पटेल,

रामनिवास,

पारेख स्ट्रीट,

बम्बयी-४

९

(य० मं०)

२२-१२-३२

चि० डाह्याभाजी,

तुम्हारे विषयमें अभी तो जैसे समाचार आ रहे हैं कि मेरे लिखनेकी कोझी बात रहती नहीं। फिर भी अतिनासा लिखता हूँ कि न तो बीमारीका विचार करना, न दफ्तरका। हो सके तो केवल औश्वरको ही याद रखो और गर्दन बुत्तके हाथमें साँप दो। वह भजन याद है? “मारी नाड तमारे हाथे हरि संभालजो रे।”^२

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाजी व० पटेल,

रामनिवास,

पारेख स्ट्रीट,

बम्बयी-४

१. श्री लक्ष्मीदास बासरकी पत्नी।

२. हे हरि! मेरी गर्दन तुम्हारे हाथमें है, जिसकी रक्षा करना।

पनडुटी,

पूना,

२६-८-'३३

वि० डाह्याभाजी,

तुम्हारी ओरसे काओ भी पत्र नहीं, यह आश्चर्यकी बात है। नाभिक अन्तिम बार क्या गये थे? वहाँके जो समाचार हो वे देना। भणिबहनकी क्या खबर है? उनके गाय कौन हैं? उनका स्वास्थ्य कैसा रहता है? धुनमें बोओ मुलाकात करना है? तुम्हारा काम कैसा चल रहा है? यादारा क्या हाल है? मुझमें रोज रोज गस्ति आनी जा रही है। चिन्ताका बिल्कुल कारण नहीं।

बापूके आशीर्वाद

११

बादा,

१४-११-'३३

वि० डाह्याभाजी,

तुम्हारी भावना और तुम्हारे दुःखों में समझना है। मेरी भावना और मेरा मानस तुम भणिबहनके पत्रमें जान सकोगे। जहाँ मैं अलग हो जाऊँ वहाँ क्या करूँ? सिपाहीके हाथसे तलवार छीन लो तो जैसे वह बेकार हो जाता है वैसे मेरे हाथमें सविनय भग छीन लो तो मैं निरम्मा बन जाऊँगा। मेरा सारा जीवन प्रतिज्ञा बद्ध रहा है। मेरी प्रतिज्ञा तो यह है कि या तो मुझे जेलमें रहना चाहिये अथवा बाहर रहूँ तो सारी गस्ति हरिजन-वायमें लगानी चाहिये। दूसरे कामोंमें मैं अपना मन भी नहीं लगा सकता। बिट्टलभाजीके दोष तो उनके साथ गये। उनके गुण बहुत थे। उनका स्मरण हम सबको सुरक्षित रखना है।

१ स्व० काका (श्री बिट्टलभाजी) की स्मरण-यात्राके अवसर पर पू० बापूजी अम्बजी नहीं गये थे। यह पत्र उस प्रसंगको ध्यानमें रख कर लिखा गया है।

और तुम्हें शायद पता नहीं होगा कि बिट्टलभाजीको मैंने पत्र भी लिखा था और उनका मेरे पास मीठा जवाब भी आया था। मेरा निजी सम्बन्ध तो टूटा ही नहीं था। मतभेद सम्बन्धोंमें वाक्क नहीं होते। मुझे तुम्हें वह समझानेकी जरूरत भी नहीं होनी चाहिये। परन्तु मणिवहन लिखती हैं कि तुम्हें और दूसरे भतीजोंको भी कुछ दुःख हुआ है। जिसलिजे बितेना समझानेका प्रयत्न किया है। बल्लभभाजीके बाहर न होनेसे मुझे बड़ी कठिनायी होती है। वे बाहर हों तो पारिवारिक गलतफहमियां दूर करनेका काम मैं उन पर ही छोड़ दूँ। उनके जेलमें होनेसे मुझ पर गलतफहमी दूर करनेका दोहरा भार रहता है। अब भी कुछ दुःख रह जाय तो मुझे दिल खोलकर लिखनेमें जरा भी संकोच न करना।

पत्र वर्गा लिखना।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाजी बल्लभभाजी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बयी - ४

१२

(चिखलदा)

१९-११-'३३

चि० डाह्याभाजी,

तुम्हें मैंने पत्र लिखा है। वह मिला होगा। साथमें गोरधनभाजीका पत्र है। उसे पढ़कर उन्हें देना। तुम्हारा समाधान न हो तो मुझसे

१. भाजी गोरधनभाजी,

मणिवहन लिखती हैं कि श्मशान-क्रियाके समय मैं बम्बयी नहीं आया, जिससे तुम्हें दुःख हुआ है। एक प्रकारसे यह मुझे अच्छा लगता है। तुम्हारा दुःख सूचित करता है कि तुम मुझे कुटुम्बियोंमें मानते हो। ऐसा माननेका तुम्हें अधिकार है। परन्तु मुझे कुटुम्बी मानते

लड़ना तुम्हारा धर्म है, यह न भूलना। वा और मणिके पत्र उन्हें पढ़ा देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाजी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बयी - ४

हो तो जहाँ मेरा काम समझमें न आये वहाँ मुझे पूछना चाहिये। मेरे न जानेमें विट्ठलभाजीके साथ मेरे मतभेदोंका जरा भी स्थान नहीं था। मेरे न जानेका कारण मेरी आजकी परिस्थिति ही थी, मैं केवल हरिजन-कार्यके लिये ही जेलसे बाहर रहा हूँ। यह कार्यक्रम बनाया जा चुका था। सरकारी अकुश जो सहन करने योग्य न हो उसे सहन करनेको मैं तैयार नहीं होता। दूसरी तरह भी मुझे वहाँ अपना कोजी उपयोग नहीं जान पड़ा था। मृत्यु-सम्बन्धी अन्तर-क्रियाके बारेमें मेरे विचार भी मुझे अनुपयोगी बना देते। इस प्रकार जिस दृष्टिसे देखें उसी दृष्टिसे यह दिखेगा कि मेरा वहाँ आना जरूरी नहीं था। अतना ही नहीं, बल्कि अनुचित था। कुछ वार्ते जो हुआ अन्हें मैं तो होने भी न देना। तुम्हें तो जितना ही बता देना काफी होना चाहिये कि विट्ठलभाजीके साथके मेरे (मत) भेद इसमें जरा भी कारणभूत नहीं थे। तुम नहीं जानते होगे कि अणकी बीमारीके समाचार आने पर मैंने अन्हें पत्र लिखा था। और अमका अन्होंने लंबा और मीठा उत्तर भी भेजा था। बीमारी बहुत बड़ी तब तार भी दिया था। अमका भी जवाब मिला था। और तुम्हें भी मैंने सारी बातें बताते रहनेको लिखा था। तुम्हारे तारको मिल-मालिक-सघ (अहमदाबाद)के भत्री गोरघनभाजीका समझ कर अन्हें वृत्तताका पत्र मैंने लिखा। अन्होंने समाचार दिया कि तार भेजनेवाले वे नहीं थे। मुझे आशा है कि अतनी सफाई तुम्हें शान्ति देगी। न दे तो पूछ लेना।

(य० मं०
नवम्बर, १९३३)

चि० डाह्याभाजी,

तुम्हारा पत्र मिला था। परन्तु कामके कारण समय पर उत्तर नहीं दे सका। मणिवहनसे अभी तो हर वार मिल आना ही ठीक है। जाओ तब उससे कहना कि अके दिन भी ऐसा नहीं जाता जब मैं उसका विचार न करता होऊँ। परन्तु चिन्ता तो रत्तीभर नहीं करता क्योंकि उसकी सहन-शक्ति और दृढ़ता पर मेरा पूरा भरोसा है।

वापूके पास जाओ तब कहना कि मैंने पत्र लिखे बिना अके भी सप्ताह नहीं छोड़ा।

काका का वस्तीयतनामा पढ़ लिया। उसे बम्बयीमें स्वीकार करानेमें कठिनाजी तो होगी ही। परन्तु मेरी राय यह है कि बिसके वारेमें हमें कुछ भी नहीं करना है। जो जाना हो वह भले ही सुभाष बोसके हाथमें जाय। मैं मानता हूँ कि वे जो कुछ करेंगे वह सार्वजनिक उपयोगकी दृष्टिसे ही करेंगे।

धावाके समाचार देना। मैं ठीक हूँ।

वापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाजी वल्लभभाजी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बयी - ४

चि० डाह्याभाजी,

तुम्हारा पत्र मिला। तीन पत्र लगभग एक साथ मिले, यह टेलीपैथीया नमूना कहा जा सकता है।

महादेवकी फडी परीक्षा हो रही है। गमन है अन्तः स्वास्थ्य कुछ गिर आया। परन्तु और आश नहीं जायेगी। जीवन्मूर्ति नाम पत्र आया था, उसके जवाबमें मैंने लम्बा सदेशा भेजा है। परन्तु जब तुम्हें लिखनेका अवसर आये तब किस प्रकार लिखना -

Whilst I need not receive Mahadev's letters, he must not think that I cannot have time to read them. The Gita portion was technical and I felt that there was no immediate need for me to give my opinion. And the fact is that I have so little regard for my own technical meaning of the verses. Where the meaning does not fit in with my interpretation as a whole, I should naturally have to examine it, but speaking in general terms one meaning would be to me as good as any other and therefore I should readily accept Mahadev's considered interpretation in preference to my own which after all must have been an adoption of some single author's version. He should, therefore, prosecute his researches and his work of translation without waiting

१ यह पत्र डाह्याभाजीको सम्बोधन करके लिखा गया है। परन्तु सरदारके लिजे था, जो कुछ समय नासिक जेलमें थे। महादेव-भाजी कुछ समय वेल्हाव जेलमें थे और अन्हें श्री जीवन्मूर्ति देमाजीके भारफल लिखा जाता था।

for my opinion. When it is all completed, of course I shall have ample time, God willing, to go through it.

I take it that Mahadev has read B. Shaw's 'Adventures of the Black Girl in her search for God'. I am sending him today 'Adventures of the White Girl in her search for God' by Cff. Maxwell. If he gets it safely, he will acknowledge it in his next letter.¹

मैं बेलगांव पहुँचूंगा तो मणि और महादेवसे मिलनेका प्रयत्न जरूर करूंगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाजी पटेल,
रामनिवास,
पारेख स्ट्रीट,
बम्बयी - ४

१. महादेवके पत्र मेरे नाम आने ही चाहिये ऐसा आज्ञा तो मैं नहीं करता, परन्तु जिससे मुझे यह नहीं लगना चाहिये कि उनके पत्र पढ़नेका मेरे पास समय नहीं है। गीतावाला भाग शास्त्रीय था। और मुझे लगा कि उस पर मुझे राय देनेकी तत्काल जरूरत नहीं थी। असल बात तो यह है कि श्लोकोंका मैं स्वयं जो अर्थ कहूँ, उनके बारेमें मुझे बहुत कम आदर है। कुल मिलाकर मेरी अपनी व्याख्याके साथ जहाँ किसी श्लोकके अर्थका मेल न बैठे वहाँ, जैसा कि स्वाभाविक है, मैं उस अर्थकी जाँच करूँगा, परन्तु आम तौर पर कहूँ तो मेरे लिये तो उसका एक अर्थ दूसरे अर्थके बराबर ही स्वीकार्य होगा। जिसलिये मैं तो अपने अर्थकी अपेक्षा महादेवके बहुत अव्ययनपूर्ण अर्थको तुरन्त स्वीकार कर लूँगा। कारण, मेरा अर्थ तो मेरा स्वीकार किया हुआ किसी एक ही भाष्यकारका अर्थ होगा। जिसलिये महादेवको मेरी रायकी प्रतीक्षा किये बिना अपना संशोधन और अनुवादका काम जारी रखना चाहिये। वह पूरा हो जायगा तब अक्षरेच्छा होगी तो यह सब पढ़ लेनेका मुझे काफी अवकाश मिलेगा।

चि० डाह्याभात्री,

वल्लभभात्रीकी तबीयतके^१ ब्यारेवार समाचार मुझे लौटती डाकसे भेजो ।

मणिवहनसे कहना कि मुझे ब्यारेवार पत्र लिखे । अपने स्वास्थ्यके^२ पूरे समाचार दे । महादेव^३ तो सबर लायेंगे ही ।

तुम्हारा काम ठीक चल रहा होगा ।

बापूके आशीर्वाद

डाह्याभात्री वल्लभभात्री पटेल,
रामनिवास,
पारंग स्ट्रीट,
बम्बयी - ४

सेवाग्राम-वर्धा, सी पी.

९-३-'४१

चि० डाह्याभात्री,

सायका पत्र यदि सरदारको मिल सकता हो तो खुले तौर पर भेज देना या दे देना ।

तुम्हारी गृहस्थी अुत्तम चल रही होगी और बाबा मजा करता होगा ।

मैं मान लेता हू कि महादेवने बी० शाँ की 'ओश्वरकी शोधमें काली कन्याके साहस' नामक पुस्तक पढ़ी होगी । आज मैं अुन्हें मैक्सवेलकी 'ओश्वरकी शोधमें गोरी कन्याके साहस' पुस्तक भेज रहा हू । यह अुन्हे सही-सलामत मिल जाय तो अपने दूसरे पत्रमें वे अिसकी पढ़व लिखें ।

१ ता० १४-७-'३४ के दिन पू० बापूको नासिक जेलमें स्वास्थ्यके कारण छोड दिया था ।

२ मैं भी ता० ८-७-'३४ को छूटी थी ।

३ महादेवभात्री भी ता० ९-७-'३४ को छूटे थे ।

यह याद रखना कि तुम्हें और शान्तिकुमारको २० लाख जिक्रठे करने ही होंगे। मैं आशा रखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहनसे मिलो तो कहना कि तवीयत खूब सुधारे।

बापू

श्री डाह्याभाजी पटेल,
६८, मरीन ड्राइव,
बम्बयी

१७

सेवाग्राम-वर्धा, सी. पी.

७-५-'४१

चि० डाह्याभाजी,

साथके पत्र यथास्थान भेज सको तो भेज देना।

महादेवका पत्र या तो ज्योंका त्यों भेज देना या बसकी नकल भेज देना।

तुम्हारा गृहस्थी ठीक चल रही होगी। बाबाको दो पंक्तियां लिखनेको प्रेरित करना।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाजी पटेल,
६८, मरीन ड्राइव,
बम्बयी

१८

सेवाग्राम,

१५-८-'४४

चि० डाह्याभाजी,

मुझे तुम्हारे घर रहनेके लिये बहुत आग्रह किया गया, परन्तु मैं पसंज नहीं। किसीकी नाराजगी होगी, महज बिसलिजे विड़ला-भवन

१. डाह्याभाजी और शान्तिकुमार वर्धा गये थे तब खादीके बुत्पादनके लिये बीस लाख रुपये जमा करनेकी बात हुयी थी। बिसीका जिक्र है।

मे छोड़ नहीं सकता। तुम्हारे यहां रहना तो मुझे पसन्द ही होगा। मैंने तुम्हारा घर कभी देखा ही नहीं। परन्तु मुझे तो जो कर्तव्य रहे उसीका पालन करना चाहिये।

मैं शनिवारको वहां पहुंचनेकी आशा रखता हूँ। समय है रवि-वारको वापस जा सकूँ।

सबकी आशिष।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाजी पटेल,
६८, मरीन ड्राइव,
बम्बयी

१९

सेवाग्राम,
१९-१०-४४

चि० डाह्याभाजी,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरा खयाल है कि हम तलाशीकी शर्त हरमिज नहीं मान सकते। तलाशीकी शर्त पर ही जाना हो तो जानेका लोभ छोड़ दिया जाय। मेरा खयाल है कि बुन लोगोंने यह शर्त न रखी हो तो हो जाना और तलाशी लेना चाहें तो अिनकार कर देना।

मणिवहनको भीश्वर समालनेवाला है।

यह बड़ी जल्दीमें लिख रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाजी पटेल,
६८, मरीन ड्राइव,
बम्बयी

१ बेलगाव जेलमें अधिकारी, राजनीतिक कैदियोंसे मिलने आनेवालोंकी पहले तलाशी लेना चाहते थे। उसीका मुल्लेख है।

डाह्याभाभी पटेलके पुत्रको

१

वर्षा,

७-१०-'३३

चि० बाबा,

तेरा पत्र मिला। अक्षर मोतीके दाने जैसे लिखना सीखना।
बुआके साय जरूर आना। मुझे अच्छा लगेगा। खेलनेको भी मिलेगा।
तेरे जैसे और बालक भी यहां हैं। दादाको पत्र लिखता है क्या?
बापूके आशीर्वाद

२

बोरसद,

३१-५-'३५

चि० बाबा,

आज तो तेरी वर्षगांठ है, असा मणिवहन कहती हैं। इस दिन
तू क्या करेगा? कुछ न कुछ सेवाका काम नहीं करेगा? करना हो तो
तू मणिवहनसे पूछना। तू बड़ा तो होगा ही। वैसा ही समझदार भी बनना।
बापूके आशीर्वाद

३

सेगांव-वर्षा,

३-६-'३८

चि० बाबा,

तेरा पत्र आज ही मिला। तेरी कौनसी वर्षगांठ है? यह लिखना
कैसे भूल गया? और जो आशीर्वाद मांगता है वह क्या कुछ देता नहीं?
तू क्या देता है? नये सालमें क्या नया काम करेगा?

बापूके आशीर्वाद

१. मैं।

२. पूज्य बापू।

गांधीजीकी कुछ नयी पुस्तकें

औसा - मेरी नजरमें

लेखक. गांधीजी; सप्ता० आर० के० प्रभु०

औसाजी धर्मसे तथा बाइबलसे गांधीजीका पहला परिचय बढ हुआ, बाइबलके कौनसे भागोंका उनके मन पर गहरा प्रभाव पडा, उनकी दृष्टिमें औसाके जीवन-कार्य और सन्देशका मूल्य, धर्म-परिवर्तनकी प्रवृत्ति पर उनके विचार, पश्चिमके वर्तमान औसाजी धर्मके बारेमें उनका मत आदि विषयोंका समावेश इस मध्यहमें किया गया है। अन्तमें 'गिरि-प्रवचन' का सार भी दिया गया है।

कीमत ० ३५

डाकखर्च ०.१३

गांवोंकी मददमें

लेखक. गांधीजी; अनु० सोमेश्वर पुरोहित

अस पुस्तिकामें दी गयी गांधीजीकी सूचनाओं पर अगर भारतके गांव और उनके सेवक पूरा ध्यान दें तथा इन सूचनाओंको अमलमें बुतारे, तो सारे गांव साफ-सुपरे, स्वस्थ, प्रसन्न और सुखी बन सकते हैं। सबसे बडा जोर गांधीजीने अस बात पर दिया है कि अगर गांवके लोग आलस छोडकर आपसी सहयोगसे परिश्रम करें, तो वे अपने गांवोंकी किसी बाहरी मददके बिना भी सुख और आनन्दके घाम बना सकते हैं।

कीमत ० ४०

डाकखर्च ० १३

गीताका संदेश

लेखक. गांधीजी; सप्ता० आर० के० प्रभु०

अस पुस्तिकामें गीता और अहिंसा, गीता और यज्ञकी भावना, हिन्दू धर्ममें गीताका स्थान, गीताके कृष्ण, हिन्दू विद्यार्थी और गीताका शिक्षण तथा गीताकी केन्द्रीय शिक्षा जैसे विषयोंकी मक्षेपमें स्पष्ट चर्चा की गयी है। इसमें गीताके अमर सन्देशका सार आ जाता है।

कीमत ० ३०

डाकखर्च ० १३

मंगल-प्रभात

लेखक : गांधीजी; अनु० अमृतलाल नाणावटी

सन् १९३० में गांधीजी यरवडा जेलमें थे। वहांसे वे प्रत्येक मंगलवारको आश्रमके व्रतों पर विवेचन लिखकर सावरमती आश्रमके सदस्योंको भेजा करते थे। जिसमें सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह आदि आश्रम-व्रतोंका गांधीजी द्वारा किया हुआ सरल और सुवोच विवेचन पाठकोंको मिलेगा। जिस हिन्दी अनुवादमें सिर्फ बुर्रू जाननेवालोंकी सुविधाके लिये आसान बुर्रू शब्द भी दिये गये हैं।

कीमत ०.३७

डाकखर्च ०.१३

मेरा समाजवाद

लेखक : गांधीजी; संग्रा० आर० के० प्रभु

गांधीजी समाजवादका अर्थ सर्वोदय करते थे। उनका कहना था कि भारतका समाजवाद 'सब भूमि गोपालकी' और 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः' जिन मंत्रोंमें समा जाता है। प्रेम, शांति और समताका ध्येय रखनेवाले समाजवादकी स्थापना करनेमें अहिंसक साधन ही सफल हो सकते हैं। इसी विचारकी चर्चा जिस पुस्तिकामें की गयी है।

कीमत ०.४०

डाकखर्च ०.१३

मेरे सपनोंका भारत

लेखक : गांधीजी; संग्रा० आर० के० प्रभु

जिस संग्रहमें भारतके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि सारे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर गांधीजीके विचार पेश किये गये हैं। जिनसे पता चलता है कि राष्ट्रपिता स्वतंत्र भारतसे क्या क्या आशायें रखते थे और उसका कैसा निर्माण करना चाहते थे। राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद अपनी प्रस्तावनामें लिखते हैं: "श्री आर० के० प्रभुने गांधीजीके अत्यन्त प्रभावशाली और अर्थपूर्ण अुद्धरणोंका संग्रह जिस पुस्तकमें किया है। मेरा विश्वास है कि यह पुस्तक गांधीजीकी शिक्षाके दुनियादी अुसूलोंको प्रस्तुत करनेवाले साहित्यमें अेक कीमती वृद्धि करेगी।"

कीमत २.५०

- डाकखर्च १.००

विश्वशांतिका अहिंसक मार्ग

लेखक गांधीजी; सप्ता० आर० के० प्रभु

आज विश्वमें शांतिकी स्थापना करनेके लिये दुनियाके समस्त राष्ट्र और उनके नेता प्रयत्न कर रहे हैं। जिस ध्येयकी सिद्धिका गांधीजीने अकेलान्न सच्चा और अहिंसक मार्ग यह बताया है : दुनियाके सारे राष्ट्र अकेल-दूसरेका शोषण करनेवाली साम्राज्यवादी नीतिको छोड़ें, परस्पर प्रेम और सहिष्णुताकी भावना बढ़ायें और युद्धके सहारक शस्त्रोका त्याग करें, तो ही स्थायी शांति कायम हो सकती है। यही जिस पुस्तकका केन्द्रीय विचार है।

कीमत ० ४०

11 1-12

डाकखर्च ० १३

शरीर-श्रम

लेखक . गांधीजी; सप्ता० रवीन्द्र बेलेकर

हमारे समाजमें शरीरकी मेहनतकी और मेहनत करके रोटी कमानेवालोंको हलकी नजरसे देखा जाता है। गांधीजीने श्रमकी प्रतिष्ठाको बढ़ानेका प्रयत्न किया। यहाँ जिस विषयमें गांधीजीके जो विचार पेश किये गये हैं उनसे शरीर-श्रमकी व्याख्या और अमके महत्त्वका, अमकी आवश्यकताका और समाजको अममें होनेवाले लाभोका पता चलता है।

कीमत ० २५

11 1-12

डाकखर्च ० १३

सन्तति-नियमन

सही मार्ग और गलत मार्ग

लेखक . गांधीजी; सप्ता० आर० के० प्रभु

जिस पुस्तिकामें सन्तति-नियमनके सही अुपायो और गलत अुपायोका विचार किया गया है। गांधीजी कृत्रिम साधनोंकी मददसे सन्तति-नियमन करनेके सख्त विरोधी थे। जिसका अुत्तम मार्ग वे आत्म-सयमको ही मानते थे, जो मानव-जातिको अूँचा अुठानेवाला और अुमका कल्याण करनेवाला है।

कीमत ० ४०

RHUPAL COL

डाकखर्च ० १३

LIBRARY नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद-१४